This is a digital copy of a book that was preserved for generations on library shelves before it was carefully scanned by Google as part of a project to make the world's books discoverable online.

It has survived long enough for the copyright to expire and the book to enter the public domain. A public domain book is one that was never subject to copyright or whose legal copyright term has expired. Whether a book is in the public domain may vary country to country. Public domain books are our gateways to the past, representing a wealth of history, culture and knowledge that's often difficult to discover.

Marks, notations and other marginalia present in the original volume will appear in this file - a reminder of this book's long journey from the publisher to a library and finally to you.

Usage guidelines

Google is proud to partner with libraries to digitize public domain materials and make them widely accessible. Public domain books belong to the public and we are merely their custodians. Nevertheless, this work is expensive, so in order to keep providing this resource, we have taken steps to prevent abuse by commercial parties, including placing technical restrictions on automated querying.

We also ask that you:

+ *Make non-commercial use of the files* We designed Google Book Search for use by individuals, and we request that you use these files for personal, non-commercial purposes.

+ *Refrain from automated querying* Do not send automated queries of any sort to Google's system: If you are conducting research on machine translation, optical character recognition or other areas where access to a large amount of text is helpful, please contact us. We encourage the use of public domain materials for these purposes and may be able to help.

+ *Maintain attribution* The Google "watermark" you see on each file is essential for informing people about this project and helping them find additional materials through Google Book Search. Please do not remove it.

+ *Keep it legal* Whatever your use, remember that you are responsible for ensuring that what you are doing is legal. Do not assume that just because we believe a book is in the public domain for users in the United States, that the work is also in the public domain for users in other countries. Whether a book is still in copyright varies from country to country, and we can't offer guidance on whether any specific use of any specific book is allowed. Please do not assume that a book's appearance in Google Book Search means it can be used in any manner anywhere in the world. Copyright infringement liability can be quite severe.

About Google Book Search

Google's mission is to organize the world's information and to make it universally accessible and useful. Google Book Search helps readers discover the world's books while helping authors and publishers reach new audiences. You can search through the full text of this book on the web at `http://books.google.com/`

599
Raj

Bought from the library
of
FREDERICK WILLIAM THOMAS
C.I.E., F.B.A.
1867 – 1956
Boden Professor of Sanskrit
and
Fellow of Balliol College
1927 – 1937

RAJNEETI;

OR

TALES,

EXHIBITING

THE MORAL DOCTRINES,

AND THE

CIVIL AND MILITARY POLICY

OF THE

HINDOOS.

TRANSLATED FROM THE ORIGINAL SUNSKRIT OF
NARAYUN PUNDIT, INTO BRIJ BHASHA,
BY SREE LULLOO LAL KUB.

Printed under the Sanction of the General Committee of
Public Instruction, at the Education Press.

CALCUTTA:

1827.

1979

ORIENTAL
OXFORD
INSTITUTE

राजनीति.

गजमुख सुखदाता जगत दुखदाहक गणईश; पूरन अभिलाषा करौ अम्बुसुत जगदीश. काहू समें श्री नारायण पंडित नें नीतिशास्त्रनि तें कथानि कौ संग्रह करि, संस्कृत में एक ग्रंथ बनाय, वाकौ नाम हितोपदेश धरयौ; सो संवत् १८६८ में श्री लल्लूजी लाल कवि ब्राह्मन गुजराती सहस्र अवदीच आगरेवारे नें वाकौ आशय लै ब्रजभाषा करि नाम राजनीति राख्यौ. (दोहा) पंडित हैं ते जानि हैं कथा प्रसंग प्रवीन; मूरख मन में मानि हैं लाल कहा यह कीन. ब्रजभाषा भाषत सकल सुरबानी सम तूल; ताहि बखानतु सकल कवि जानि महा रस मूल. या राजनीति के पढ़े सुनै तें मनुष ब्रजभाषा में निपुन हैाय, अरु जितेक संसार के व्यौहार की बातें हैं तिन माहिं प्रवीन.

प्रथम वा ग्रंथ में ऐसे लिख्यौ है, कि जे चतुर हैं ते आप कौं अजर अमर समान जान विद्या अरु धन की चिंता करतु हैं; अरु जैसें काहू की चोटी काल गहे होय, ऐसो समझ वे धर्म करतु हैं. पुनि ऐसें कह्यौ है, कि सब पदार्थनि

में विद्या रूपी पदार्थ उत्तम है; कौंकि, आहार की देनवारी, पुन्य मार्ग की दिखानहारी, अरु सदा चतुराई की दाता है; जाकौ भागी भाग न ले सकै, अरु मोल नाहीं, क्षय नहीं, यह गुप्त धन है, याकौं चोर ठग राजा कूल करि न ले सकै; विद्या देति है नम्रता, नम्रता पावे भयौ सुपात्र, सुपात्र भये मिलतु है धन, धन मिले करतु है धर्म, धर्मतें सुखी रहतु है; अरु जैसें नदी नारे कौं समुद्र लौं पहुंचावै, तैसें विद्या कू नर कौं राजा तक लेजाय, आगै जैसौ वाके कपार में लिख्यौ होय, तैसौ फल मिलै. शस्त्र विद्या, औ शास्त्र विद्या, ये दोऊ जगत में उच्च पद की देनवारी हैं; पर वृद्ध अवस्था में शस्त्र विद्या कौं देखि लोग हंसतु हैं, अरु शास्त्र विद्या तें अधिक प्रतिष्ठा होतु है, ताते बाल अवस्था तें ले वृद्ध अवस्था लौं शास्त्र संग्रह करनौं मनुष कौं उचित है; कौंकि जहां पंडित प्रवेश करतु है, तहां धनवान नाहीं जा सकतु; तामें बालकनि के नीति शास्त्र सिखायवे कौं कूल करि कथा कहतु हैं; कौंकि शास्त्र में प्रथम ही बालकनि का चित नाहीं लागतु. पुनि ऐसें कू कह्यौ है जो, "विद्या बाल अवस्था में सिखादयै सा भूलति नाहीं; जैसें कोरे माटी के पात्र में जो भरिये, ताही कौ गुन रहै," याही तें पांच प्रकार की कथा करि कहतु हैं; पहली, मित्र लाभ, कहैं प्रीति करायवे की रीति; दूजी, सुहृद्भेद, कहैं खेद कुरायवे की भांति; तीजी, विग्रह, कहैं युद्ध करायवे की चालि; चौथी, संधि, कहैं मिलाप करायवे की युक्ति, संग्राम ते पहिले होय कै पांछैं; पांचवीं, लब्धप्रनाश, कहैं ऐक वस्तु पायकरि हिराय देनी.

अथ कथा आरंभ. कविवासी गृह कूप कौ कथा अपार समंद; तैसी यै कछ कहतु हौं मति है जैसी मंद. श्री संख

जू के तीर ऐक पटना नाम नगर; तहां, सब गुन निधान, महाजान, पुन्यवान, सुदरसन नाम राजा हो. वानें ऐक दिन काहू पंडित तें दै स्लोक सुनें. ताको अर्थ यह है, कि अनेक अनेक प्रकार के संदेहनि कौं दूरि करै, अरु गूढ अर्थनि कौं प्रकासै, तातें सब की आंखि शास्त्र है, जाहि शास्त्र रूपी नेत्र नाहीं, सो आंधरो है; अरु तरुनापन, धन, प्रभुता, अविवेकता, ये चारौं ऐक ऐक अनर्थ की करनिहारी हैं; अरु जहां ये चारौं होंय, तहां न जानिये कहा होय? यह सुनि, राजा आपनें पुत्रनि की मूर्खता देखि, चिंता करि, कहनि लाग्यो, कि ऐसे पुत्र भये कौन काम के? जे विद्या करि हीन, अरु धर्म सों रहित, ते पुत्र ऐसें, जैसें काली आंखि देखिवे कौ तौ नाहीं, पर दूखनी आवै तौ पीर करै. कह्यौ है, "पुत्र ताही कौं कहिये, जाके जन्में तें कुल की मर्य्याद होय." अरु या तौ संसार में मरकै को नाहीं उपजतु है? पर सज्जन अरु विद्यावान जो पुत्र वंस में होतु है, सो पुरुष सिंह है; जैसें चंद्रमा तें आकाश सोभा पावतु है, तैसें वा पुत्र सों कुल. जाको नाम गुनीन की गिनती में लिखनी तें नाहीं लिख्यो गयो, ताही की माता कौ बदबांझ कहतु हैं. अरु दान, तप, सूरता, विद्या, अर्थलाभ में जिनको जस नाहीं भया, तिनकी माताओं नें केवल जनवे ही कौ दुख पायो है, पै पुत्र कौ सुख नाहीं देख्यो. कहतु हैं, "कि जिननि बडे तीर्थनि में अति कठिन तप व्रत किये हैं, तिनके सुत आज्ञा कारी, धनवान, पंडित, धर्मात्मा होतु हैं." ये छह वस्तु संसार में सुखदायक हैं; सदा धन की प्राप्ति, शरीर आरोग्य, स्त्री तें हित, नारी मिठबोली, पुत्र आज्ञाकारी, अरु विद्या तें लाभ.

इतनो कहि पुनि राजा बोल्यो, कि मेरे पुत्र गुणवान होय तौ भलो. यह सुनि, कोऊ राज सभा में तें बोल्यो, कि महाराज! आयु, कर्म, वित्त, विद्या अरु मरण, ये पांच बात देहधारी कौ गर्भ ही में सिरजी हैं, तातें जो भावी में है सो बिना भये नाहीं रहति; जैसें श्री महादेव जू कौ नग्नता, अरु श्री भगवान कौ सर्प सय्या; तासों चिंता मति करौ, जो तिहारे पुत्रनि के कर्म में विद्या लिखी है, तौ विद्यावान होंयगे. पुनि राजा कही, यह तौ सांच है, पर मनुष्य कौ परमेश्वर नें हाथ अरु ज्ञान दयौ है, सो विद्या साधन के अर्थ; जैसें ऐक चक्र कौ रथ न चलै, तैसें बिन पुरुषार्थ किये काज सिद्ध न होय; तातें उद्यम सदा करिये, कर्म कौ ई आसरौ करि न बैठि रहिये. कह्यौ है, "कि जैसें कुम्हार माटी खाय जो कछु करौ चाहै सो करै, तैसें नर ह अपनें कर्म समान फल पावै." कर्म तौ जड़ है, वासों कछू न होय; उद्यम करता ह, तासों करता कर्म कौ प्रेरै, तब भलो बुरौ करता के कर्म संयोग तें होय. अरु केवल कर्म कौ ई आसरौ करि बैठि रहनौ कपूत कौ काम है. अरु जाके माता पिता सुत कौ विद्या कौ उद्यम न करावैं, ते अचु जानिये. कह्यौ है कि, "मूढ पुत्र पंडितनि की सभा में शोभा न पावै; जैसें हंसनि में बगुला न सोहै."

आगै राजा नें यह विचारि, पंडितनि को समाज करि कह्यौ, हे पंडितो! तुम में कोऊ ऐसो पंडित है, जो मेरे पुत्रनि कौं नीति मार्ग कौ उपदेश दै नयौ जन्म करै? कह्यौ है, "जैसें काच कांचन की संगति पाय मरकत मनि जनाय, तैसें साध की संगति में बुद्धि पाय मूरख ह पंडित होय; अरु नीच की संगति में नीच." (दोहा) संगति कीजै साध की हरै

औरकी व्याधि; औरही संगति नीच की आठौं पहर उपाधि. तहां राजा की बात सुनि, विष्णुशर्मा वृद्ध ब्राह्मन, सकल नीतिशास्त्र को जान, बृहस्पति समान, बोल्यो, कि महाराज! राजकुमार तौ पढ़ायवे योग्य हैं, अयोग्य कौं विद्या न दीजियै; कौंकि वह पढ़ै तौ सिद्धु न होय, अरु जौ सिद्धु होय तौ अनीति विशेष करै, विद्या कौ गुन छांडै, औगुन दृढ़ करि गांठि बांधै; तातें कुपात्र कौं न पढ़ाइयै; जैसें बिलाव कौं नवौ नवौ भोजन खवाइयै, तौहू बिलूरवे की घात न तजै; पुनि कोटि जतन करि बगुला कौं पढ़ाइयै, पर सुआ सौ न पढ़ै; जौ मुनि धर्म में निपुन होय, तौ हू माछरी मारवे की घात अधिक सीखै. महाराज! तिहारे कुल में तौ निर्गुनी बालक न होंय, जौं मनि मानिक की खान में काच न उपजै. हम विद्या बेचत नाहीं, तुम तें कछु लेतु नाहीं; पर तुम्हारी प्रार्थना है, या तें हौं तिहारे पुत्रनि कौं सहज सुभाव ही छः महींना में नीति मार्ग में निपुन करिहौं.

यह सुनि राजा वृद्ध ब्राह्मन विष्णुशर्मा तें बोल्यो, अहो! पुत्रप की संगति तें, देखो, नान्हें कीट हू सज्जननि के माथे चढ़तु हैं, तातें तिहारे सतसंगतें कहा न होय? जैसें पाथर की प्रतिष्ठा किये सब मनुष देवता करि पूजैं; पुनि उदयाचल परबत की बसन सूरज के उदै भये सर्व वस्तु सूरज समान ही दीसै; सुसंगतें नीच की हू प्रतिष्ठा होय. (चौपाई) कीट भृङ्गि ऐसें उर अंतर, मन सरूप करि देत निरन्तर. लोह हेम पारस के परसे, या जग में कह सरसे दरसे. (दोहा) सेस सारदा व्यास मुनि कहतु न पावै पार; सो महिमा सत संग की कैसे कहै गंवार? तुम मेरे पुत्रनि कौं पंडित करवे जोग हौ. ऐसें वा राजा में बिनती करि, ब्राह्मन कौं आपनें

पुत्र सौंपे; तब वह विप्र राजपुत्रनि कौं लै ऐक ऊंचे मंदिर में जाय बैठ्यौ. कोऊ समें पाय कह्यौ, सुनौं महाराज कुमार! (दोहा) काव्य शास्त्र आनंद तें रसिकनि के दिन जात; मूरख के दिन नींद में कलह करत उतपात.

हौं मित्रलाभ की कथा कहतु हौं; क्यौंकि मित्रलाभ में लाभ बहुत है. कि ऐक चित्रग्रीव कपोत, औ कछुआ, हिरन, अरु मूसा, ये परम मित्र हे; तिन के मिलन औ कर्म कहतु हौं, कि जे असाध हैं, निधन हैं; पर बुद्धिवाननि तं उन सों प्रीति है, तिन के काज ऐसें सिद्ध होतु हैं, कि जैसें काग, कछुआ, हिरन, मूसा के भये. यह सुनि राजकुमारनि कही, यह कैसी कथा है? तहां विष्णुशर्मा कहतु है;

गोदावरी नदी के तीर ऐक सेमल कौ रूख; तापै सब दिस कै पंछी आय विश्राम लेतु हे. ऐक दिन प्रात ही, लघुपतनक नाम काग जाग्यौ; वह ऐक काल रूप व्याधी कौं दूर तें आवतु देखि, चिचायकरि कहनि लाग्यौ, आज भोर ही की बेला अधर्मी दुराचारी कौ मुख देख्यौ, सो न जानिये कहा होय? ऐसें बिचारि, लघुपतनक काग उड़ि गयौ. कह्या है कि, "उतपात की ठाम पंडित चतुर न रहै, मूरख भय सोग बैठ्यौ सहै." इतेक में व्याधी नें रूख तरै चांवर के कनिका डारि, तापर जाल पसार्यौ; तहां चित्रग्रीव कपोत कुटुंब समेत उड़त उत आय कह्यौ. तिन में तें ऐक पंछी देखि बोल्यौ, इन चांवरनि कौं हौं चुग्यौ चाहतु हौं. चित्रग्रीव कह्यौ, अरे! या वन में चांवर कहां तें आये? यह कछु कौतुक है, यातें ये मोकौं नीके नाहीं लागतु. सुनौं! जौ तुम इन चांवरनि कौ लोभ करिहौ, तौ वैसें होयगी, जैसें कंकन के लोभ सों ऐक पथिक दहदल में फंसि, बूड़े

बाघ कौ अहार भयौ. यह सुनि पंछियन कही, यह कैसी कथा है? तब चित्रग्रीव कपोतराज बोल्यौ;

हौं ऐक दिन वन में रह्यौ, तहां यह देख्यौ, जु ऐक बृद्ध बाघ पानी में न्हाय, कुश हाथ में लै, मारग में आय बैठ्यौ. इतेक में ऐक बटोही ब्राह्मन आय कढ्यौ; वानें जब पंथ में नाहर बैठ्यौ देख्यौ, तब भय खाय व्हांहीं ठिठक्यौ. याहि भयातुर देखि सिंह बोल्यौ, अहो देवता! हौं जो गैल में बैठ्यौ हौं, सेा पुन्य करनि के हेतु; अरु मो पास सोंना कौ कंकना है, सेा श्री कृष्णार्पन देतु हौं, तू लै. यह सुनि, वह आपनें मन में बिचार्यौ, कि आज तौ मेरौ भाग जाग्यौ दीसतु है; पर ऐसे संदेह में जैबौ जोग नाहीं; कौंकि बुरे तें भली बस्तु कू पाइयै, पै आगे दुख होय; जौ अम्रत में बिष होय तौ मारै ही मारै. पुनि ऐसें कू कह्यौ है कि, "बिन कष्ट द्रव्य हाथ नाहीं आवतु; अरु जहां कष्ट, तहां फल है; जैसें, जहां माया, तहां सांप; पुष्प, तहां कंटक; बिन दुख सहे सुख नाहीं." यह बिचारि, ब्राह्मन नें वासों कही, कहां है वह कंकना? वाने हाथ पसारि दिखायौ; तब बिप्र कौं लोभ आयौ, अरु बोल्यौ, अरे! तू व्याध कौ करनहारौ, म तेरौ बिस्वास कैसें करौं? नाहर बोल्यौ, अहो! ऐक तौ मैं प्रातस्नान करि दाता होय बैठ्यौ हौं; दूजे, बृद्ध भयौ, तातें नख दांत अरु इंद्रियन कौ बल कू नाहीं; अब मेरी प्रतीति कौं न करै? कह्यौ है, "यज्ञ, वेद पाठ, दान, तप, सत्य, धीरज, छमा, निर्लोभ, ये आठ प्रकार कहे हैं, ते पाषंडी तें न होंय." हौं तौ अपनें अर्थ के लये दियौ चाहतु हौं; अरु बाघ मास खातु हैं, सेा मेरै नाहीं; पर न जानतु है सेा कहतु है; जैसें कुटनी काहू कौं धर्म कौ उपदेश देइ, तौ कू

लोक न मानें, अरु ब्राह्मन हत्यारो हू मानिये; तातें तू सांचो है, मेरी देह वृद्ध भई, अरु या काया तें मैं बहुत पाप किये हैं, यह समझ सब पाप तज, धर्म शास्त्र में पढ्यो अरु सुन्यो है. प्रानी कौं ऐसो चाहिये, कि जैसो अपनों जीव प्यारो है, तैसो ही सब काहू कौ जानें. अरु चार प्रकार तें दान देतु हैं, धर्मार्थ, भयार्थ, उपकारार्थ, लेहार्थ; सो नाहिं; मैं केवल तोहि दुखी जानि देतु हौं. श्री कृष्ण चंद नें हू राजा युधिष्ठिर तें कह्यो है, कि दान दरिद्री कौं दीजै तौ अधिक फल होय; क्योंकि औषध अरु पथ्य दुखी का देतु हैं, सुखी कौं नाहीं; अरु जो देश काल पात्र देखि दान देतु हैं, सो दान सात्विकी कहिये; तातें ब्राह्मन! तू सरोवर में न्हाय आ, औ सुच होय दान लै. वाकी बात सुनि लोभ कौ मार्यो ज्यों वह सरोवर में उतर्यो त्यों दों में फंस्यो; जब कीच तें पांव न काढ़ि सक्यो, तब बाघ हौलें हौलें वाकी ओर चल्यो. ब्राह्मन कही, आहो! तुम काहेकौं आवतु हो? बाघ कही, कि तू पानी में ठाढ़ो रह, तोपै प्रयोग पढ़वाय, कंकन दै, स्वस्ति शब्द सुनैंगो. यह कहत कहत, पास आयो, वाकौं फंस्यो देखि, नरहटी धरी. तब विप्र आपनें मन में कहनि लाग्यो, कि दुष्ट कौ धर्मशास्त्र वेद कौ पढ़िवो कछु काम न आवै; क्योंकि आपनों सुभाव कोऊ नाहीं तजतु; जैसें गाय कौ दूध सुभाव ही तें मीठो होतु है, कछु वाके खैवे पीवे तें नाहीं. अरु जाकी इंद्री मन बस नाहीं, ताकी क्रिया ऐसें, जैसें हाथी कौ स्नान, उत न्हायो, इत फेरि ज्यों कौ त्यों; तातें मैं भली न करी औ बाघ की प्रतीति करी; सब आपनें कुल ज्यों हार चलतु हैं. यह बिचार करै, तो लौं बाहर में वाहि मार भक्षन कियो. तातें हौं कहतु हौं, कि बिन बिचारे काम कब हू

न करिये. (कुंडलिया) बिना बिचारे जो करै सो पाछ पछिताइ; काम बिगारै आपनौ जग में होत हंसाइ. जग में होत हंसाइ चित्त में चैन न पावै; खान पान सनमान राग रंग मनहि न आवै. कहि गिरधर कविराय दुख कछु टरत न टारै; खटकत है जिय माहिं कियो जो बिना बिचारै. कह्यौ है," पचायौ अन्न, पंडित पुत्र, पतिव्रता स्त्री, सुसेवित राजा, बिचार करि कहिवो अरु करिवो, इनतें बिगार कबहू न उपजै." यह सुनि, ऐक परेवा बोल्यौ, अहो! या डोकरा की बातें आपदा में कहां लौं बिचारैं? ऐसें संदेह करिये तौ भोजन करनौं हू न बनें; कौंकि अन्न पानी में हू संदेह है, ऐसौ बिचार कस्यौ करै तौ सुख सों जीवन हू न होय. कह्यौ है कि, " तृषावंत, असंतोषी, क्रोधी, सदा संदेही, जो औरं के भाग की आस करै, अति दयावंत, ये कहीं सदा दुखी रहैं." इतनी कहि, वह परेवा चांवर चुगन उतस्यौ, वाके साथ सब उतरे; तब चित्रग्रीव नें बिचार्यौ, कि इनकी सार जो होय सो होय, पर साथ छोडनौं उचित नाहीं. कह्यौ है, "मनुष अनेक शास्त्र पढ़े, औरन कौं उपदेस देइ, पर लोभ आय घेरै, तब बुद्धि न चलै." आगै विनके साथ चित्रग्रीव हू उतरौ; अरु जब वे पखेरू जाल में आये, तब वा ने जाल की जेवरी खैंची, सब बधे; तद जाके कहे उतरे हे, वाकी निंदा करनि लागे. ऐसें और हू ठौर कह्यौ है कि, "सभा में सब तें आगै होय काम करै, ज्यौ संवरै तौ सब कौं फल समान होय; औ बिगरै, तौ दोस वाही कौं दैइ जो आगै बढ़ै." वाकी निंदा सुनि, चित्रग्रीव बोल्यौ, अरे! वाकौ दोस नाहीं; जब आपदा आवतु है तब सिव हू प्रभु होतु है; जैसें बछरा के बांधिवे कौं गाय की जांघ ही खंभ होतु है. (दोहा) बधिक बध्यौ मृग बाघ तें

दधिरो दियो बताय; कवि चित अनहित होतु है तुरतही दुरदिन आव. यथा, वैतालिय आगम जान सब भूत भविष्य वर्तमान; होनहार जब होति है उघटि जातु है ज्ञान. तातें बंधु सो, जो आपत्त में काज आवै; औ भई बात को पहिला बचौ, कपूत को काज है, तातें धीरज करि कुटलि को उपाय करौ, कह्यो है, (कुंडलिया) "पीछे ताहि विचारिहै आगे की सुधि लेइ; जो बनि आवै सहज में ताही में चित देइ. ताही में चित देइ बात जोई बनि आवै; दुरजन हँसै न कोइ चित में खेद न पावै. कहि गिरधर कविराय यहै करि मन परतीती, आगे को सुख होय समझ लीजो सो कीती." पुनि कह्यो है कि, "आपदा में धीरज, संपदा में विनय, सभा में वचन चतुरई, संग्राम में पराक्रम, जस में रुचि, पढ़िबे में बिसन, ये महत पुरुषन के सुभाव हैं. और पुरुष कौं छः दोष सदा छोड़े चाहियैं, निद्रा, अधीरता, भय, क्रोध, आलस, रोग." इतनी कहि, पुनि चित्रगीव बोल्यो, अब सब एक मति होय कछ करौ, वा जाल कौं लै उड़ैं. ऐसें कह्यो है, "जोरे जु मिलि ऐकौ कहैं तौ बड़ो काम सिद्ध होय; जैसें घास मिलाय जेवरी बांटें, तासों हाथी बांधो जाय." यह सुनि सब बल करि जाल लै उड़े; अर आधी में दूर गये देखे, तब मन में कह्यो, अब हौं सब एक मति हैं; उलरिहैं तब इन सैउनौ. अब जाल धरती में न गिरैगो, तब बधिक निराश होय जैहै. तहां पंचोलू चित्रगीव सों कहनि लागे, अहो राजा! आजी तो हमारे मांस की आस छोरि जैहै, पर अब जाल सों कैसे बल चित्रगीव कह्यो; अरे! सुनौ, वा संसार में माता पिता अर मित्र ये तीनौं बुराय ही में हित करत हैं; तातें हेम नाम हेम चित्र हिरनका नाम सूवा विचित्र बन में नंजनी नदी के

तीर रहतु है, तहां चलो, तौ वह हमारे बंधन काटिहै. ऐसें विचारि, ईंदुर की द्वार लौं चले; अरु व्हां थिरनक ह्वै आपनें द्वार पर बैठो हो, सो धरेवानि लौं आवतु देखि बिल में पैठि चुप ह्वै रह्यो. तब चित्रग्रीव कही, मित्र! बाहर आओ. मित्र कौ बोल पिछानि, बाहर आय, बोल्यो, मेरे आज बड़े भाग, जो मित्र चित्रग्रीव नें मो पै दया करि आप हरषत हियौ! अरु जाल में परेहून लौं देखि कह्यौ, मित्र! यह कहा है? तब कही, बंधु! यह पूर्व जन्म कौ पाप है; जाकें जाल में जैसा लिख्यो है, ताकौं तैसो फल मिलतु है; अरु रोग सोग बंधन औ दुख आपनें किये कर्म कौ फल है. कह्या है,(कवित्त) "होत उदोत प्रभाकर के दिन पच्छिम तौ कछु धोखौ नहीं है; फूले सरोज सहारनि माहिं औ मेर चले तौ चले कबही है; चातक शीतल होत सबैं इक मोतिनराम बिचारि कही है; लीक मिटैं न लिखे बिधि के अरु नेह पुराननि माहिं सही है." यह सुनि, मूसा चित्रग्रीव के बंधन काटनि लाग्यो; तब चित्रग्रीव कपोत राज बोल्यो, हितू! पहिले मेरे बंधातीत के फंद काटो, ता पाछैं मेरे काटियो. ईंदुर कही, प्रीतम! ये बंधन कठिन, मेरे दांत कोमल, तातें पहिलें तेरे बंधन काटि, ता पाछैं कटैंगे तौ तोर के काटिहौं. चित्रग्रीव कही, मित्र! यह साधक कौ कर्म नाहीं, जो आपनें साथीन कौ बंधाय आप छूटै; यासों पहिले ये छूटि लैंय, तौ हमारौ छूटनौं बनैं. पुनि मूसा बोल्यो, भाई! आपनी ओरि पराई बात कहनी, यह नीति नाहीं. कह्यौ है कि, "दुख पायकै धन राखिये; धन दै स्त्री की रक्षा कीजै; अरु धन स्त्री जाय तो जानि दीजै, पर अपनेपौ राखिये; कौंकि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, ये चार पदार्थ प्रान के राखे रहैं, अरु गये जांय." बहुरि चित्रग्रीव

कही, मित्र! नीति तौ ऐसें ही है, पै पंडित होय सो सरनागत वत्सल चाहिये. कह्यौ है, "पराये हेतु धन प्रान दीजै; क्यौंकि ऐक दिन तौ शरीर का नास होय, तातें और के निमित्त जावे तौ यासों कहा भलौ है? यातें तू मेरे अनित्य शरीर राखिवे कौ जतन छांडि, अरु नित्य अविनासी जो जस, ताके राखिवे कौ उपाय कर. कह्यौ है, "अनित्य देह तें नित्य जस पाइये, अरु मलीन तें निर्मल वस्तु; तातें शरीर अरु जस में बडौ अंतर है." यह सुनि, हिरन्यक संतोष करि बोल्यौ, हित्रु! तोहि इन सेवकनि के सनेह तें चित्रग्रीव कौ राज बूझिये. यह कहि उन सब ही के बंधन काटे, अरु कही, बंधु! तुम आपनी बुद्धि के दोष तें बंधे, पर अब मन में दुख जिन करौ. कह्यौ है कि, "पंछी ऐक जोजन तें भूमि परौ अन्न देखै, पर जाल न देखै." तातें तिहारी मति कौ कछु दोष नाहीं; क्यौंकि चंद्र सूर्य्य कू ग्रहपीडा पावतु हैं; अरु गज भुजंग कू बंधन में परतु हैं; पंडित निर्धन होतु है; अरु सबें पाय पशु, पंछी, नभचर, जलचर कू, परबस होय दुख पावतु हैं; जो भावी में होय सो बिना भये नाहीं रहतु. ऐसें हिरन्यक ने चित्रग्रीव कौं समझाय, मनोहर बचन सुनाय, खवाय प्याय, कुटुंब समेत बिदा कियौ; अरु आप कू बिल में गयौ. तब लघुपतनक काग जो प्रात ही व्याधी कौं देखि भाग्यौ हो, वाने ये समाचार पाय, अपनें मन माहिं कही, कि संसार में मित्राई बडौ पदार्थ है, देखौ मित्र कौं ठौर काम आयौ? यह विचारि, रूख तें उडि, मूषक के बार जाय बोल्यौ, अहो हिरन्यक! तुम कौ मेरौ प्रनाम है, अरु तुम्हें बडौ जानि मित्राई करनि आयौ हौं. यह सुनि, हिरन्यक बोल्यौ, अरे तू कौ है? इन कही, हौं लघुपतनक नाम काग हौं. यह सुनि,

हिरन्यक हंसि करि बोल्या, मोसों तोसों कैसी मिचाई? अरे! मच्छ सों मिचाई करनी विपत्त को मूल है; अरु हम तिहारे भक्ष, तुम हमारे खानहारे, बातें जहां मिचाई बूझिये तहां करौ, अनमिल संग न होय; अरु जो होय तो वैसें होय, जैसे खार में बंधायो हिरन कौं, अरु छुड़ायो काग में. काग बोल्यो, यह कैसी कथा है? तहां मूसा कहतु है;

मगध देस में चंपक नाम बन, वहां अनेक दिन तें ऐक चंपा के रूख पर सुबुद्धि नाम काग, अरु वाके तरै चित्रांगद नाम हिरन रहै; उन दोऊन में अति प्रीति ही. तहां हिरन कौं ऐक दिन काछ खार में हृष्ट पुष्ट देखि आपनें मन में विचार्यो, कि यासों प्रीति करौं, तो याको मांस खैवे कौं मिलै. यह विचारि, हिरन के पास आय बोल्यो, मित्र! तुम कुशल तें हौ? मृग कही, भाई! तु को है? पुनि हरवे तें उन कही, हौं क्षुद्रबुद्धि नाम खार हौं, या बन में मित्र करि हीन निरबंधु अकेलो बसतु हौं; आज तिहारो दरसन पायो, मेरे जी में जी आयो; अब तिहारे पायन तरि रहिहौं. ऐसें बातन लगाय, वाके संग लाग्यो; सांझ भई, तब कुरंग आपनें आश्रम कौं चल्यो, अरु वह ऊ साथ ग्है लियो. निदान चलतु चलतु वहां आये, जहां मृग को मित्र काग हो. खार को देखि काग बोल्यो, मित्र! यह दूसरो तिहारे साथ को है? मृग कही, यह क्षुद्र बुद्धि नाम खार है, औ मोतें मिचाई कियो चाहतु है. काग कही, हित्रू! बेग परदेसी अनजानते सों प्रीति न कीजिये. कह्यो है कि, "जाको सील सुभाव आश्रम न जानिये, तासों मित्रता न करिये." अरु नीति तो यों है, कि वाकों आपनें घर में बास कबहू न दीजे; न जानिये कैसो होय? जैसें अनजानें

बिलाव कौं बाघ है, दीन गीध पंछी मारी गयो. मृग बोल्यो, अब कैसी कथा है? तहां काग कहतु है;

गंगा जू के तीर गृध्रकूट नाम पर्वत, तहां ऐक पाकड कौ रूख, वाके खोडर में ऐक अति बूढो गीध रहै. तहां और पंछी आपनें चुगि आवें, ता में में थोरो थोरो गीध कौं डारि दें, जातैं वह जीवै, अरु जब वे पंछी चुगवे कौं जांय, तब गीध उनके छौंनानि की रखवारी किया करै. ऐक दिन, दीरघकरन नाम बिलाव पंछीन के बिसु खैवे कौं वा रूख पै चढ्यो; वाकौं देखि, वे छौंना पुकारे; तब गीध में उनकी पुकार सुनि खोडर में मूंड निकासि कह्यो, अरे! यह कौ है? तब बिलाव गीध कौं देखि डरि, आपनें मन माहिं कहति भयो, कि जो यहां तें भाजिहौं, तौ यह पाछै हैरि मारैगो; यातैं वाके पास गये ही बनैं. यह बिचारि, बरस सुभाव होय, गीध के पास आय, दंडवत करि, बोल्यो, तुम बडे हौ. गीध कह्यो, तू को है, अरु इत कौं आयो है? दूर रहि, नातो अब ही मारतु हौं. बिलाव कह्यो, स्वामी! प्रथम मेरे आवन कौ कारन सुनि लेउ, ता पाछै जो मन मानें सो करियैगो. मैं में ब्रह्मचर्य्य व्रत पालन कियो है, अरु चांद्रायन व्रत कौ नेम है मेरो; अब हीं गंगा जू स्नान किबे आयतु, तैस में पंछीन के मुख तें तिहारी बडाई सुनी, कि तुम ज्ञान चरचा में निपुन हौ, तातें तुम सों धर्म उपदेस सुनिवे कौं आयो हौं. अरु बिचार ऐसो है, कि जो कोऊ दिन ऐसे साध की संगति में रहौं तो पवित्र होउं. कह्यो है, (दोहा) "छिन तें मिटै असाधपन लहै अगाध विवेक; लाल जु संगति साध की हरै उपाध अनेक." मेरे तो यह मनोरथ है, या पर मारो चाहो तो मारो. कह्यो है, "गृहस्त कौं ऐसो चाहिये, कि

केरी वा बेरी कू आपनें घर आवे तौ वाकी कू पूजा करै." जहें वृक्ष कौं बोज काटनि आवै, तौ वह वाकू पर छांह करै; यातें बूढ़े के घर बालक कू पाऊनौं आवै, तौ सेवा जोग है, अथवा वा बिचार बहु याहीं; पाऊनौं घर आवै. तातौं सब तें बड़ौ करि मानिबै, यथा योग्य पूजा कीजै. जो और कछु घर में न होय, तौ मीठे बचन, तृन वा बिछौना, शीतल जल दै, अति हित वा मिल बैठै; अर इतनौं कू न करै, तौ वाके घर तें अतिथि निराश जाय, वाकौ धर्म ले जाय, वाकौनौं पाप दै जाय; यातें साधु निर्गुन कू पर दया करतु हैं; जैसें चंद्रमा सब ठाम प्रकाश करै. गीध बोलौ, बिलाव कौं बाघ तें अधिक दया होति है, अर जहां पंछीन के सिसु रहतु हैं, ताते तोसों हौं कछु कहि नाहीं सकतु; पर जो तू यहां रहै, तौ दून छौंनानि तें कपट बिन कीजो. दया सुनि, बिलाव नें भूमि में हाथ छुवाय, कान हाथ धरि, कह्यौ, स्वामी! मेरें एसी बात कू न होय; धर्मशास्त्र पढ़ि सुनि मैं वैराग दया गही है; अर जीव हिंसा बड़ौ अधर्म है, सब शास्त्रनि में वर्जित है. कह्यौ है, "साधकौं ऐसौ चाहिबै, कि पराऐ अपराध सहै, सब कौं पाले, सो सर्व लोक पावै; यामें संदेह नाहिं; कौंकि धर्म सदा सहाय होय," अर जाकौ मांस खाइबै, सो तौ जीव ही सों जाय, खानिहारे कौं छिन एक जीभ ही कौ स्वाद; तातें आपनौं सौ जीव सब कातू कौ जानिये. कह्यौ है, "जो बन के कंद, मूल, फल, फूल, पान सों, पेट भरै, तौ जीव हिंसा काहेकौं करिये?" ऐसें कहि, प्रतीति बढ़ाय, बिलाव मीघ के समीप रह्यौ. कोऊ समय पाय, वे बाल पंछीन के छौनानि कौं पकरि खाये. जब वे सिसु पुकारे, तब मीघ बोल्यौ, अहो दीरघकरन! इन बालकनि कौं तू

काहे खायौ है? वानें कही, स्वामी! मेरे बालक मोतें बिछरे हैं, ताके हेतु इन तें दिन कटी करतु हौं. ऐसें कहि, जद आपनौं मनोरथ साध्यौ, तद बिलाव व्हां तें परायौ, अरु पंछियन आय आपनें बालकनि के हाड़ चाम गीध के खोड़र समीप परे पाये; तब उननि जान्यौ, कि हमारे छौंना इन पापी बिस्वासघाती चंडारि में खाये. ऐसें समझि, सबनि मिल, गीध कौं जीव सों मार्यौ. तातें हौं कहतु हौं, कि बिन जानें मिचाई कबहू न करिये.

यह बात सुनि, स्यार क्रोध करि बोल्यौ, मित्त! जा दिन तुम हिरन सों मिचाई करी, ता दिन यह तिहारौ कुल सुभाव कहा जानतु हो, जो मिल बैठौ? यातें आपनौं परायौ कहनौं मूरखनि कौ काम है; पंडित कौं तौ सब आपनें ही हैं; जैसें मृग हमारौ मित्र, तैसें तुम हू; अरु भलौ बुरौ तौ व्यवहार ही तें जान्यौं जातु है. हिरन कही, मित्र! विवाद कौं करतु हा? जितेक मिल रहैं, तितेक ही भले. काग कही, भाई! तुम जानौं. इतेक में सब आपनें आपनें उदर की चिंता कौं गये, अरु सांझ कौं आय इकठे भये. यहीं भांति वहां रहनि लागे. कितेक दिन पाछे, स्यार नें हिरन कौं ऐकलौ पाय कह्यौ, मित्र! हौं तिहारे लये आह्यौ हतौ कोमल जव कौ खेत देखि आयौ हौं, जौ मेरी गैल चलौ तौ दिखाऊं. या रीति कपट करि, वाकौं कुमारग में खायौ, अरु बहु कुविसन कौ मार्यौ लोभ करि वाके संगही उठि धायौ. ऐसें नित वाके संग जाय जाय, खाय खाय आवे. ऐक दिन वा खेत के रखवारे नें हिरन कौं आवतु देखि, फांद रोपी. ज्योंहीं यह चरवे कौं पैठौ, त्योंहीं बध्यौ; तब मन में कहनि लाग्यौ, कि मित्र बिन मोहि या संकट तें को निकारि

है? अरु इत स्यार वाकौं फंसौ देखि, नाचि नाचि, मन में कहनि लाग्यौ, कि मेरे कपट कौ फल आज मिलैगौ; जब रखवारौ याकौ मास भख करैगौ, तौ हाड चाम में जो मास लपट्यौ रहैगौ, सो हौं खाऊंगौ. यह तौ या विचार में नाचि कूद रह्यौ हो, अरु मृग में जान्यौं, यह मेरौ ई दुख देखि व्याकुल हो, हाथ पांव पटकतु है; पर यह न जान्यौं, कि दान कौ लोभी बटुवा की भांति कला करतु है. आगै स्यार की दसा देखि मृग कही, भाई! मेरे निमित्त तू ऐतौ खेद कौं करतु है? कह्यौ है, "आपदा में काम आवै सो हितू; रन में जूझै सो सूर; दरिद्र में स्त्री की परिचा लीजिये, दुख में बंधु जानिये." ऐसें मृग में कह्यौ, तद स्यार नें निकट जाय देख्यौ, कि यह तौ कठिन बंधन में पर्‌यौ है, तातें मेरौ मनोरथ शीघ्र सिद्धि होयगौ. ऐसें बिचारि बोल्यौ, भाई! यह जाल तौ तांत कौ है, अरु मेरे आहित कौ उपास है, सो दांत करि कैसें काटौं? जौ और ब्रत होय, तौ कछु चिंता नाहीं; पर रवि के ब्रत कौ तौ यह बिचार है, जो भंग होय तौ सब पाछली काछा निरफल जाय; यातें आज तौ यह बात है, काल सकारे जो मोतें बनेगी सो करौंगौ. ऐसें कहि, व्हां तें उसरि, परै होय बैठ्यौ. दूतेक में निसा बितीति भई, अरु व्हां सुबुद्धि नाम काग जाग्यौ; सो बिचाय करि कहनि लाग्यौ, कि राचि मित्र मेरौ नाहीं आयौ, अब कहं खोजौं. यह कहि, व्हां तें चल्यौ. आगे जाय देखै तौ जाल में बध्यौ रह्यौ है. काग कही, मित्र! यह कहा है? उन कही, हितू! मैं तेरौ कह्यौ न मान्यौं, ताही का यह फल है. पुनि काग कही, वह तेरौ नयौ मित्र कहां है? दून कही, वह मेरे मास कौ लोभी व्हां हीं होयगौ. बहुरि काग कही, भाई!

साध जन आपनों सो सुभाव दुख काहू को जानें, अरु दुष्ट को जातीय सुभाव है, सो बातें करै भलाई, तातें वह करै बुराई. कह्यो है, "दुष्ट बिन बुलाये, आय पहिले पाय परै, पाछै कानाबाती करै; हित की रीति सों प्रीति जनाय, कपट करि कुमारग बतावै, अवसर पाय घात चलावै;" जैसें मादर पीढ़ खाई खाय, खाय को खाबि, खमें पाय, डंगा मारै, तैसें ही दुष्ट मनुष; तातें हौं कहतु हौं, कि बैरी को बिस्वास कबहू न कीजै. ऐसें ह कह्यो है, (चौपाई) "बैरी, बंदुआ, बाबियां, खारी, चोर, सवार; बिभचारी, रोगी, रिनी, बमरबारि को बार. बमरबारि को थार, भूख परतीत न कीजै; सो सो सोंहैं खाय चिच ऐसो नहीं दीजै. कहि गिरधर कविराय परै आवै अनचैरी; हित की कहै बनाय जानिये पूरी बैरी."

इतेक बातें सुनि, मग सांची सांच सी बोल्यो, जे झूठी बातें कहि चोर को बुरो करतु हैं, तिन को भार पृथी कैसें सहति है? ऐसें बतराय रहे हे, इतेक में रखवारो आवतु देख्यो; तब बाघ में कुरंग तें कही, अब तू आंखि फिराय मृतक होय रहि, जब मैं पुकारौं, तब उठि भजियो. यह सुनि, उनि वैसें ही करी. रखवारो आय, हिरन कों देखि, बोल्यो, यह तो आप ही मर रह्यो है, याहि कहा मारौं? आगें, याहि मरो जान, बंधन खोलबे, चाहें कि याहि उठावे, त्योंहीं काग बोल्यो, अरु हिरन उठि भाग्यो. तब रखवारे में खिसायके लौठिया चाली, सो खार के मूड में लगी, अरु लागत प्रमान ही मर्यो. ऐसें चोर ह ठौर कह्यो है कि, "तीन दिन, तीन रात, तीन पख, तीन मास, तीन बरख में, पुन्य अरु पाप को फल मिल रहतु है."

इनकी कथा सुनि, लघुपतनक काग नें हिरण्यक चूहा सों कही, मित्र! जो कदाचित मैं तुमैं खाऊं तौ पेट कू न भरै, यातें तुम ये मित्र धरमात्मा साधु कौ बुरौ काहे करि हौं? कौंकि चित्रग्रीव सहित सब पंछी जब जाल में परे, तब तुमनि सहायता करि उन के जीव बचाये. कह्यौ है कि, "आपने कार्य सिद्ध करिवे कौं सज्जन तें मिचाई करिये, तौ ऐक दिन काम आवै;" तातें हौं तिहारौ पठंगौ लियौ चाहतु हौं, कि कबहू मेरै दुख में सहायता करिहौ; या कारन आयौ हौं, तुम और मत जानौ. पुनि मूषक बोल्यौ, कि चंचल सों मित्रता कबहू न कीजै; (दोहा) कागरु भैंसा कापुरुष आन भेड मंजार; इन पांचनि कै विस्वास तें आपुनि जैये हार. यातें इन सबनि कौ विस्वास कबहू न करिये; बैरी मिल्यौ रहै, ताके हित पर न भूलिये. कह्यौ है कि, "कैसौ हू तातौ पानी होय, पर अग्नि कौं बिन बुझाये न रहै; निबल सबल न होय; अनमिल बात कबहू न मिलै; जैसें पानी में गाडी, अरु भूमि पर नाव, न चलै." पुनि ऐसें हू कह्यौ है कि, "स्त्री तें मर्म की बात न कहिये; जो कहिये, तौ विरोध न करिये; करिये तौ जीवन की आस न राखिये." कोऊ ऐसें हू कहतु है, (कुंडलिया) "सांई ये न विरुद्धिये कवि पंडित गुरु यार; बेटा बनिता पौरिया यज्ञ करावनहार. यज्ञ करावनहार राजमंत्री जो होई; विप्र परोसी वैद्य आप कौं तपै रसोई. कहि गिरधर कविराय यहै कैसी मनुसाई; इन तेरह तें तरह दिये बनि आवै सांई." बहुरि काग कही, प्रीतम! जो तुम कह्यौ, सो सब मैं सुन्यौ; पर मेरौ यह विचार नाहीं जो तुम तें द्रोह करौं; अरु जो तुम मोसों प्रीति न करिहौ, तौ तिहारे

बार पर उपास करि करि प्रान तजौंगो, मोहि राम लछमन जू की आन है; क्यौंकि असाध की मिचाई थोरे ई दिननि में टूटै; जैसें माटी कौ पात्र फूटिकै न जुरै; अरु साध की प्रीति ऐसें है, जैसें सुबरन कौ पात्र, बेग न फूटै; अरु जो फूटै, तौ फेरि संधै. औ कितेक सज्जन पुरुष नारियर की भांति रहतु हैं, कि ऊपर तें तौ कठिन, अरु भीतर कोमल; पुनि दुष्ट जन झ की बेर की सी रहन है, कि ऊपर कोमल, अरु भीतर कठोर; तातें सज्जन अरु दुष्ट जन सुभाव ही तें जान्यौ जातु है, कछु रहन तें नाहीं; अरु पवित्र, दाता, सूर, संकोची, खेही, निर्लोभी, सत्यवक्ता, साध होतु हैं, असाध न होंय; यासों तुम ही कहो, कि साध जन पाथ को न प्रीति करै?

या रूप की बातें सुनि, हिरन्यक मूसा बिल तें बाहर निकस बोल्यौ, कि तेरे बचन सुनि मैं अति सुख पायौ; जैसें कोऊ लूअ कौ मार्‌यौ, स्नान करि, चंदन सब अंग पर चढ़ाय, शीतल होतु है, तैसें मेरौ हियौ ठंढौ भयौ. कह्यौ है, "छः प्रकार तें प्रीति बढ़ति है, लेवौ, देवौ, गुझ कहिवौ, सुनिवौ, खेवौ, खवायवौ. अरु ये खेह के दूषन हैं, सदा मांगवौ, अप्रिय बचन कहिवौ, मिथ्या भाषवौ, चंचलता, अरु जुआ, सो तौ में ऐक झ नाहीं; यासों हौं तेरौ सुबिचार देखि प्रसन्न भयौ, आज तें तू मेरौ मित्र है. इतनी बात कहि, काग कौं द्वार पर बैठाय, मूसा बिल में गयौ, अरु व्हां तें कछु खेवे की सामग्री ल्याय, खवाय, आप झ वाके पास बैठ्यौ. ऐसें वे दोऊ व्हां रहनि लागे.

ऐक दिन काग कही, भाई मूसा! या ठौर तौ अति कष्ट सों अहार जुरतु है, यासों वहां चलौ, जहां बहुत चुगौ,

सुख तें खैवे कौं मिलै. पुनि मूषक बोल्यौ, मित्र! कह्यौ है कि, "जो सयानैं होय, सो आगलौ पाय धरि पाछलौ पग उठावै;" तातें प्रथम ठौर विचारौ, ता पाछै व्हां तें चलौ. वायस कही, बंधु! मैं नीकी ठाम विचारी है, कि दंडकारन्य बन में कर्पूर नाम सरोवर; तहां मंथरक नाम कछुआ मेरौ मित्र है, सो बड़ौ पंडित धर्मात्मा है. कह्यौ है, "औरन के धर्म उपदेस दैंन कौं सब पंडित हैं; पर आप धर्म मारग में दृढ राखैं, ते बिरले जन होतु हैं;" तातें मित्र! वह हम कौं भली भांति राखि रक्षा करिहै. कह्यौ है, सुनैं, "जा देस में आपनी बड़ाई, मित्र, विद्या की प्राप्ति, सुसंग, गुन बिचार, अरु तीरथ इ न होय, तौ वहां बसिबौ उचित नाहीं." मूषक कही, हिलू! व्हां मोकां इ साथ लै चलौ. ऐसें बतराय, दोऊ कछुआ पै गये. इनें देखि कच्छप बोल्यौ, मेरौ मित्र समुपतनक आयौ. इतनौं कहि, अगू बढि, मिष्टाचार करि, आदर सों पाय पखराय, आसन पर बैठाय, पूजा करनि लाग्यौ; तब कौआ बोल्यौ, मित्र! याकी पूजा विसेष करि करौ; यह बड़ौ धर्मात्मा हिरन्यक नाम मूसा, सब चूहन कौ राजा है, याके गुन की स्तुति करिबे कौं मेरौ मुख नाहीं; जौ सहस्र मुख तें सेषनाग जू कहैं, तौ कहि सकैं. इतनी कहि, चित्रग्रीव की सब कथा सुनाई; तब मंथरक नें वाकी पूजा करि पूछ्यौ, आपु कौ बास कहां? अरु व्हां आवनौं कैसें भयौ?

तब मूसा कहनि लाग्यौ; चंपानगरी में सन्यासियन कौ मठ, तामें चूराकरन नाम सन्यासी रहै; सो जो भिक्षा मांगि अन्न लावै, वह अंधे आरा में राखै, वा अनाज कौं हौं

कूदि कूदि खाऊं. कितेक दिन पाछै, वाकौ मित्र वीनाकरन नाम सन्यासी तहां आयौ; चूराकरन वासों बात करै, अरु खकरी धरती में खरकावै; तब वीनाकरन कही, तू जो मेरी बात जीकै चित दै नाहीं सुनतु, सु तेरो मन कहां है? पुनि उनि कही, गुरुभाई! हौं तौ तेरी बात दिखौ दै सुनतु हौं, पर यह निगुरौ मूसा मेरी सिखा कौ अन्न सब खातु है, मोहि दुख देतु है, याहि मारयौ चाहयौ भाई! याकौ कछु उपाय करौ. वीनाकरन बोल्यौ, याकौ कछु कारन है; ज्यौं ऐक तरुन स्त्री नें बूढे पुरुष कौ आलिंगन चुंबन करि, आर कौं छिपायौ, त्यौं यह मूसा इ बिन कारन नाहीं कूदतु. चूराकरन कही, वह कैसी कथा है? पुनि वीनाकरन कहनि लाग्यौ;

गौड देस में कौडंबी नाम नगरी, तामें चंदनदास ऐक बनिया; उन बूढू अवस्था में, धन के मद सों, लीलावती नाम और महाजन की बेटी ब्याही; सो काम की अधिकाई तें, थोरे ई दिननि में जोवनवती भई. जब वह भर्तार वाके मुख कौं न पूजै, तब वाहि अनखावनौं लागै, जैसें विरहिनि कौं चंद; अरु नाम के नौसे कौं खरज न सुहाय, तैसें तरुन स्त्री कौं बूढो स्वामी इ न भावै; कौंकि बूढू कौं दर्प कहां? कह्यौ है, "ज्यौं बालक कौं औषध न दीजै, त्यौं वह इ वाहि जीकौ न लागै; पर बुढरा बातें अधिक प्रीति करै." पुनि ऐसें इ कह्यौ है, "न डोकरा भोग कर सकै, न छांडि सकै, चाटतु घूमतु रहै; जैसें बिना दांत कौ कूकर हाड पाइ न खाय न छांडै." जब वाकी इच्छा पूरन न भई, तब वह बनिया की बेटी लीलावती कुल की मर्यादा छांडि, धर्म कौ भय नाखि, लोक लाज तजि, औगुन की अधिकाई तें

ऐस चौर स्त्रियां कै पुरुष तें विभचार करनि लागी; अर कामातुर होय, पिता के घर कबै, भाया कौं जाय, भर्तार के आगै चौर सौं बतराय. कह्यौ है, "जो नारी पति के सान्हान चौर पुरुष सों बातें करै, सो निस्संदेह परकीया होय." बहुत हैं, "इनकी भांति सौं परकीया होति हैं; बाल होय जाकौ पति, वृद्ध होय, कुरूप होय, विदेस होय, अग्नि होय, बस न करै, हित न करै, असंतान होय;" नारी इतनी भांति विभचारिनी होति हैं; अर मद पीवै, कुसंग में बैठै, पति के औगुन चौर सों भाषै, घर घर डोलै, पति सेवै, नित तन मांजै, सदा सिंगार करति रहै, राच परधन कबै; ये नारीन के दूषन हैं अर जिन के स्वभाव नाहीं, छिनाई नाहीं, चौर पुरुष सों न बोलैं, लाज बहुत, ते स्त्री पवित्र जानिये. कहत हैं, "नारी घृत समान, अर पुरुष अग्नि सम, तातें दून कौ संग भलौ नाहीं." पुनि कह्यौ है, "बाल अवस्था में पिता रक्षा करै; तरुनाई में पति रखवारी करै; वृद्धपन में पुत्र सावधानी तें राखै; तौ स्त्री कौ धर्म रहै, नातौ नष्ट होय."

आगै ऐक दिन वह लीलावती बनियां के पुत्र साथ आपनें घर में आनंद करि रही ही, यामें वाकौ पति बाहर तें आयौ. ताहि आवतु देखि, बेग ही खटिका तें उतरि, सनमुख जाय, आलिंगन कियौ. वाके देखिबे कौं तौ दै आंख ही, पर ऐक सों दीसतु न हो; अर आसें दोयतु हो. ता पै चुंबन सेइ मिस करि, उनि मुख राख्यौ, चौ आर कौं बाहर निकरि दियौ. कह्यौ है, "कि जो बृहस्पति तें क्रिया पढै, पर उतान की ठांव बाल की बुद्धि थिर न रहै, अर कबू न दनि आवै, सो नारी छिन ही में उपाय करै."

आगै लीलावती कौं आलिंगन करति देखि, ऐक छुटगी नें कारन विचारि, वाहि डांख्यौ, अरु कह्यौ, ऐसौ काम फेर जिन कीजो. तातें मूषा के कूदवे कौ कारन मैं जान्यौ, कि याके विष मैं माया है; कौंकि धन विन बल नाहीं होतु. कह्यौ है, (दोहा) "कनक कनक तें सौ गुनी मादकता अधिकाय; वह खाये बौरातु है, यह पाये बौराय."

ऐसें कहि, सन्यासियन मिलकै मेरे विष तें सब धन काढि लियौ; ताके दुख तें हौं बल हीन भयौ, अरु मन में उत्साह रु नाहीं रह्यौ. कौंकि देह में जो बल हर्ष होतु है, सो माया तें; अरु धनहीन तें कछू न बनें. कह्यौ है, "धनहीन पुरुष संसार में मृतक समान है." जब द्रव्यहीन भयौ, तब बिबलाई तें मो पै चल्यौ न जाय. पुनि चूराकरन सन्यासी मोहि देखि बोल्यौ, कि यह मूषक अब सीधौ भयौ; जैसें ग्रीषम ऋतु में नदी बलहीन होति है, तैसौ ह्वै गयौ. कहतु हैं, "द्रव्यहीन की मति थिर न रहै, जा पै धन, सो ई बुद्धि वान, पंडित, ज्ञानी, दानी, बली, चतुर, कुलीन, गुनी है; अरु पुत्र बिन घर सून्य, विद्या बिन हृदै; औ दरिद्री कौं संसार सूनौं लागतु है." पुनि देखौ, धन गये कैसौ रु सुरूप होय, पर कुरूप ह्वै जातु है. ऐसी बातें वा गुसांई की सुनी, तब मैं ने आपनें मन मांहिं विचारी, कि अब यहां रहनौं जोग नाहीं. कह्यौ है, (दोहा) "मंत्र मैथुन औषधी दान मान अपमान; मर्म द्रव्य गृहछिद्र ये प्रगट न लाख बखान." जो कहिये, तौ मिथ्या आपनौं भर्म गंवैये; जब दैवता असंतुष्ट होतु है, तब जो उद्यम करै सो निर्फल जाय; अहंकारी कौं दै बात, जैसें धतूरा कौ फूल, कैतौ भूमि परौ सूखै, कै महादेव के माथे चढ़ै; तातें भिक्षा उपाय करि जीवै जोग

नाहीं; जगत तें मागिवो, औ मरवो, समान है. (कवित्त) मान धनमान को पयान होतु पहले ही यद्यपि निपट गुनी चित्र हू तें गरवो; कहै कवि देव बार बार अस उचरतु छुटकी देतु लागै छुटकी तें करवो; अति ही अजानबाऊ नख तप थोरो दीस मन माहिं ऐसे जौं हिडोरे का बो मरवो; तृण हू तें तूल हू तें पौन हू तें फूल हू तें मेरे जान जचही तें मागवो है हरवो.

पुनि चूरामनि तें बीजाकरन कहनि लाग्यो, कि पराधीन जीवन, दुख है मैथुन, विद्या करि हीन, प्रदेस को बास, काया रोगी, पराये घर जोगी; ऐसे मनुष को जीवन मरन समान है. कह्यो है, "लोभ तें चित डुलै, कष्ट पावै, मरन होय, लोक परलोक जाय." अब वा गुसाईं नं ऐसे बोल कहे, तब मैं नें विचार्यो, कि हौं लोभी, असंतोषी, आत्मद्रोही हौं; तातें मेरी संपति गई, अरु संतोषी की संपति कबहू न जाय; जे संतोष करि अघाने हैं, तिन कौं जैसो सुख है, तैसो असंतोषी कौं नाहिं. कह्यो है, "जिन तृष्णा न राखी, काहू की सेवा न करी, अधीन बचन न भाखे, विरुद्ध की पीर न सही, अधीरता न की, ऐसे पुरषनि तें सो जोजन धन दूर रहतु है; अरु संतोषी कौं हाथ की वस्तु कौ हू आदर नाहीं." ऐसो विचारके हौं निरजन बन में आयो; तिहारो आश्रम स्वर्ग समान पायो. कहतु हैं, "यह संसार विषय कौ रूख है, यामें दै फल मीठे कहतु हैं; ऐक तौ काव्यरस, दूजो साध कौ संग."

इतीक बातें सुनि मंथरक कछुआ बोल्यो, मित्र! धन में बड़ो दोष है, ऐक तौ अनेक दुख पाय इकठो कीजै, दूजे प्रान तें हू यत्न करि राखिये; ऐसो धन काहेको भलो?

कह्यो है, "जे आपनो सुख हारि, परायो जये द्रव्य उपजाय राखैं, ते ऐसें, जैसें मोटिया मोट बांधि धरैं, पर भोग और ही करैं;" ऐसें तो सब धनवान ही कहावैं; कोऊ दान भोग में तो नाहिं. यातें हरिश्चंद्र को यश बखान, पर धनवान को ऐक और दोष, कि बांधि गये को दोष से निर्धन कोऊ नाहीं. पुनि कह्यो है, "चार बात संसार में जाय निपुन तें होनी कठिन हैं; प्रिय बचन सहित दान, गर्व बिन ज्ञान, क्षमा समेत सूरता, लाज लिये धन;" यातें धर्म को संचय करिये, अति लोभ न करिये; जैसें ऐक सार पक्षिन सारथे करि मार्यो गयो. हिरन्यक बोल्यो, यह कैसी कथा है? कहुधा कहनि लाग्यो;

कलागकटक नगर में भैरव नाम साधी, सो ऐक दिन विंध्याचल के बन में गयो हो; सो वहां तें ऐक सुग्न मारि, कांधे लिये आवतु हो; मैग में ऐक सूकर आगेहु हेखि यातें लोभ करि, या पै दाव मार्यो, सो सर तो याके लाग्यो, पर मरतु मरतु याने या ह कों घाय मार्यो. इहि बीच, ऐक हीरधराव नाम सार पुत्रिन्ह ले आय कह्यो, यह इन तीनन कों यहां परें देखि, बिन आपनें जी सोचि विचार्यो, कि अहार बहुत भयो, यातें अनेक दिन लों खाउंगो, पर आपनो काया पुष्ट करोंगो. यह विचारि यह सार बधिक के पास आय, जौलों यहिने धनुष की जेव खांचि लाग्यो, तौलों सींग मेह टूटि, होर छूटि, याके कपाल में लाग्यो, अरु तत काल प्राण देह तें निकरि भाग्यो. जंबुक जीव सो मयो, सांझ भय यहां ही बसेरो रह्यो; यातें हों कहतु हौं, कि अति लोभ करि बंधय न करिये; अरु जो भव धाय न धाय, न देय, तातों द्रव्य जोरों अरि तोरों

रहै, मरै पर वाके धन कन को और ही गाहक होतु हैं, जीवतु भर हेलि हेलि जयजंजय करै, मरै पै वाके काम कछु न आवै. तातें खाइये, खुटाइये, और आपनों; कौंकि तामें खारथ परमारथ दोऊ रहतु हैं.

इतनी सीख कहि, पुनि कच्छप सों मूषा सों कह्यो, कि अब तुम मरे द्रव्य को सोच जिन करो; कौंकि जो वस्तु राखवे जोग न होय, ताको यह पंडित चतुर नाहीं करतु हैं. तातें मित्र! तुम चिंता मत करो. कह्यो है कि, "विद्या पढे तें सब पंडित नाहीं होतु हैं, जे क्रियावान, ते ई पंडित हैं; जैसें दीवो को दीप औरन को गाढ़ तिमिर तो नाश, खाय तब ही नाश; तैसें बिन उद्यम, विचार किये धन न आवै; आंधरे के आगे दीपक कहा करै? खायगो आंख की जोति बिन प्रकाश न करै." पुनि कह्यो है, "दांत, नख, केस, नर, खाय छूटे में शोभा न पावै; पर चिंत, डर, मल, पान, पंडित, गुनवान, और जोगी, ये जहां तहां बंधरैं, तहां तहां आदर बढ़ावैं." कहतु हैं, "जैसें कुआ में हादुर, सरोवर में कंवल, आग ही में आवै, तैसें उद्यम किये लक्ष्मी ह आवै; दुख सुख चक्र की भांति फिरतु है, अरु जे पुरुष साहसी, डर, ग्लानि, उद्यमी, हैं, तिन कों दुख नाहीं व्यापत." कह्यो है कि, "कैसेहू पंडित, गुनी, तपसी, डर, बंधु अनंत, होय; पर लोभ बिना आदर ही पावैं; गुनवान सुभाव ही में बड़ो; जैसें कंचन और भूषन, जो कुमार के करे बांधें तो ह सुहावनों लागे." तातें यों कहतु हैं, कि धन को सोच न करिये; कौंकि जब माता के गर्भ में विधाता बास हेतु है, ताके प्रथम ही भूख बास में प्रगट करतु है, जो पाछें जन्म होतु है. एहो दिवाडिये, (होरा) जिन रोने हरखे किये खान खान

हंस सेत; मोर विविध बु रंग किये को चिंता करि देत. अरु सुनौं, धन में ऐते दुख हैं, उपजतु, राखतु, जातु; यौ बड़ाई बाढे हू धन सुख कबहू न देय; बातें ज्यौं उपजै, त्यौं देखै, खाइये, तौ ही भलौ; नातौ जैसें माख कौं ऊधर राखे मंछी खाय, भूमि में खार कूकर, पानी मांहिं कच्छ मच्छ, माटी मांहि कीरा कीरी खांय; तैसें धन कौं चार भय, राज भय, अग्नि भय, चोर भय, दुष्ट भय. अरु नाहू में यह बड़ो दोष; कि माया के लोभ सें सेवक होय अधीनता करै; पर भावी काहू सों न टरै. यासों प्रीतम! तुम हमारी साथ अब जिन छांडौ, जन्म भर यहां ही रहौ. कह्यौ है, "संतोष करि रहनौं, दान दैबौं, क्रोध न करनौं, ये साध के लक्षण हैं, असाध तें न होंय." इतेक सुनि लघुपतनक काग बोल्यौ, अहो मित्र मंथरक! तुम कौं धन्य है! अह आश्रम के जोग महंत हौ, आपदा में उद्धार सेतु हौ, ऐसे जैसें इन्द्रदत्त में गरे हाथी कौं हाथी ही काढै; अरु संसार में तेई नर सुनि करिवे जोग हैं, जे पराये दुख में सहायता करैं; अरु जिनके द्वार तें सरनागत निरास न जाय, जाचक विमुख न फिरै. इतनी कहि, वे तीनौं वा ठांव सुख सों खातु, पीवतु, क्रीडा करतु, आनंद सों रहनि लागे.

ऐक दिन तहां चित्रांगद नाम हंस, मोर ही खाबो कौ उरायौ आयौ; ताहि आवतु देखि मंथरक जल मांहि पैठौ, मूसा बिल में धसौ, काग वृक्ष पर चढि बैठौ; आप वानें दूर सों दृष्ट करि देखौ, कि याके आहे मोर तौ कोऊ नाहिं, यह अकेलौ ई आवतु है; तब काग बोल्यौ, भाई! कछु भय नाहिं, सब निकरि बैठौ. यह सुनि, वेऊ निकसि आये, औ तीनें मिल बैठे. चित्रंग इनके पास आयौ, तबै

मंथरक बोल्या, मित्र! तुम कुशल क्षेम तें नीके आये? कह्यो है, "उत्तम पुरुषनि कौ यह धर्म है, घर आवे कौं पहिले तौ कुशलात पूछै, पुनि आदर करि बैठावै, पीछे अति सनमान करि भोजन कौं पूछै, यह उत्तम जन कौ व्योहार है." इतनौं पूछि पुनि कह्यो, अहो मित्र! इत आवन तिहारौ कैसें भयौ? मृग कही, हौं व्याधी कौ डरावो आयो हौं, अब तुम मैं मिचाई कियो चाहतु हौं. हिरन्यक कही, हम तुम तौ सहज ही मित्र हैं, औ परंपराय तुम तें हम में मिचाई चली आवति है. कह्यो है, "जो आपदा में राखै, सो तौ सदा ही कौ मित्र है." तुम इत आये सो भली कीनी, आपनें घर तें ह्यां नीकी भांति रहिहौ. अब बात सुनि कुरंग नें अहार कियौ, अह पानी पी, रूख तरै विसराम लियौ. पुनि मंथरक बोल्यौ, मित्र! तुम कह्यौ, कि हौं व्याधी के डर तें आयौ, सो था निरजन बन में व्याधी कहां?

हिरन कही, कलिंग देस कौ राजा दक्षांगद, अर्थ हित जीत, चंद्रभागा नदी के कांठे आय उतरयो है, अह सकारे इत आय वा चूर सरोवर में जारि डारि मच्छ कच्छ पकरिहै. यह बात हौं धीवर के मुख तें सुनि आयो हौं, तातें यहां रहनौं भलो नाहीं. कह्यो है, "कह आवतु देखि दूर तें टारिये." मैं तौ यह कह्यो, पर अब तिहारी बुद्धि में आवै सो करौ. मंथरक बोल्यौ, हौं और सरोवर कौं जाऊं. तब काग औ मृग तें कह्यो, कि पानी के जीव कौं पानी बो बल ऐसें हैं, कि जैसें राजा कौं आपनें राज को. सुनि हिरन्यक मूसा बोलि उठ्यो, कि भाई! तुम तौ बात कौ भेद न समझ ऐसो विचार करतु हौ; जैसो एक मनिषा के पुत्र नें अनजानें विचार कियो, अह माई आपनी स्त्री कौं ऐसि

पुत्र पावै. अंधरक्त जाही, यह कैसी कथा है? मन मूझा कहतु है;

श्रीपुर नगर, जाकौ श्रीदेव नाम राजा, ताकै पुत्र भयौ, ताकौ नाम तुंबवल धरयौ. जब यह बालमर्ख भयौ, तब राजा नें राज सुत कौं दीनौ, आप हरि भजन करनि लाग्यौ, यौ राजकुमार राज. एक दिन यह राजपुत्र देव दरशन किये आवतु हौ, वानें काह वनिता की स्त्री तहनि यति रूपवती भेस में देखी. जाकौ रूप आदि, यह काम कौ बनायौ जिन मंदिर आंदि आयौ; अह यह लावन्यवती ह राजकुमार कौं देखि, कामातुर होय, आपनें मन कौं गई. कह्यौ है, "खिनन कै गा जोऊ त्रिय, यौ ना अधिक; जैस कथ आंदिं गीचां मथे नवी, करे हरि, तृण चरै, यौ मन संतुष्ट करै. तैसें जुवती ह नवीन नवीन नर चाहैं. पुनि राजकुमार नें ऐक दूती बुलाय, ताकौं आपनी अवस्था बताय, ताके सिखाइ पठाई. वानें जाय राजपुत्र की सब अवस्था सुनाई; तब सुनि कह्यौ, कौ तौ परिचिता कौं, यह नारी कौं ऐसैं कह्यौ है कि, "बिन स्वामी की आज्ञा कछु काम न करै;" यातें तो मेरौ अगोर कहैगैं तो नें करौंगी. छुटनी नें कह्यौ, यह नौं भली कही, कौं ऐसें भी करिहौं. पुनि कहि, दूती राजपुत्र पै आई, यह सबौ संदेसो कह्यौ. राजकुंवर कही, यह कैसें होई? तबहि छुटनी कह्यौ, महाराज! कछु चिंता जिय करौ, उपाय करिहौं. कह्यौ है, "जो कार्य उपाय नें होय, सो यत्न नें य होय; तैसें यत्नहि उद्यम करि यह कौं सोय आंदिं संचार्यजै माहीं." राजपुत्र कही, यह मेरी कथा कौ कब पूरी करहि हैं;

अनंतर यामय में ऐक कपूरतिलक नाम रानी हती,

तापि देखि सब संघुक मनौ करवि लागे, कि लाइ प्रहार
तें वा गज कौं मारिये, तौ चौगाई भए खीरे कौं प्रहार
मुक्तै होय. यह डवि, जिन में में ऐक वृद्ध चार चोखौ, वा
हाथी कौं हौं युक्ति करि मारिहौं. इतनी करि, यह बूढ़ा
संघुक सब के निकट गयौ, यह धूर्त में सब लोकिं कपट
करि, सबौं कौं कह्यौ, हे देव! तुम मो पर दया करौ. सब
कही, अरे! तू कौन है? यह कहां तें आयौ है? इन कही,
सब पंचमाधिपत्य सिंह मोहि तुम पै पठायौ है, यौ विनती
करि कह्यौ है कि, वा वन में हमारौ कोउ राजा नाहिं, वन
के राजा तुम हौ, सब तुम संघुक. कह्यौ है, "जो कुलवंत,
आचार, प्रताप, धर्म, नीति, संघुक होय, ताकौ राजा
करिये," यह राजा नीको होय तौ वन ही कौ संघय करि
है. कहतु हैं, "प्रानी कौं जैसो मेह कौ आधार, तैसो है
राजा कौ अरोहै है; कौंकि राजा के सब में सब धर्म रहै;
दुर्बल, रोगी, दरिद्री, बलि ह को पत्नी, भूपाल के भय में
सेवा करै;" यातें सब तुम विलंब जिन करौ, सेन चलौ;
मुख धर्म में ढील करनी जोग नाहीं. यह कहि, चार हाथी
कौं ले चल्यौ; यह गज ह राज यह के लोभ सौं आपने
साथ ही लियौ; आगे आगे चार, पाछै पाछै कुंजर;
ऐसें होकि चली; यह वैंडे मांहि बरबा की हहहस है रही
ही, ताही सैल वह हाथी सौं चल्यौ. आगे आय हाथी हौं में
बंध्यौ; तब बोल्यौ, मित्र! अब हौं कहा करौं? खरगोश,
मेरी पूंछ उखारि चल्यौ आय. यौं सुनाय, पुनि अब देखौं,
यह या नाहिं बंध्यौ; तब इन कही, तुम सोच जिन करौ;
हौं निहारे निवारिहौं यौं आपनें बचाती आदमय यौं टेरि
आवतु हौं. इतनी कहि सब संघुकनि सेनहि ले चल्यौ, यह

काढ़ति के लिय हांसति तें आवो आज मारि मारि आवो; अब विलाय विचाय्बो नहीं.

इतनों कहि, दूती बोली, महाराज! उपाय तें कहा न हिय? जातें जय हों कहों सो तुम करो. प्रथम तो लावन्यवती को पति हों चाकर राखो; पाछे जो हों कहों सो कीजो. यह सुनि, राजकुमार नें लावन्यवती के भरतार चारुदंत हों चाकर राख्यो. पुनि दुती नें राजपुत्र कों सब छल छिद्र की बातें सिखाय दई; तब उनि वाकी प्रतीति बढ़ाय, वाहि सब काम में प्रधान कियो. ऐक दिन राजपुत्र नें चारुदंत सों कह्यो कि, आज तें ले हों ऐक मास लों श्री भवानी जू का व्रत करिहों, तुम काहू सौभाग्यवती स्त्री कों लावो. आज्ञा पाय, चारुदंत कह्यो असती खट्टाचारणी कों ले आवो; तद राजपुत्र नें पवित्र होय वाहि ऐकांत लैजाय, पाय पखाल, भोजन करवाय, केसर कपूर चंदन सों चरचि, वस्त्र आभरन पहिराय, अति आदर मान तें विदा कियो. तब गेल में आय चारुदंत नें लोभ करि वा नारी सों कह्यो कि, या द्रव्यतें कछु मोह कों बांटि दे. उन कही, मोहि राजकुमार नें दयो है, मैं तोहि कौं बांटि देऊंगी? निदान वाणें धन न दियो; तद चारुदंत नें आपनें मन मांहिं विचार्यो कि, राज पुत्र तो नित ऐक महीनाखों इतनों धन देयगो, यातें आयनी स्त्री कों कौं न खाऊं, जु इतेक द्रव्य सेंत मेंत आपनें घर ले जाऊं? यों विचारि, वह निज घर आय, लावन्यवती हों बोल्यो कि, हे प्रिये! राजकुमार इतनों धन नित प्रत देयगो; जो तू आथ तो यह सब धन आपनें गेह मांहिं आवै. लावन्यवती बोली, स्वामी! हों तिहारी आज्ञाकारी हों, जो तुम कहो सो मोहि प्रमान है. निदान लोभ के मारे

घामें आपनी नारि राजपुत्र कौं आन दई. पुनि राजकुमार नें वाहि देखि, मन में कही कि, जाके मिलन की अभिलाषा ही, सो तौ आय मिली, अब आपनौं मनोरथ कौं न पूरौ करै? यह समझि, निराशौ करि, वाने आपनें मन की आस पूजी, अरु धन दै वाहि बिदा कियौ. तब चारुदंत बनियां निज मंदिर में आय, स्त्री कौ शृंगार छिन्न भिन्न देखि, आपनी करनी औ करतूत तें आपही पछतायौ. (दोहा) अर्थ न समझ्यौ बात कौ ग्रंथ न दीनौं मन; नगर लोग के देखते भयौ भांड महाजन.

इतनी कथा कथ, फेरि मूषा बोल्यौ, अहो मित्र मंथरक! जौ तुम आपनी ठौर तें अनत जायहौ, तौ दुख पायहौ. आगै ईंदुर की बात न मान, मंथरक भय कौ मान्यौ सरोवर छांडि बन कौं चल्यौ, अरु वे तीनौं हू वाके साथ व्है लये. आगै जात ही ऐक व्याधी आयौ, तिन कच्छप कौं पकरि बांध्यौ. कहत हैं, "जब आपदा आवै, तब सुख में दुख बढावै; कैसौ हू बलवान बुद्धिवान होय, पर आपदा तें न छूटै." पुनि ऐसें हू कह्यौ है कि, "संपत में बिपत, संजोग में बियोग, लाभ में हानि, गुन में दोष, ज्ञान में गिलान, मान में अपमान, हांसी में बिषाद, भलाई में बुराई; ये सब समय पाय आप तें आप आय घटति हैं; पर भय औ आपत्य है, सो प्रीति की कसौटी है, याही में सज्जन अरु दुरजन जान्यौं जातु है; औ यौं कहवे कौं तौ सब ही सब के मित्र हैं. (दोहा) सुख में सज्जन बहुत हे दुख में लीने छीन; सोंना सज्जन कसन कौं बिपत कसौटी कीन. आगै मंथरक कौं बध्यौ देखि, वे तीनौं चिंता करनि लागे; तद मूषा नें हिरन सों कह्यौ, मित्र! तुम पंगु बनि बधिक के आगै व्है

कहौ; जब यह बधिक मंथरक कौं ग्रसन, लियाए चाहै भजिहै, तब हौं याके बंधन काटिहौं, काग तोकों बरजि तुम पराइबो. यह बात मूषक तें सुनि, कुरंग मो त्यौंहीं करी. बधिक नें देखी कि, मृग अंतरान्तु आतु है, ताहि हेरिकै पकरि लैउं. यों विचारि, याधी आपनौं धनुष बान तीर रूख तरै राखि, हिरण के पाछे दौरौ. तौं मूख नें मंथरक कछुआ के बंधन काटे, वह नीर मांहिं गिरौ; काग पुकारौ. भाई! आवौ! सरोवर में काल सुभरौ. यह सुनत ही, मृग चौकरी मारि पराधौ; व्याधी निराश ह्वै फलहीन फिर आयौ. यहां देखै तौ कछुआ ह्रद मांहिं; तब कहनि लाग्यौ कि. सोहि ऐसो करतौं उचित न हो जो हाथ कौ छोरि चीर कौं धावौ. कह्यौ है. "अति लालच दीजो डारहीं, जैसो मृग कौ लोभ दिखौ, जैसो हाथ पायौ. कछुआ सोच दिखौ. ऐसें पछताय, व्याधी यहां तें गयौ, ये तीनों मित्र तहां सुख सों रहे, उनके मनोरथ पूरे भये.

इतनी कथा कहि, विष्णुशर्मा बोल्यौ, महाराजकुमार! सुनौं! या कथा के सुनें तें सबका सों मित्रता होय, मन में संतोष पावै, घर मांहिं लक्ष्मी बाढ़ै, राजा राजनीति सों चलै, प्रजा की रक्षा करै. यह मित्रलाभ प्रथम कथा कही. या में जाकी रुचि होय सो कबहू ठगायौ न जाय. यहां निर्मल बुद्धि तें संसार के सब काज साधै, प्रजा भोगा को सो महादेव मू कल्यान करैं. इति मित्रलाभो नाम प्रथम कथा संपूर्णः संपूर्णः.

अथ सुहृद्भेदः.

राजकुमारनि विष्णुशर्मा सों कह्यो, अहो गुरु देव! मित्रलाभ की कथा तौ हमनि सुनी, अब कृपा करि दूजो सुहृद्भेद की कथा सुनाओ. तहां विष्णुशर्मा कहतु है कि, महाराजकुमार! पहिले ऐक बरध औ बाघ सों प्रीति करवाई स्यार नें, अरु पाछे बरध कौं मरवायो वाही बाघ सों. राजकुमारनि कही, यह कैसी कथा है? तद विष्णुशर्मा कहनि लाग्यौ कि;

दक्षिन दिसा में सुवर्ना नाम नगरी; तहां ऐक वर्द्धमान नाम बनिया, सो बड़ो धनवंत हो. काहू दिन, वानें ऐक औरं सेठ की संपत देखि; आपनें मन में विचारयो कि, काहू भांति औरु हू लच्मी इकठी करौं तौ भलो. कह्यो है, "आप तें अधिक बल, द्रव्य, विद्या, देखि, काकौ मन मलीन न होय? अरु ऐसें हीं, आपनी संपत की बढवार देखि, कौन मन मांहि अहंकार करै? कौंकि धनाढ्य कौं सब कोऊ मानैं." पुनि ऐसें हू कह्यो है कि, "असाहसी औ आलसीन कौं लच्मी आप ही त्यागति है; जैसें वृद्ध पुरुष कौं तरुन स्त्री न चाहै, तैसें विन्हें लच्मी हू." अरु जे आलसी होय, संतोष करि घर मांहि बैठ रहैं, तिन कौं विधाता कबहू न बढ़ावै. कह्यो है, "भगवान असाहसी पुरुष हू काहू कौं न

देय." बहुरि कहतु हैं कि, "अनपाई वस्तु कौ यत्न कीजै, तौ प्राप्त होय; अरु वाकी चिंता न करिये तौ न मिलै." ऐसें बिचारि, बनियां पुनि मन में कहनि लाग्यौ कि, जो धन पाय न खाय, न उठावै, वह धन कौन काम आवै? औ बल भये शत्रु कौं न मारिये, तौ वा बल कौं लै कहा करिये? अरु बिद्या पढि धर्म न जानिये, तौ वा बिद्या तें कहा लाभ? पुनि सरीर पाय उपकार न होय, अरु इंद्री न जीतै, तौ सरीर सों कहा अर्थ? कह्यौ है, "थोरौ थोरौ उद्यम करै ह्वै धन बाढ़ै, तैसें बूंद बूंद जल करि घट भरै; अरु बिन बिद्या औ धन जो जन सांस लेतु है, सो लुहार की धवनि समान जानिये."

ऐसें सोच बिचार करि, बर्द्धमान बनियां, नंदक औ संजीवक बलध रथ मांहिं जोति, बहुत धन द्रव्य लादि, रथ पर चढि, काश्मीर की ओर चल्यौ. कह्यौ है, "सामर्थी कौं कहा भार? व्यापारी कौं कहा बिदेस? मीठौ बोलै ताहि कौन परायौ? आगै अधबर गैल में चलत, दुर्ग नाम महा बन मांहिं संजीवक कौ पांव टूट्यौ, बरध गिरयौ पाहार खाकै. वाहि गिरयौ देखि, महाजन कहनि लाग्यौ कि, कोऊ कितेक उपाय करि मरौ, फल बिधाता के हाथ है. ऐसें बिचारि, बरध कौं वहां ही छोरि, बनियां आगे कौं चल्यौ, बरध व्हां रह्यौ. कितेक दिवस मांहिं वह हरे हरे तृन खाय निर्मल जल पी, अति बलवान भयौ; अरु ऐक समय परमा नंद करि दडूक्यौ. वा ठौर ऐक पिंगल नाम बाघ राज करतु हो; पर वाहि काहू नें राजतिलक न दयौ हो. कह्यौ है, "आपनें बल करि सिंह मृगराज ही कहावै." सो नाहर वाही काल जमुना तीर नीर पीवनि गयौ. व्हां जाय

संजीवक के दहूकवे कौ शब्द सुनि, मन हीं मन भयमान होय, पानी अनपियै ही आपनो ठाम आय बैठ्यो. तहां दमनक औ करटक दै स्यार रहैं; सो यह चरित्र देखि, दमनक नें करटक तें कह्यो कि, मित्र! तुम कछू देख्यो, जु आज यमुना तीर पै जाय, बाघ बिन पानी पियै, आपनी ठांव सुचितो होय आनि बैठ्यो, ताको कारन कहा? करटक कही, बंधु! मेरो तो यह विचार है, कि जाकी सेवा न करिये, ताकी बात पूछे तें कहा प्रयोजन? कहतु हैं, "जा गांव न जानैं, वाको पैंडो पूछवे तें कहा काम? मोहि तो अब याकी सेवा करत ह्वै लाज आवति है; पर अहार के लोभ तें करतु हौं. कह्यो है, "जे सेवा करि धन चाहतु हैं, ते आपनों शरीर पराये हाथ बेचतु हैं; अरु जे और के हेतु भूख, प्यास, घाम, सीत, वर्षा, सहतु हैं, तिन की तपस्या में खोट आनिये; क्योंकि पराधीन परबस कौ जीवन मृतक समान है." कहतु हैं, (कवित्त) "दैनों भलो सुपथ कुपथ पै न जैनों भलो सुनैं भलो भौंन पै न खल साथ करिये; संतन कौ लघु संग जड़ि कौ गुरु छांडि साधु कौ सहज औ असाधु कृपा उरिये; थोरिये सराफी नफा बहुत जुवा कौ छांडि परिकै सुसंग आप बस सों सपरिये; हारि मानि लीजै पै न रारि कीजै नीचनि सों सरबस दीजै पै न परबस परिये." मृतक कौंन कौं कहतु हैं कि, जा सेवक कौ ठाकुर न चाहै अरु कहै, इत तें उत जा, बोलै जिन ठाढो रहै; ऐसें अविज्ञा करि वाको मान मर्दन करै, तौ ह्वै मूरख धन के हेतु पराधीन रहै जैसें बेस्या परपुरुष के निमित्त सिंगार करै, तैसें मूरख ह्वै पढि गुनि परायो आधीन होय; यातें मेरे जान सेवक के समान मूरख जगत में कोऊ नाहीं. दमनक

कही, मित्र! तुम यह बात जिन कहो, कहीं है, "बड़ो जतन करि भलो ठाकुर सेइये, जासों मन कामना पूरन होय; छत्र, चमर, गज, अश्व आदि बय सक्ती के पदारथ मिलैं, जो न सेविये, तो कहां सों पाइये? तातें सेवा अवश्य करिये." बज्रदंष्ट्र करटक कही, हितू! जो तुम कही, तामों हमें कहा प्रयोजन? कही है, 'बिन समझे बूझे काज के बीच परै, सो मरै, जैसें ऐक बनचर मरो. दमनक कही, यह कैसी कथा है? तहां करटक कहतु है,

मगध देस में सुभद्रा नाम कोयष्ठ, तिन धर्मारन्य बन में क्रीडा की ठौर बनावन को आरंभ कियो; तहां कोऊ बढ़ई काठ चीरतु चीरतु, वा मांहि सकरी की कील दै, काहू काम कों गयो; अर ऐक बंध को बानर चपलाई करतु करतु वाय बंध वाही काठ पर कील पकरि आप बैठो; अर वाकी अंडकोष वा काठकी संधि मांहि खडकि परे. त्यों उनि चंचलता सों धुनि करि कील काढी, त्यों बानर प्रमान अंडकोष चपे, औ मरो.

तातें हौं कहतु हौं, कि बिन खरच चेष्टा न करिबे. दमनक कही, मित्र! जो प्रधान होय, सो सब काम करै; सेवक कों ऐसो विचारनो जोग नाहीं. करटक बोली, भाई! आपनो काम छोरि और के काम में परनो उचित नाहीं; अर जो परै, तो वैसे होय, जैसें पराये काज में परि बिचारो गदहा मारो गयो. दमनक कही, यह कैसी कथा है? तद करटक कहतु है,

वारानसी नगरी मांहि कोऊ कर्पूरपाट नाम धोबी रहै सो तरुन स्त्री ब्याह ल्यायो. वाकें साथ ऐक दिन रात भर क्रीडा करि सुख नींद मांहि सोवतु हो, वाकें घर में चोर

मेरे. यह ताके अंगमा में ऐक गद्हा औ कूकर हो, सो गद्हा बीरबलि कौं देखि कूकर तें बोल्यो. अरे! यह मेरो काम है, कि ठाकुर कौं जगाय दै. यहि कही. अरे! मेरो काज की चर्चा लिख कर, तू जानतु नाहीं जु, यह मोहि खैवे कौं नाहीं देतु? सुनि, कह्यो है, "जब लौं ठाकुर पै आमदा न मारै, तब लौं सेवक कौ आहर न टारै." पुनि गर्दभ कही, तुम रे आतरे! जो काज परे सांगै, सो कैसो चाकर? यहि कही, जो काज परे सेवक कौं त्यागै, सो कैसो ठाकुर? सेवक तौ पुत्र समान है, इनको पोषण भरण करनौं स्वामी कौं उचित है. गद्हा बोल्यो, अरे! तू तौ मूर्ख है, जो स्वामी कौ काज नाहीं करतु; अरु मेरो नाम स्वामिभक्त है, तातें मोमें स्वामी जागिहै सेा उपाय करिहौं. ब्रह्मदि स्वान आही, रे! खरज कौं पीठ दै सेदरै, अग्नि आगे धरि तापिये, अरु स्वामी सों आगे पाछे मुद्ध भाव रखिये; पर अरु स्वामी कैसो नाहिं; अरु जो तू मेरे काज नाहिं पाय परैगो, तो मेरो मोल तोहि लागिहै. बाकी बात सुनि, गद्हा धूर्त में उसरि, धुलिया के निकट जाय, खान सों मुंह खाल रेंक्यो, मल वा रजक वें नींद सों चौंकि, क्रोध करि, गद्हा कौं मुद्गांगियन मार्यो, वा मार तें वह मर्यो.

तातें हौं कहतु हौं, कि चोर के अधिकार नाहिं कबहू न परिबै. हमारो काम तो यह है, कि आहार खोजनौं; पै आज हमें बाहू कौ खोज नाहीं; कौंकि काहू कौ माय बहुत धर्यो है, तातें हम अनेक दिन पेट भरि काढ़िहैं. दमनक कही, जो तू आहार ही के लये सेवा करतु है, तो यह अच्छो नाहिं; राजा की सेवा करनौं, सो तो स्वारथ परमारथ के निमित्त, कि स्वामी सेवा तें मिल साधनि कौ उपकार

करिये, औ शत्रु दुष्टनि कौं मारिये. यह मन में वासना रहति है, केवल उदर भरन के हेतु नाहीं सेवतु. कह्यो है, "संसार में जाके आसरे अनेक लोग जीवैं, ताही कौ जीवन सुफल है; सब सेवक समान न होंय, सेवक सेवक में हू बड़ो अंतर है; जैसें ऐक पांच कौरी कौं हू अकरौ, औ ऐक लाखनि तें हू न पाइये. कहतु हैं, "घोरा, हाथी, काठ, पाथर, कपरा, स्त्री, पुरुष, अन्न, दून के मोल मोल में बड़ो भेद है." देखो! कूकर थोरौ ई मास हाड तें लपट्यो पावै, तो वाही माहिं संतोष करि रहै; अरु सिंह आगे स्वार ठाढो रहै, तौ हू वह वाहि छांडि गज कौं ही मारै. तातें हौं कहतु हौं कि, जे बड़े हैं ते बड़ौई काम करतु हैं. पुनि कूकर पूंछ हिलावै, पेट दिखावै, तब टूका पावै; अरु हाथी खान बंध्यो, केते जतन उपाय करि, घने आदर सों अहार कौ ग्रास लेय. कह्यो है; "जगत मांहिं ज्ञान, पराक्रम, जस, अहंकार सहित ऐक घरी जीनौं हू भलौ; अरु मान रहित काग की भांति बिष्ठा खाय अनेक दिन जियो तौ कहा?" जो आपनौं ही पेट पालि जियो, तौ वा मनुष औ पशु में कहा अंतर है? पुनि करटक कही, कछु हम तुम या राजा के सेवक नाहिं. बहुरि दमनक कही, भाई! समें पाय मंची कैवे कौ यत्न करिये, बड़ौ पाथर कष्ट करि उठाइये, पै गिराइये सहज में; औ आपनी प्रतिष्ठा राखिवे कौं उपाय सदा करिये. पुनि करटक कही, बंधु! तुम कछु जानतु हौ, कि सिंह आज काहे डरयो? दमनक बोल्यो, भाई! यामें कहा जानवो है? पंडित बिन कहे ही जानें, अरु कहे तें तौ पशु हू पिछानें; पर जाकौं जो भावै सो भलौ. मेरे जानतौ राजा की सेवा मांहि रहिये, औ जब राजा पुकारै, ग्हां कोज है? तब कहिये

महाराज! कहा आज्ञा होति है? दास वैसौ है. वा भांति जद पुकारै, तद वाही रीति उतर देइ, अरु जो कछू कहै सो सावधान व्है सुनि लेइ, कह्यौ न उलंघै, छिन भर साथ न छांडै, परछांईं की भांति संग लाग्यौ रहै. करटक कही, हितू! कह्यौ है, "अनअवसर नृपति के निकट जाय तौ निरादर होय." दमनक बोल्यौ, तोऊ सेवक स्वामी कौं न छांडै. कह्यौ है, "खोगनि के भय उद्यम औ अजीरन के डर भोजन न करबौं कपूत कौ काम है." कैसौ ह्व अकुलीन मलीन विद्याहीन पुरुष राजा के समीप रहै, तासों हित करै. कहतु ह, "अग्नि, स्त्री, राजा, लता, ये निकटवर्त्ती सों लग चलतु हैं, यामें संदेह नाहीं." करटक कही, तू राजा सों पूछैगौ, तुम कौं डरे? उनि कही, प्रथम जाय हौं राजा कौं देखि हौं, प्रसन्न है कै उदास. इन कही, यह तू कैसें जानेंगौ? पुनि उनि कह्यौ, जो ठाकुर सेवक कौं दूर तें आवतु देखि प्रसन्न होय, आपही तें बतराय, निज सेवकनि मांहिं मनें, थोरी सेवा देखि बहुत मया करै, दिन दिन आदर देइ, तौ जानियै, ठाकुर संतुष्ट है; अरु जब राजा सेवक कौं आवतु देखि आंख चुरावै, औ दैवे कौं आज काल्ह करि आसा बढ़ावै, काज बात मांहिं चित न देइ, गुन सें औगुन काढ़ै, मान जानियै. राजा असंतुष्ट है. तातें तुम चिंता कछु जिन करौ, मैं जैसें राजा कौं देखिहौं, तैसी ही बात कहिहौं. कह्यौ है, "जो सचामौं मंत्री होय, सो अनीति में नीति, औ विपत्ति में संपत करि दिखावै." बहुरि करटक कही, भाई! समय बिन बृहस्पति ह कहै तौ अपमान ही पावै, मनुष की किम चलाई? पुनि दमनक बोल्यौ, अरी मित्र! तुम जिन डरौ, हौं बिन औसर न कहिहौं. कह्यौ है, "अब कोउ

कुमारग में चले, तब वाको हितू होय सो बिन कहे मरहै;" सो समें असमें मंत्र न कहै, तो मंत्री काहेको? कौंकि, औसर पर ही बडाई पादयतु है. (दोहा) समय चूकको सकल नर फिर पाछे पछितात; ना यह रहै न वह रहै रहै कहनि कौं बात. इतनी कहि, फेर दमनक बोल्यौ, अब जो मोहि कहौ सो करौं. करटक कह्यो, जामें आपनौं भलौ जानौं सो करौ. यह सुनि, दमनक पिंगल राजा के नेरे गयौ, दंडवत करि, कर जोरि, सन्मुख ठाढो रह्यो; तब राजा नें हंसिकै कह्यो, दमनक! तू मो पास बहुत दिन पाछे आयौ. इतनौं कहि बैठायौ. पुनि दमनक नें राजा की अंतरगति पाय, वाकों भयमान जानि, ऐसें कह्यो कि, पृथ्वीनाथ! तिहारै हमारो काम तो नाहीं; पर हम सेवक हैं, हम कौं यह जोग है, कि समय असमय आयो चाहैं; कौंकि, ऐक समें दांत कान कुरेदवे कौं तृन हू को काम परतु है; तातें सेवक बेला कुबेला काज न आवै, तो पाछै वह कौन काम को? यद्यपि बहुत दिन भये तुम मोसों कछु मंत्र नांहीं पूछ्यौ, पर मेरी बुद्धि नाहीं घटी. कह्यो है, "जो मनि पाय बांधिये, औ काच सिर, तौ हू काच सो काच, अरु मनि सो मनि." पुनि अपमान किये हू जाकी बुद्धि थिर रहै, सो पंडित; थापौं, महाराज! तुम कौं सदा विवेक करनौं उचित है. संसार में उत्तम मध्यम अधम तीन प्रकार के लोग है, जाकौं जैसो देखिये, ताकौं तैसो अधिकार सौंपिये, अरु सेवक की सेवा बुझिये; जो सेवक की सेवा राजा न बूझै, तो सेवक मन मांहिं महा दुखी रहै; तातें, महाराज! आभरन जो सेवक जहां को होय, तहां हीं सोभा पावै, अरु राजा मंत्री की बुद्धि तें चलै, तो अनेक सेवक आवैं. कह्यो है, "अन्न, वस्त्र, आस,

बीज, नर, नारी, ये सब भले के हाथ रहैं तौ भले रहैं, औ बुरे के हाथ बुरे." पुनि कह्यौ है, "जो राजा सुबुद्धि पर छुमाया करै, तौ वह याके निकट न रहै; जौ सुबुद्धि राजा के ढिग न रहै, तौ नीति जाय; नीति गये लोग दुखी होंय; अरु भूपति मया करै, तौ सब ही मानें, नीकी बात सब कौं सुहाय; पै मीठौ बोलनौं महा कठिन है."

इतेक बातें जब दमनक नें कहीं, तब बाघ राजा बोल्यौ, अहो दमनक! तुम हमारे मंत्री के पुत्र ह्वैकै हम पास कबहू न आये. ऐसौ तुम्हें न बूझियै. अब आवन कैसें भयौ? दमनक कही कि, महाराज! हौं तुम तें कछु पूछवे कौं आयौ हौं, आप की आज्ञा पाऊं तौ पूछौं. सिंह कही, दमनक! तुम हम तें निस्संदेह पूछौ. पुनि दमनक बोल्यौ, महाराज! तुम पानी के तीर जाय, बिन नीर पियै सुचित ह्वै, आपने स्थान पै आय बैठे, सो ताकौ कारन कहा? यह कृपा करि मोहि कहौ, तौ मेरे मन कौ संदेह जाय. उनि कही, भाई! मेरे मन की बात काहू सों कहवे की नाहीं; पर तू मेरे मंत्री कौ पुत्र है, यातें हौं तोतें कहतु हौं, तू काहू सों या बात कौं जिन कहियौ; कि जब आज हौं जल पीवे कौं गयौ, तब ऐक अति भयानक शब्द सुन्यौं, ताके भय कौ मारयौ ह्यां तें बगदि यहां आय बैठौ हौं, अरु जी में बिचारतु हौं कि, या बन में कोऊ महाबली जंतु आयौ है, तातें या बन तें अनत जाय बसिबै सो भलौ, पर यहां रहनौं जोग नाहीं. यह सुनि, दमनक बोल्यौ, महाराज! कछु कहिवे की नाहिं, यह शब्द मैं नें हू जब तें सुन्यौं है, तब तें मारे भय के थर थर कांपतु हौं; पर मंत्री कौं ऐसौ न चाहिये जु, पहले ही ठौर कुठावे कै धरावै. औ राजानि कौं यह उचित है

कि, आपदा में इनमेंन की परिक्षा होय, सेवक, स्त्री, बुद्धि, बल; क्योंकि, इन की कसौटी विपत है. नाहर कही, मेरे मन माहिं अति संका है. तब दमनक नें निज मन में कह्यो कि, तुम कौं संका न होती, तौ हम सों काहेकौं बतराती। ऐसें मन में समझ, पुनि बोल्यो कि, धर्मावतार! जौलौं हम जीवत हैं, तौलौं तुम भय कछु जिय करौ; हौं करटक आदि सब सेवक बुलाय लेत हौं. नीति में ऐसो कह्यो है कि, "आपत्य के समय राजा आपनें सब सेवकनि कौं बुलाय, ऐक मतौ करि, अधिकार सौंपे." इतनी कहि, दमनक करटक कौं बुलाय ल्यायो, औ राजा सों मिलायो. पुनि राजा नें इन दोउनन कौं बागे पहिराय, पान दै, वा भय की भांत कौं बिदा कियो. आगे उगर में जात करटक नें दमनक सों कह्यो कि, भाई! तुम बिन समुझे राजा को प्रसाद लियो, सो भली न करी, कहा जानें हम तें वा भय को निवारन ह्वै सकै कै नाहिं? कह्यो है, "काज की वस्तु बिन समुझे न लीजिये;" पर राजा को तौ प्रसाद बिशेष करि न लीजै, क्योंकि, जौ कबहू काज न होय, तौ राजा क्रोध करै, अरु न जानिये कहा दुख देय? ऐसें हू कह्यो है कि, "राजा की दया में लक्ष्मी बसतु है, अरु पराक्रम में जस, क्रोध में काल." औ सब देवतानि को तेज भूपाल में है, तातें नरे नरपति की आज्ञा माहिं रहै तौ ही भलौ; क्योंकि, पृथ्वीपति मनुष रूप कोऊ बडो देवता है. बहुरि दमनक कही, मित्र! तुम चुपकै रहौ, या बात को कारन हम जान्यो कि, यह बरध के बोलवे को शब्द सुनिकै डरो है. अरु बैल कौं तौ हम हू मारि सकतु हैं, सिंह को वह कहा करिहै? पुनि करटक कही, भाई! जो ऐसी ही बात है, तौ राजा सों कहिकै उन

के मन को भय काहे न दूर किये? दमनक कही, हित यह बात प्रथम ही नरपति में कही होती, तो हम तुम को अधिकार कैसें मिलतो? कही है. "सेवक स्वामी को निश्चिंत कबहू न राखे; जो राखे, तो दधिकरन बिलाव की भांति होय" यह सुनि, करटक कही, यह कैसी कथा है? तब दमनक कहतु है;

अर्बुद पर्वत की कंदरा में ऐक महाविक्रम नाम सिंह रहै. जब वह वहां सोवै, तब ऐक मूषा बिल में निकरि, वाके केस काटै; जब वह जागै, तब बिल में भजि जाय. कही है, "छोटे शत्रु बडेनि तें न मरैं." वा मूषक की दुष्टता देखि, बाघ में निज मन में विचारयो कि, याकी समान को कोउ खाजु, तो यह मारयो जाय, नातो या के हाथ तें जीवन न पायहो. यह विचारि, गांव में जाय, ऐक दधिकरन नाम बिलाव को अति आदर सों आन्यो, अरु राख्यो. वह कंदरा के द्वार पर बैठो रहै; अरु बिलाव के भय तें मूषा बिल सों बाहर न निकरै, सिंह सुख नींद सोवै. यातें मूषा के डर तें बाघ बिलाव को अति आदर करै. आगे, कितेक दिन पाछे ऐक दिन, वा मूषा को दाव पाय बिलाव में मारि खायो. जब सिंह में मूषक को शब्द न सुन्यो, तब उठि मन मांहिं विचारयो कि, जाके कारन याहि आन्यो हो, सो काम तो सिद्ध भयो, अब याहि राखिबे तें कहा प्रयोजन? बाघ में ऐसें विचारि वाको आहार बंद कियो; तब बिलाव वा ठौर तें भूखो मरि मरि पराधो. यातें हौं कहतु हौं, कि ठाकुर को कबहू निचिंतो न राखिये.

इतनों कहि, दमनक करटक को ऐक रूख तरे ऊंची ठौर बैठाय, कैतिक जंबुक वाके निकट राखि, आप ऐकलो संजीवक

के पास जाय बोल्यो, तू कहां तें आयो है? जब उनि आपनी सब पूर्व अवस्था कही, तब इन कही, या बन को राजा सिंह है, तुम यहां कैसें रहिहो? पुनि भयमान होय वृषभ कही, तुम काहू भांति मेरी सहायता करो. बहुरि दमनक नें आपनी घातं वाहि निर्भय करि, कह्यो कि, मेरो बडो भाई करटक राजा को मंत्री है, प्रथम उन तें तोहि मिलाउंगो, पाछै राजा तें हू भेट कराउंगो. ऐसें कहि, दमनक नें वा बलध कों करटक के समीप लैजाय, वाके पायन पाड्यो. तब करटक नें बैल की पीठ ठोकिकै कह्यो, अब तुम या बन मांहि अभय चरतु फिरो, अरु काहू भांति की चिंता निज मन में जिन करो. ऐसें वाको भय मिटाय, साथ लै, राज पैार घर आय बैठे. कह्यो है, "बल तें बुद्धि बडी." देखो! बल बिन बुद्धि सों गज बध करतु हैं. पुनि संजीवक सों करटक कही, अब तुम यहां बैठो, हम राजा पै होय आवें, तब तुम हू कों ले जायंगे. इतनों कहि, वे दोऊ सिंह पास गये, शीश प्रनाम करि, कर जोरि, सनमुख ठाढे भये. तब राजा नें उनि तें अति मधुर बचन सों पूछो कि, जा कार्य के लये गये हे, वाको समाचार कहो. तहां दमनक हाथ जोरि, नीचा मूड करि, कहनि लाग्यो, महाराज! हम वाहि देखो, सो अति बलवंत है, पर हमारे समझावे तें वह आप सों मिलो चाहतु है, हम वाहि अब ही ले आवतु हैं; पै आप सावधान ह्वै बैठिये, वाके ग्रब्द तें न डरिये, ग्रब्द को कारन विचारिये; जैसें ग्रब्द को कारन विचारि, कुटनी नें प्रभुता पाई. राजा बोल्यो, यह कैसी कथा है? तब दमनक कहतु है;

श्रीपर्वत में ग्रब्दपुर नाम नगर; अरु वा पहाड की चोटी

पै ऐक घंटाकरन नाम राक्षस रहै, सो वा नगर के निवासी सब जानें; कौंकि, वाकौ शब्द सदा सुन्यौं करै. ऐक दिन, नगर में तें चोर घंटा चुराय, गिर पर लिये जातु हो; ताहि तहां बाघ नें मारि खायौ, अरु वह घंटा बानर के हाथ आई. जब वह बजावै, तब नगर निवासी जानें कि, राक्षस डोलतु है. काहू दिन कोऊ वा मरे मनुष कौं देखि आयौ, तिन सब तें कह्यौ कि, अब घंटाकरन रिसायकै नर खानि लाग्यौ, यह मैं खहट देखि आयौ. वाकी बात सुनि, मारे भय के, नगर के सब लोग भजवे लागे; तब कराल था नाम ऐक कुटनी नें वा घंटा के बजवे कौ कारन जानि, राजा सों जाय कह्यौ कि, महाराज! मोहि कछु देउ तौ घंटाकरन कौं मारि आऊं. यह सुनि, राजा नें वाहि लाख रुपैया दिये, अरु वाके मारिवे कौं बिदा कियौ. तह वानें धन तौ निज मंदिर मांहि राख्यौ, अरु बजुत सी खैवे की सामा लै, बन की गैल गही. व्हां जाय, देखे तौ ऐक मरकट रूख पर बैठौ घंटा बजावतु है. वाहि देखि, यानें ऐक ऊंचे पर सब सामा बिथराय दई. वह बंदरा देखतु ही वृष तें कूदि, व्हां आयौ; पकवान मिठाई, फल मूल देखि, घंटा पटकि, खैवे कौं जौं उनि हाथ बढायौ, त्यौं घंटा अलग भई. तब यानें घंटा लै आपनी गैल गही, नगर में आय, यानें वह राजा के हाथ दई, अरु यह बात कही कि, महाराज! यौं वाहि मारि आई. यह सुनि, लौ घंटा देखि, राजा नें वाकी बजुत प्रसिंसा करी, अरु नगर के लोगन सूं भाखि पूज्यौ.

तातें यौं कहतु यौं कि, महाराज! केवल शब्द ही नें न डरिजे; प्रथम वाकौ कारन बिचारियै, पुनि उपाय करियै.

यह तौ श्रीशिव जू कौ वाहन है, औ तुम पार्वती के; यातें यह तिहारै आश्रम जानि, निर्भय गाजतु है, तुम कौं वाकी आगता स्वागता करि सेवा करनी जोग है; कौंकि, आज वुह तिहारौ पाउनौं है, वाकी सेवा तें ईश्वर पार्वती प्रसन्न होंयगे. यह सुनि, दमनक तें सिंह बोल्यौ कि, तुम शिष्टाचार करि वाहि मोतें मिलाओ, वह तौ हमारौ भ्राता है. पुनि दमनक नें संजीवक वरध कौं पिंगल बाघ सों मिलायौ. दोउअनि मिलि अधिक सुख पायौ. कछुक दिननि पाछै उन मांहिं अति प्रीति भई. आगै, ऐक दिन, सितकरन नाम सिंह राजा कौ भाई तहां आयौ; तब संजीवक नें यह टेरि सुनायौ कि, महाराज! आज तुमनि जो मृग मारयौ है, बाकौ मांस कहां है? सिंह कही, भाई! करटक दमनक आगें. पुनि संजीवक बोल्यौ कि, महाराज! तुम उन तें पूछौ तौ सही, है कै नाहिं? बहुरि गाहर उत्तर दियौ कि, हमारै यही रीति है, जो आवैं, सो उठावैं. फेरि संजीवक बोल्यौ, महाराज! मंत्री कौं ऐसौ न बूझिये कि, जो आवै सो उठावै, कै राजा की आज्ञा बिन काहू कौं देइ, यह नीति नाहीं. कह्यौ है; "आपदा के अर्थ धन राखिये." औ मंत्री ऐसौ चाहिये जो, राजा के धन कौं संग्रह करै, घोरौ उठावै, बहुत जोरै. राजा कौ भंडार प्रान समान है, सब कोऊ धन के निमित्त राजसेवा करतु हैं; धनहीन भये घर की नारी हू न मानैं, औरन की तौ कहा चली? या संसार में धन ही की प्रभुता है, जाके पास धन, सोई बड़ौ. ये प्रधान ही दूषन हैं, अति खरचै, प्रजा की रक्षा न करै, अनीति अधर्म करि भंडार भरै. राजा के सन्मुख झूठ बोलै, तौ अल्प दिननि में ही राज भ्रष्ट होय; कौंकि, बिन बोलै बिचारै

काज करै तें काज कबहू न रहै. संजीवक नें जब यह बात कही, तब सितकरन बोल्यौ, भाई! तैं इन खारन कौं अधिकारी कियौ, सो भली करी; पर हम प्राचीन लोगनि तें सुन्यौं है कि, ब्राह्मन, सची, संबंधी, उपकारी, औ मित्र, इन कौं अधिकार न सौंपिये; कौंकि, ब्राह्मन धन खाय तौ राजा दंड न दे सकै; अरु सची जब बल पावै, तब राज दबाय लेय; पुनि संबंधी आज्ञा न मानें; उपकारी सब तुच्छ जानें; मित्र राजा सम आप कौं गनें; तातें इन कौं अधिकार कबहू न दीजिये. बहुरि ऐसें हू कह्यौ है कि, "चट प्रधान कौं न तोरिये, सहज सहज निचोरिये, जौं खान कौ चीर." जद वानें याहि भरमाया, तद याहू के मन मांहिं कपट ह्वायौ. कहतु हैं, "वेस्या काकी स्त्री, औ राजा काकौ मीत?" (कवित्त) सांप सुसील दयाजुत नाहर काग पवित्र औ सांचौ जुआरी; पावक सीतल पाहन कोमल रैन अमावस की उजियारी; कायर धीर सती गनिका मतवारी कहा मतवारी अनारी; मोतियराम सुजान सुनौं किन देखी सुनी नर नाह की यारी. पुनि राजा बोल्यौ कि, भ्राता! तुम सांच कहतु हौ, ये दोऊ मेरौ कह्यौ नाहीं मानतु, औ मोहि दुख देतु हैं. बहुरि सितकरन कही, भाई! कह्यौ है कि," अहंकार तें जस जाय, कुबिसन तें ग्यान, आलस तं धन, क्रिया बिन कुल, औ लोभ तें धर्म." पुनि ऐसें हू कह्यौ है, (दोहा) "आज्ञा भंग नरेंद्र की बिप्रनि कौ अपमान; भिन्न भेज नारीन कौं बिना अस्त्र बध जान." अरु नीति तौ यौं है कि, "पुत्र हू कहा न मानें, तौ राजा वाहू कौं दंड देय; पुनि चोर अरु लोभी प्रधान तें प्रजा की रक्षा करि, पुत्र की भांति पाखै." अरु सुनि भाई! आज मैं तेरौ अन्न

खायो है, तातें हौं तेरे हित की कहतु हौं; यह संजीवक बड़ो साध है, शुभ चिंतक, औ सुबुद्धि की खान है; यातें आपनौं भलो चाहौ तो याहि अधिकारी करौ. यह बात राजा नें भाई की सुनि, संजीवक कौं अधिकारी कियो, औ दमनक करटक तें अधिकार खोस लियो. तब दमनक नें करटक तें कह्यो, मित्र! अब कहा करिये? यह तौ हमारो ई कियो दोष है; जैसें चित्रलिखे कौं छूवत कंदर्पकेतु नें, औ अग्नि कौं लोम तें महाजन नें, अरु आपनी करतूत तें दूती नें, दुख पायो, तैसें हम हू आपनें किये कौ फल पावैं. पुनि करटक बोल्यो, यह कैसी कथा है? तब दमनक कहतु है;

कांचनपुर में वीर विक्रमादित्य नाम राजा हो. वाकें सेवक ऐक नाऊ कौं मारनि लै चले; तहां कंदर्पकेतु सन्यासी अरु साऊ नें वाहि देख्यो; तब सन्यासी नें राजा के चाकरनि सों कह्यो कि, या मोआ कौ कछु अपराध नाहीं. सेवकनि कह्यो, याकौ द्यौरो कहो. पुनि सन्यासी बोल्यो कि, प्रथम मेरो दोष मोहि लाग्यो, सो सुनौं. सिंहलदीप कौ अंबुकेतु राजा, ताकौ मैं पुत्र हौं, अरु कंदर्पकेतु मेरो नाम है. ऐक दिन ऐक व्यापारी मेरें नगर में आयो, अरु उत्तम पदारथ उनि मोहि आनि दिखायो. जब मैं नें वासों पूछ्यो कि, तैंने यह कहां तें पायो? तब उनि प्रसंग चलायो कि, महाराज! हम व्यापारी लोग समुद्र मे तीर वनज कौं जातु हैं, तहां करकैं दिन सागर में तें ऐक वृक्ष निकरतु है, तापै अति सुंदरि नवजोवना रतन जटित आभूषण पहरें, ऐक नाटिका बैठी बैठी आछे आछे पदारथ भेज मेज देति है; अरु महाजन व्यापारी सब लेत हैं, औ देय देय बेचत फिरत हैं. इतनी बात जब वानें मोसों कही, तब मैं वाहि साथ लै समुद्र तीर गयो,

अरु ह्यां आय, वाहि देखत प्रमान समुद्र में कूदौ. कूदत ही मोहि ऐक कंचन को मंदिर दृष्ट आयौ; तद हौं कूद उठि या मांहिं धायौ. मोकौं देखि, मानें ऐक दूती पठाई, सो चली चली मेरे ढिग आई; मैं में वासों पूछ्यौ, यह कौ है? तब वाही, यह कंदर्पकेतु विद्याधरनि कौ राजा, ताकी पुत्री है; अरु रत्नमंजरी याकौ नाम है. यह बात सुनि, मैं में आगे बढि, वाके निकट जाय, अधिक सुख पायौ. तद उनि कह्यौ, स्वामी खरच्छा तें तुम ह्यां रहौ; पर यह विद्याधरिनी विद्या कबहू मत छुदवौ. आगे गंधर्वविवाह करि, हौं वहां कितेक दिन रह्यौ. ऐक दिन वाकौं कह्यौ न मानि, ज्यौं वह विद्या मैं छुई, त्यौं उनि मोहि ऐक लात ऐसी दई कि, हौं मनुष देस में आनि पर्यौ. ता दिना तें वाही के वियोग में बन्वासी भयौ डोलतु हौं; आज तिहारी नगरी में आय, रात हौं अहीर के घर मांहिं रह्यौ, सु ह्यां देख्यौ कि, वह बीस आपनी घुसावन कौं जार के साथ बतराति हैं, क्रोध करि, थांभ सों बांधि, मतवारौ होय, सोय रह्यौ. अरु जब आधी रात बाजी, तब ऐक नायन कुटनी वाके पास आय बोली कि, सुन री! तेरे बिरह तें वह बापरौ मरतु है, वाकी दया बिचारि, हौं तोपै आई हौं, अब तू बिलंब जिन करै, मोहि या थांभ तें बांधि जा, अरु वाकौ भलौ मनाय आ. वाकी बात सुनि, उनि वैसें ही करी. तब अहीर जाग्यौ, औ वासों कहनि लाग्यौ कि, अब तू जार पास कौं न जाय? जद वह न बोली, तद उनि वाकी नाक उतार लई, अरु मद कौ मातौ पुनि सोय रह्यौ. इतेक में घुसावन में आय नायन सों पूछी कि, अरी! कुशल है? उनि कही, बीर! तू तौ कुशल तें आई, पर मैं में ह्यां आपनी

नाक गंवाई. यह सुनि, ब्राह्मनि आप बंध गई, अरु वानें नायन कौं विदा दई. जब नायन आपनें घर आई, तब फेर धोख आयो, औ जो कछु वाके मुख आयो, सो कहनि लाग्यो. वा समें अहीरी बोली, तू मेरो धनी है, मार बांध, जो चाहै सो कर; और ऐसो को है, जो मोहि कलंक लगावै? मेरो कर्म औ धर्म अष्ट लोकपाल, चांद, सूरज, धरती, आकाश, अग्नि, जल, पवन, राति, दिन, दोऊ संध्या, जानति हैं; अरु प्रानी जो कर्म करतु है, ताकी उन कौं गम्य है; अब हौं आपनें धर्म सत सों कहति हौं कि, हे सूर्य देवता! जो मैं आपनें सत धर्म तें हौं, तौ मेरी नासिका कटी न जनादयो. यह बात सुनि, अहीर वाके ढिग जाय, देखै तौ नाक ज्यों की त्यों बनी है. देखत प्रमान वह वाके पायन पै गिरयो, औ बोल्यो कि, तू मेरो अपराध क्षमा कर, मैं तोहि बिन अपराध सतायो. पुनि वह वाके कंठ लागि बोली कि, स्वामी! यामें तिहारो कछु दोष नाहीं, यह मेरे ही कर्म को फल है. आगे, नायन निज घर जाय, नाक हाथ मांहिं लिये बैठी ही, कि भोर भये वाके भर्त्तार नें पैटी मांगी. इन ऐक छुरा वाके हाथ दियो. उनि क्रोध करि याकी ओर फैंक्यो; तद यह पुकारी कि, हाय! इन निर्दई नें मेरी नाक पै छुरा मार्यो. याकी पुकार सुनि, तुम वाहि बिन सोच बिचार किये पकरि ल्याये, औ मारन कौं लिये जातु हौ; पर याको कछु अपराध नाहीं. अरु साध महाजन मेरे संग है, ताकी बात सुनौं कि, यह बारह बरस बिदेस कमाय, धन लिये, आपनें घर कौं जातु हो, सो या नगर में आय, रात वेस्या के घर रह्यो. वा सामान्या नें आपनें हार प ऐक काठ को बैताल बनाय, कस लगाय, वाके मूंड पर

ऐक रत्न जडि राख्यौ हो. यह साध लोभ कौ मार्यौ आधी रात कौं उठि, बैताल के निकट जाय. हाथ बढाय, ज्यौंहीं रत्न लयौ चाहै, त्यौंहीं वाकी कल छूटि, वाके दोऊ कर बंधे. कल छूटवे कौ शब्द पाय, वह वारविलासिनी वाके ढिग आय बोली कि, तू मलयागिर तें मुक्तानि की जौ माला लायौ है, सो मोहि दै; नातौ भोर तोहि कोटवार के ह्यां जामैं होयगौ, अरु ह्यां तें जीवत न फिरैगौ. इतनी बात यह वाकी सुनि, भय खाय, आपनौं सब धन वाहि दै, मेरे संग आय लाग्यौ है. यह बात सन्यासी तें सुनि, राजा के सेवकनि न्याय बिचार्यौ, औ वाहि छांडि, वेश्या तें साध कौ धन दिवाय, यथा योग्य दंड दै, सब कौं छांडि दियौ. तातें हौं कहतु हौं कि, ज्यौं उननि आपनें दोष तें दुख पायौ, तैसें हम हू आपनें किये कौ फल पायौ; पर भाई करटक! अब जो भई सो भई, परंतु तुम जिन सोच करौ. सुनौ! जैसें मैं नें इन तें प्रीति कराई, तैसें ही अब बैर करवायहौं. कह्यौ है, "जे चतुर हैं, ते झूठी बात कौं हू सांची करि दिखावैं;" जैसें ऐक अहीरी नें झूठ कौं सांच करि, खामी के देखतु जार कौं घर तें निकाल्यौ. करटक कही, यह कैसी कथा है? पुनि दमनक कहतु है;

द्वारिका नगरी में ऐक घोष की नारि बिभिचारिनी ही; सु कोटवार औ वाके मौंडा तें रहै. ऐक दिन राचि की बेला, कोटवार के ढोहरा तें भोग करि रही ही; ता मांहिं कोटवार आय, बार पर पुकार्यौ; तब यानें वाके ढोटा कौं कोठी में लुकाय, द्वार खोल दियौ, अरु ताहू कौ भलौ मनाय्यौ. इतेक में वाकौ धनी आयौ; तद इन कोटवार कौं यह सिखायौ कि, हौं तौ बार उघारनि जाति हौं, पर तुम

लोटिया कांधे पै धरि, सोच करि, घर में निकरी, ता पाछे दोऊ बात बनाव लीउंगी. उभि बैनें ही करी. मन अहीर में घर में आव, आपनी स्त्री सों कह्यो कि, आज कोटवार हमारे घर में दिखायवे कों गयो? अहीरी बोली, कोटवार हमारे घर में कों दिखनवो? वाको पूत वाने दिखाव, मेरे घर मांहि आय छिपो है, सु मह आपनें सींगा कों मोसों मांगतु हो, इनेक मांहि तुम जो आवो, तो तुम्हें देखि चलो गयो. यह कहि, बुलावन में कोटवार के पुत्र कों कोठी में निकारि, कह्यो कि, हू कछू भय मत करै, मैं तोहि बाहर निकारि देति हौं, जित मेरे सींग समाव, तित चलो जा. ऐसें कहि, ताहि घर में निकारि दियो. कह्यो है, (दोहा) "बुरबुधि में दुखनी बुधा बुद्धि कैसगुनी होय; काज आठ साधत हः मुख मा विधि लिख सब कोय." तातें हौं कहतु हौं, काम करै जाकी बुद्धि फुरै, सोई पंडित.

बहरि करटक बोल्यो, भाई! इन दोऊन में तो अति प्रीति है, तुम कैसें बिगार करवायवो? फेरि दमनक बोल्यो कि, मित्र! जो काज उपाय में होय, सो बल में न होय; जैसें ऐक सांप कों काछ काय में मरवायो, तैसें हौं हू ताहि मरवाउंगो. करटक कह्यो, यह कैसी कथा है? तहां दमनक कहतु है;

उत्तर दिसा में विद्याधर नाम पर्वत, तहां ऐक तरु पर काग कावली रहै, अरु वाकी जर में ऐक सांप हू. जब कागली में अंडा देवे, तब सर्प में रूख पर चढि काग खिवे, अरु मांसादि के लालच सों नित वृक्ष पै चढि, वाकी खोधा में जाय जाय बैठै. पुनि कागली गर्भ सों भई, तो उभि वासर में कही, रे स्वामी! जा तरवर कों तजि अन्यत्र जाय बसिवे

तौ भलौ; कौंकि कह्यौ है, "जाकी मारी दुष्ट, मित्र बढ, सेवक बाढ़ी, घर में नाग कौ बास, ताकौ मरन निसंदेह होय;" या सौं यहां कौ रहनौं उचित नाहीं. काग कही, हे प्रिये! अब जिन डरै, कौंकि मैं नें या नाग कौ अपराध सह्यौ, पर अब न सहौंगौ. कामली बोली, तुम याकौ कहा करौगे? काग कही, प्यारी! जो काज बुद्धि सें होय, सो बल सें न होय; जैसें एक सबा नें बुद्धि करि, महा बली सिंह कौ मार्यौ, तैसें हौं यह याहि बिन मारे न छांडि हौं. कामली बोली, वह कैसी कथा है? तहां काग कहतु है;

मंदरगिरि पै दुर्दंत नाम ऐक सिंह हौ, सो बहुत जीव जंतु मार्यौ करै. ऐक दिन बन के सब जीवनि मिल बिचार करि, आपस में कह्यौ कि, यह सिंह नित आप ऐक जंतु खातु है, औ अनेक मारतु है; तातें याके पास चलिये ऐक जंतु नित दैनौं कहि आवैं, यह बारी बांधि पछंचावैं, तौ भलौ. ऐसें वे आपस में बतराय, सिंह के पास गये, औ कर जोरि, प्रनाम करि, मर्याद सों याके सनमुख ठाढे भये. इनें देखि, गाहर बोल्यौ, तुम कहा मांगतु हौ? इननि कही, स्वामी! तुम अहार कौ सबे नित जातु हौ, अधिक मारतु हौ, अल्प खातु हौ, यातें हमारी यह प्रार्थना है कि, हम तिहारे खैबे कौं ऐक जंतु नित यहां हीं पहुंचाय जैहैं, तुम परिश्रम जिन कियौ करौ. सुनि कही, अति उत्तम. ऐसें वे याय तें बचन करि आये. आगें, जाकी बारी आवै, सो आवे यह न्याय. ऐसें नितेंप्रति दिन जाहै, ऐक बूढे सबा की बारी आई, तब उनें आपनें जी में बिचारयौ कि, मेरौ सरीर छोटौ है, याकौं खायें पेट न भरैगौ, तब हमारे और भाईबन कौं

खायगो; तातें हमारो कुल तो ऐक दोइ बार में हीं पूरो करैगो; यातें आपनें जीवतु ही याको मास करौं तो भलो. यह बिचारि, आपनें खान तें उठि, हरवै हरवै चलि, वह सिंह के पास आयो. तब वह याहि देखि, क्रोध करि बोल्यो, अरे! तू अबेरो कौं आयो? पुनि ससा नें कर जोरि, यह बचन सुनायो, स्वामी! मेरो कछु दोष नाहीं, हौं चल्यो आवतु हो तुम पाहीं, मैस मांहि दूजो सिंह मिल्यो; तिन मोसों कह्यो, रे! तू कित जातु है चल्यो? मैं कही कि, हौं आपनें स्वामी पास जातु हौं. उनि कह्यो, या बन को स्वामी तो मैं हौं, और स्वामी ग्यां कहां तें आयो? पुनि मैं कह्यो कि, आज कुराय तो तुम कौं ग्यां कबहू न देखो हो. इतनी बात के सुनत ही, वानें क्रोध करि, मोहि बैठाय राख्यो; तद मैं वासों कह्यो कि, यह सेवक को धर्म नाहीं जु; स्वामी के काज में बिलंब करै; तुम मोहि रोक्यो है, सु मेरो ठाकुर न जानैगो; बरन मेरो कह्यो झूठ मानैगो, अरु निज मन में कहैगो कि, यह घर आय खाय रह्यो, औ मोसों आय मिथ्या भाषतु है; यातें तुम मोहि जिन अटकाओ, हौं आपनें स्वामी पास होय आऊं, वह मेरी बाट जीवतु होयगो. तुम्हें यह बचन दिये जातु हौं कि, मैं स्वामी कौं कहि, उलटे पायन बगहि आवतु हौं. या बात के कहे तें उनि बचन बंध करि, मोहि बिदा कियो, तब मैं तिहारे पास आयो; स्वामी! यामें मेरो कहा दोष है? इतनी बात सुनि, सिंह बोल्यो, अरे! मेरे बन में और सिंह कहां तें आयो? तू मोहि वाहि अब हीं दिखाव, मैं वाकौं बिन मारे आज भोजन न करिहौं. ऐसें बातें करि, वे दोऊ ग्यां तें चले, आगे आगे ससा, पाछे पाछे सिंह. जब चलतु चलतु

मग में कितनी ऐक दूर पहुंचे, तब ससा ऐक कूआ के ढिग जाय ठाढो भयो. तहां सिंह बोल्यो, अरे! वह तोहि रोकनि वारो कहां है? ससा नें उतर दियो कि, स्वामी! वह तिहारे भय तें वा कूप मांहिं पैठो है. इतनी सुनि, सिंह में क्रोध करि, कूआ के मनघटा पर जाय, ज्यों जल मांहिं देख्यो, त्यों वाहि वाको ही प्रतिबिंब दृष्ट आयो. परछांई देखत प्रमान वह जल में कूद्यो, औ डूब मर्यो. तब ससा में आपनें स्थान पर आय, सब वनवासियन कों सुनायो कि, हौं सिंह कों मारि आयो; मैं में तिहारो जन्म जन्म को दुख दूर कियो. यह सुनि, सब वनवासियन वाहि आशीर्वाद दियो.

इतनी कथा कथ, काग में कागली तें कह्यो कि, हे प्रिये! तू देखि, जो काम बुद्धि तें भयो, सो बल तें कबहू न होतो. पुनि कागली बोली, स्वामी! आमें भलो होय सो उपाय करो. तब वायस व्हां तें उडि, आगे जाय देखे तो, ऐक राजपुत्र काहू सरोवर के तीर पै वस्त्र शस्त्र आभूषन राखि, ना में स्नान करतु है. ताकी मोतिन की माल यह लै उड्यो, अरु आपनें खोंदा पै आय, वह माल सांप के कंठ में डारि, भक्षन होय बैठो. ताके पाछे लागे वा राजा के सेवक हू देखतु चले आये हे. तिनमें जब काग की चोंच में हार न देख्यो, तब बिल में तें ऐक रूख पर चढ्यो; ना में देख्यो कि, खोडर में कारो नाग वह माला पहरे बैठो है. यह देखि, राजा के वा किंकर नें निज मन मांहिं विचार्यो कि, माला तो देखी. पर अब कछु बिन उपाय हाथ न ऐहै, यातें कछु यत्न कीजै. इतनों कहि, वाकें सर्प कों तीरनि तें मारि,

भाखा राजपुत्र कौं लाय दई. तातें हौं कहतु हौं, भाई! उपाय किये कहा न होय!

बहुरि करटक कही, भाई! तुम जो जानौ सो करौ. आगे, दमनक वहां तें उठि, पिंगल सिंह के पास जाय, कही कि, महाराज! यद्यपि तिहारे पास हमारो कछु काम नाहीं, पर समर्थ असमर्थ आप कें निकट हम कौं जानो उचित है. कही है कि, "जब राजा कुमारग में चलै, तब सेवक कौ धर्म है जु, राजा कौं चिताय देइ; जो न जतावे, तो सेवक कौ धर्म जाय. आगे राजा मानौं कै जिन मानौं; पर वाकौं कहनौं जोग है." महाराज! राजा भोग करिवे कौं है, और सेवक सेवा करनि कौं. पुनि कही है, "जो राजा कौ राज बिगरै, तो मंत्री कौ दोष ठहरै, राजा कौं दोष कछू न चाहै," यातें प्रधान कौं चाहिये, आपनें स्वामी कौ राज कष्ट पाय, धन तन देइ; पर राज न जानि देइ, अरु जो प्रधान राज काज बिगरत देखि, राजा सों न कहै, सो कैसो सेवक? और जो राजा समर्थ असमर्थ किंकर की बात न सुनै, सो कैसो ठाकुर? पिंगल बोल्यो, तुम कहा कहो चाहतु हौ, सो कहो. दमनक कहनि लाग्यो, पृथ्वीनाथ! यह संजीवक तिहारी निंदा करतु हो, अरु कहतु हौं कि, अब यह राजा प्रताप हीन भयो, प्रजा की रक्षा करी चाहिये. यों जानि, महाराज! मोहि ऐसो समझ पर्यो कि, अब यह आप राज कियो चाहतु है. यह बात सुनि, राजा चुप ह्वै रह्यो. पुनि दमनक बोल्यो, धर्मावतार! तुम ऐसो प्रबल मंत्री कियो कि, जो राजकाज का मंत्री तुम तें न पूंछि, ऐंकी ऐंकी आप ही राज करनि लाग्यो, सो भलो नाहीं. जैसें चानक मंत्री नें राजा नंदक कौं मार्यो, कहूं

जैसें न होय। राजा पूछी, यह कैसी कथा है? तहां दृष्टमत्र कहत है;

काहू देस में नंदन नाम राजा, ताको चाणक्य नाम मंत्री. सु राजा या मंत्री कौं आपनें राजकाज कौ भार दै, आप निश्चिंत होय, आनंद करनि लाग्यो, अर मंत्री राज. ऐक दिन वह राजा प्रभात कौं सार ले अहेर कौं गयो, वन में जाय, ऐक मृग देख्यो; ताके पाछे विनजि घोरा दपटे, तब और लोग न झपटे; पर दूर के जंगल की ज्ञान काहू कौ अब न पड्यो. पुनि सब लोग चटपटाय पाछे रहे, यौ वे हीजा आगै गये. अब हिरन अथोरि, उन के हाथ तें बन में पैठ्यो, तब राजा ह आस पास कौ आयो, घोरा तें उतरि, ऐक वृक्ष तरै बैठ्यो. निदान वह महीपति आपनौं हव प्रधान कौं बंधाय, तृषा कौ मार्यो, यहां तें जल खोजतो भयो. किनेक दूर जाय देख्यो तो ऐक वापी निर्मल जल भरी याहि हरू परी. वह जीवतु प्रधान प्रथम ह्वै, वानें नीर पीवन उतर्यो; जल पी फिरनि लाग्यो, तौ वानें ऐक पाथर में वह लिख्यो मांच्यो कि, राजा कौ मंत्री तेज अर बल में बलवान होय, तो दै मैं तें ऐक कौं खाली त्यागै. वह बांच, वह पाहन पै खादो झपेट, मंत्री के ढिग आयो. पुनि मंत्री ह जल पीवन वा वावरी में गयो, तौ उनि देख्यो, अर कह्यो कि, यह तौ हीजा अब ही पाहन पै मार खोदर गयो है; बहुरि उनि पाथर धोय, लिख्यो पढि, निज मन में कह्यो कि, राजा नें तो यौं दुराव कियो. ऐसें समझि; पानी पी, मंत्री राजा के पास आयो; राजा सोयो, तब मंत्री नें हत्यो.

ताते महाराज! हौं तुम सौं कहतु हौं कि, जो बलवान प्रधान होय, तो आप ही कौं राजा करि जानें; अर जो

राजा ऐक ही मंत्री कौं अधिकार सौंपै, तौ वह गर्व करै; औ गर्व तें अज्ञान होय, अज्ञान भये वाहि धर्म अधर्म कौ विचार न रहै. कह्यौ है, "विष मिल्यौ अन्न, दिवौ दान, अरु दुष्ट मंत्री, इन कौं निकट कबहू न राखिबै." महाराज! जो सेवक कौ धर्म होय, सो मैं तुम सों कहि सुनायौ, आगै आप की इच्छा मांहिं आवै सो करौ. संसार में ऐसे लोग थोरे हैं, जिन कौं राज औ धन की लालसा नाहिं; तातें मैं तुम सों अब स्पष्ट कहि देतु हौं कि, वह तिहारौ राज लियौ चाहतु है, आगै तुम जानौ. सिंह बोल्यौ, संजीवक मेरौ बड़ौ प्रिय है, वह मेरौ बुरौ कबहू न चीतैगौ; क्यौंकि, जो प्रिय है, सो अप्रिय न होय. कह्यौ है, "अग्नि घर जरावै, तौहू अग्नि बिन न मरै." बहुरि दमनक कही कि, महाराज! कोऊ कितेक करौ, पर दुरजन औ गंवार आपनौ जातीय सुभाव न छांडै; ज्यौं कूकरा की पूंछ तेल मलत सेंकिये, तऊ टेढी की टेढी रहै; त्यौं नीच कौ सनमान करिये, तौहू भलौ न मानैं; अरु नीम कौं मधु दे सींचिये, पर वाकौ फल मीठौ न होय. कह्यौ है, "प्रीतम सो, जो आपदा निवारै; कर्म वह, जातें अपयश न होय; स्त्री अरु सेवक सो, जो आज्ञाकारी रहै; बुद्धिवान वह, जो गर्व न करै; स्वामी सो, जो तृष्णा न राखै; पुरुष वह, जो जितेंद्री होय; अरु महाराज! मंत्री वह, जो हितकारी होय." संजीवक तिहारौ सुखदेवा नाहिं, यह दुख कौ मूल है, याकौ शीघ्र ही नास करौ. कह्यौ है, "जो राजा धनांध कामांध होय, आपनौं भलौ बुरौ न जानैं, सो इच्छा मातौ रहै; अरु जब अहंकार तें दुख पावै, तब मंत्री कौं दोष लगावै." या बात के सुनें तें, सिंह नें जी में विचारौ कि, बिन समझे बूझे काहू कौं दंड देनौं उचित नाहीं. पुनि दमनक

कही, पृथ्वीनाथ! संजीवक आप ही तिहारे मारिवे के उद्यम में लाग्यो है, तुम वाहि बुलावो, अरु भेद दुरावो. कह्यो है, "मंत्र औ बीज गुप्त राखिये; जो गुप्त न राखिये, तो वाको फल न होय. अरु दुष्ट को यह सुभाव है कि, पहिले मीठी मीठी बातें कहि, मन धन हाथ कर लेइ, पाछे दुष्टता करि, वाको सर्वसु खोय देइ; जैसें अकुल में दुर्योधन कों कपट सिखाय, महाभारत करवायो. पिंगल कही, वह हमारो कहा करिहै? बहुरि दमनक बोल्यो कि, महाराज! तुम यह जिन जानों कि, हम बलवान हैं. कह्यो है, "समय पाय छोटो हू बडो काज करै;" जैसें ऐक टिटोर में समुद्र कों महा व्याकुल कियो. राजा पूछी, यह कैसी कथा है? तब दमनक कहवे लाग्यो;

समुद्र के तीर ऐक टिटोर औ टिटीहरी रहैं. जब टिटीहरी गर्भ सों भई, तब वामें आपनें स्वामी सों कह्यो कि, रे स्वामी! मोहि अंडा राखिवे कों ठौर बताव. उनि कही, यह तो मोकी ठौर है. पुनि टिटीहरी में कह्यो, यहां तो समुद्र की तुंग तरंग आवति है, वह हमें दुख देहै. टिटोर कही, जो यह हम कों दुख देहै, तो हम हूं वाको उपाय करिहैं. बहुरि टिटीहरी हंसिके बोली, कहां तुम, औ कहां समुद्र? या सों प्रथम ही विचार करि काज करो, तो पाछे दुख न होय. पुनि टिटोर कह्यो, तुम निचिंताई सों अंडा धरो, फेर हम समझ लैहैं. यह बात सुनि, वामें तहां अंडा दये; अरु समुद्र हू वाकी सामर्थ देखिवे के लये लहरि सों अंडा बहाय ले गयो. तद टिटीहरी बोली, रे स्वामी! अंडा तो सागर बहाय ले गयो, अब कहा करैगो सो कर. टिटोर कही, हे प्रिये! तू काहु चिंता जिन करै, हौं अबही ले आवतु हौं. इतनों

कहि, वह सब पंछियन कौं साथ लै, गरुड के पास गयो; अर गरुड नें श्री नारायण सों जाय कह्यो. श्री नारायण नूं नें समुद्र कौं दंड दै, आज्ञाकरी; विन अंडा पाछे दये; तब वह सब पक्षी समेत अंडा लै आपनें घर आयो. तातें, महाराज! हौं कहतु हौं कि, विन काज परे काज की सामर्थता जागी न जाय. बहुरि राजा कही, हम कैसें जानें कि वह हम तें करिबे कौं जानतु है? दमनक बोल्यो, महाराज! वाकौं तो सींग ही को बल है, जब सींग साबतें करै, तब जानियौं, अर जो तुम तें हो सकै सो करियो.

इतनी बात कहि, वहां तें उठि, दमनक संजीवक बलध के निकट गयो, श्री मुख सुखाय वाके सनमुख ठाढो भयो. तब उनि यातें कुशल पूछी. इन उत्तर दियो, मित्र! सेवक कौं काहे की कुशल? क्योंकि, वाको तो मन राति दिन चिंता ही में रहतु है, अर विशेष राजा को सेवक तो सदा सर्वदा भयमान रहतु है. कह्यो है, "इन पाय काहें गर्व न कियो? संसार में आय काहें आपदा न जुगती? काको मन स्त्री के वश न भयो? काल के हाथ को न पर्यो? राजा काको मित्र भयो? वेश्या काकी स्त्री भई? वैरी के फंद को न पर्यो?" जब दमनक में ऐसी ऐसी उदासी भरी बातें कहीं, तब संजीवक बोल्यो कि, मित्र! तुम पर ऐसी कहा गाढ परी, जो ऐसे उदास वचन कहतु हो? तुम मो सों तो कहो. दमनक कही, हितू! मैं बडो अभागो हौं, जैसें कोऊ समुद्र मांझि बूडतु सांप कौं हाथ न पकरि सकै, न छांडि सकै; तैसें हौं हू. ऐक बात है, ताहि न कहि सकौं, न कहे बिन रह सकौं; क्योंकि, कहौं तो राजा रिसाय, श्री न कहौं तो मेरो धर्म जाय; तातें दुखसमुद्र में पर्यो हौं. संजीवक बोल्यो, मित्र!

जो तिहारे मन में है सो कहो. दमनक कही, भाई! हौं कहतु हौं, यह बात अप्रगट राखियो, अरु जो तिहारी बुद्धि में आवै सो कीजो; कौंकि, तुम म्हां हमारी बांह तें आये, वा तें अपजस सों डरि, आपनों परलोक संवारवे कौं तुम्हें सावधान किये देतु हौं, तुम चौकस रहियो. राजा की आज तुम पर कुदृष्ट है, उनमें मो सों कह्यो कि, आज संजीवक कौं मारि, सकल परिवार कौं तृप्ति करिहौं. यह बात सुनि, संजीवक नें अति दुख पायो. तद दमनक सो कह्यो कि, प्रीतम! तुम दुख जिन करो, अब जो बुद्धि में आवे सो करो. बहुरि संजीवक कही कि, यह काहू नें सांच कह्यो है जो, "कपट के धन हाथ, मेह जबर में बरसै, सुंदर स्त्री सीध सों रति करै, राजा कुपाच कौं बढावै." इतनी कहि, उनि निज मन में विचारी कि, यह आप सों कहतु है, कै राजा में ऐसो विचारो है? यौं सोचि, पुनि मन ही मन कहनि लाग्यो कि, उत्तम के संग मलीन मलीनता करि सोभा न पावै, यौं काजर तें नेत्र सोभा पावैं, पर काजर सोभा न पावै. तातें याकी कहा सामर्थ्य है जो यह आप तें करै? उन हीं कही होयगी, मैं तौ सावधानी सों सेवा करतु हौं. राजा में ऐसा मेरो कहा अपराध देख्यो जो मन कैसो कियो? पुनि बूझ्यो कि, या ह्रद में अपरज नांहि, कौंकि, जैसें कोऊ देवता की अति सेवा करै, अरु वह वाहि थोरे ही दोष में भ्रष्ट करि डारै; तैसें राजा ह्रद नेक दोष में मारै; अब याको कछु उपाय नाहिं. ऐसें संजीवक नें आपनें मन माहिं समझि बूझि, दमनक तें कही, भाई! मैं में राजा की ऐसी कहा काम बिगारी है, जो उनि ऐसे बिचारी! अब हौं याकी सेवा न करौंगो; कौंकि, राज सेवा करनी महा कठिन है; जो मोहि

काम करै, बुरौ मानें, काकी सेवा करनी जोग नाहीं; अह राजा की प्रीति और सौं नाहीं रहति. कह्यौ है, "असाध कौ उपकार करनौं, अरु मूर्ख कौं उपदेस दैनौं, वृथा है." पुनि ज्यौं चंदन में सर्प, पानी में सिवार, आप तें आप आवति है, त्यौं सुख में दुख इ आय घटतु है. पुनि इमनक बोल्यौ, मित्र! दुष्ट जन प्रथम दूर तें आवतु देखि, जो आदर करि बैठाय, हित सौं प्रिय वचन कहै, सो न जानिये कि वह पाछै कहा दुष्टता करै? कहतु हैं, "समुद्र तरिवे कौं जहाज, अंधकार कौं दीपक, गरमी कौं बीजना, माते गज कौं अंकुस, ऐसें विधाता में सब के उपाय बनाये हैं; पर दुष्ट जन के मन कौ कछु यत्न न करि सक्यौ." बहुरि संजीवक कह्यौ, भाई! हौं घास पानी कौ खानिहारै होय, ताके सब सौं रहौं? कह्यौ है, "राजा के चित में मित्र भेद पह्यौ मिटतु नाहीं; ज्यौं स्फटिक कौ पाच टूटि फेरि न जुरै, त्यौं नरपति कौ मन इ उचटि फेरि न मिलै." कहतु हैं, "राजा कौ क्रोध वज्र तुल्य है; पर ऐक समय वज्र सौं बचै, पै भूपाल के क्रोध सौं कबहू न बचै;" तातें अब दीन होय बार खानौं जीवौ नाहीं; बरन, संग्राम करि मरनौं भलौ; क्योंकि, इहा तन में दोय बात, जीले तौ सुख भोगवै, और मरै तौ मुक्ति पावै. यासों या समय जुद्ध करनौं ही उचित है. फेरि इमनक बोल्यौ, अहो मित्र! तुम तें हौं कहै देतु हौं कि, जब वह काम पूंछ उठाय मुख पसारै, ता बेर तुम तें जो पराक्रम बनि आवै सो कीजो, यामें काहू भांति कसर मित्र कीजो. कह्यौ है, "बलवंत क्रोध आपनौं बल न प्रकासें, और निरादर पावै; जैसें तेज लोह अग्नि कौं अब कोज उठावै, तैसें निबल मनुष भी अब बतावें." इतनौं कहि, इमनक

बोल्यौ, भाई! अब ही यह बात मन में राखौ; काम परै बूझी जायगी. ऐसें कहि, दमनक संजीवक सों बिदा होय, करटक के ढिग गयौ. तब उनि पूछ्यौ, हितू! तू कहा करि आयौ? दमन कही, मैं दोउअन मांहिं बैर कराय आयौ. पुनि करटक कही, यामें संदेह नाहीं. कह्यौ है, "दुष्ट जन कहा न करि सकै? तिमा तें को न पंडित कहावै? पुनि कैसौ हू बुद्धिवान होय, पर असाध की संगति तें बिगरै ही बिगरै;" क्योंकि, दुष्ट के संग तें जो न होय सो थोरौ; जैसें अग्नि, जहां रहै तहां हूं जरावै. ऐसें दोऊ बतराये. पुनि दमनक पिंगल के निकट गयौ, कर जोर सनमुख ठाढौ भयौ, अरु बोल्यौ, महाराज! सावधान होय बैठौ, पशु युद्ध करवे कौं आवतु है. ज्यौं हीं सिंह संभल बैठ्यौ, त्यौं हीं बिजार क्रोध भर्यौ वा बन में पैठ्यौ. पुनि जिम वाहि देखि सिंह उठि धायौ, तिमि वा नें हू पञ्जेकै सींग चलायौ, अरु दोऊ पशु यथा शक्ति लरे; निदान सिंह के हाथ तें बरध मार्यौ पर्यौ. तब सिंह पछतानि लाग्यौ कि, हाय! मैं यह कहा कियौ जो राज श्री धन कौ लोभ करि, बापरे तृन अन खानिवारे बिजार कौं मारि, महा पाप सिर लियौ! या संसार में धन के भागी अधिक हैं; पर पाप बंटावनिहारौ कोऊ नाहिं. कह्यौ है, "सिंह राजा सो, जो गजराज कौं पछारै." पुनि दमनक बोल्यौ, महाराज! यह कहां की रीति है जु तुम प्रभु कौं मारि पछतातु हौ? राजधर्म में कह्यौ है कि, "पिता, भ्राता, पुत्र, मित्र, जो राज लेन की इच्छा करै, ताहि नरपति बिन मारै न रहै; जो बडौ धर्मी होय, तौहू दया न करै." पुनि, ज्यौं सन्यासी कौं क्षिमा भूषन है, त्यौं हीं राजा कौं दूषन. बहुरि नीतिशास्त्र में कह्यौ है, "दयावंत राजा,

मूर्ख मंत्री ब्राह्मण, कामातुर स्त्री, सेवक प्रभु, दुष्ट मित्र, अन्यायधारण अधिकारी, औ गुन नायक आदि जितनें हैं, तिनैं तत्काल त्यागिये." पुनि ऐसें ह कह्यो है कि, "जैसी देस्या, तैसो राजा; कहूं लोभी, कहूं दातार; कहूं सांचो, कहूं झूठो; कहूं कठिन, कहूं कोमल; कहूं हिंसक, कहूं दयालु; सद सदा अधिक धन जस चाहै." या भांति दमनक नें राजा सिंह कौं समझाय बुझाय, डाढ़ो सोक मिटाय, राजपाट पर बैठायो; अरु पुनि आप मंत्री हो, सब राजकाज करन लाग्यो. इतनी कथा कहि, विष्णुशर्मा नें राजपुत्रनि कौं आसीस दई कि, महाराजकुमार! तिहारे प्रभुनि कौं मित्र भेद होय, अरु मित्रनि कौ कल्यान। इति सुहृद्भेदो नाम द्वितीय कथा संपूर्णः संपूर्णः.

अथ विग्रहः.

विष्णुशर्मा अब और कथा कौ आरंभ करनि लाग्यौ, तब राजपुत्रनि कही, अहो गुरुदेव! अब विग्रह सुनिवे की लालसा हम कौं है, सो कृपा करि सुनाइये. विष्णुशर्मा बोल्यौ, महाराजकुमार! तुम शांत सुभाव होय सुनौ, हौं विग्रह की कथा कहतु हौं. ऐकै हंस औ मोर बल बुद्धि राज प्रताप में समान हैं; पर ऐक काग नें विश्वासघात करि हंस कौं हरायौ, अरु मोर कौं जितायौ. राजकुमारनि कही, वह कैसी कथा है? तब विष्णुशर्मा कहनि लाग्यौ;

कर्पूरद्वीप कौ मांहि पद्मकेलि नाम ऐक सरोवर है. ताहू मैं तहां के सब पंछियन मिलि, ऐक हिरन्यगर्भ नाम हंस कौं राजा कियौ; सो व्हां राज करनि लाग्यौ. कह्यौ है, "जहां राजा न होय, तहां की प्रजा सुख सौं न रहै; जैसें समुद्र में बिन केवट नाव न चलै, तैसें संसार में हू राजा बिन धर्म न निभै." राजा प्रजा की नित नित अधिकाई चाहै, निज पुत्र की समान जानैं; अरु जो राजा प्रजा कौं पालन करि न बढावै, सो जगत में प्रतिष्ठा हू न पावै. आगै, ऐक समय वह राजा हंस रत्नसिंहासन पर सभा मांहि बैठौ हो, तहां कौन हू द्वीप तें ऐक दीरघमुख नाम बगुला आयौ, औ दंडवत करि, हाथ जोरि, राजा हंस के सनमुख ठाढौ

भया. तब राजा नें वाहि आदर करि बैठाय, पूछ्यौ कि, अहो दीरघमुख! जा देस तें तुम पधारे, तहां के समाचार कहो. उनि कही, महाराज! याही बात के लये तौ हौं तिहारे ढिग आयौ हौं कि, जंबूद्वीप में बिंध्याचल नाम ऐक बड़ो परबत है, तहां के सब पंछियन कौ राजा मयूर है, सो वा ठाम बसतु है. तिन मोहि बचननि में चतुर देखि पूछ्यौ कि, तू कहां तें आयौ, औ को है? तब मैं कही कि, कर्पूरद्वीप तें तौ मैं आयौ, अरु व्हां के महाराज हिरन्य गर्भ कौ सेवक हौं, तिहारौ देस देखिवे कौं व्हां आयौ हौं. तब उनि पछियन कही कि, तिहारे हमारे देस औ राजानि में कौन भलौ है? पुनि मैं कही कि, तुम कहा कहतु हौ? अरे! कर्पूरद्वीप तौ स्वर्ग समान, अरु आज राजा हंस दूसरौ इंद्र है; या बुरे देस में तुम कौं परे हौ? चलौ, हमारे देस में बसौ. जब यह बात मैं कही, तद उनि पखेरुअन मो ऊ अति क्रोध कियौ. कह्यौ है कि, "जैसें सर्प कौं पय प्याये अधिक बिष बढै, तैसें पंडित कौ उपदेस मूरख के मन में न आवे; बरन वह उलटौ वाही कौं सतावै;" जौं बानर कौं उपदेस दै, बिचारे पछियन आपनैं कियौ आप पायौ. राजा पूछी, यह कैसी कथा है? तद बक कहनि लाग्यौ;

नरमदा नदी के तीर ऐक पर्बत, ताके तरै ऐक सेमल कौ रूख, वापै पंछी आपनें घौंसुआ बनाय, सुख सों रह्यौ करैं. ऐक बेर बरषाकाल में भादौं की अंधियारी, राचि समय दामिनी दमकि दमकि, घटा घिर घिर आईं, अरु बड़ी बड़ी बूंदनि घन गरज गरज, जल मूसलधार लाग्यौ बरषन. ताही काल ऐक बानर वा पहार तें भीजतु उतरि, सीत कौ मार्यौ थरथर कांपतु, ताही रूख तरै आय बैठ्यौ.

वाहि दुखित देखि, दया करि, पक्षियन कह्यो, अरे बनचर! तू देखि तो सही कि, इनमें आपनी चोंच सों तृन आनि घर कियो है; तोहि तो भगवान नें हाथ पाय दये हैं, तें नें कौं न घर बनायो? जो तें घर बनायो होतो, तो या समें सुख सों पाय पसारे सोतो. यह सुनि वा मरकट नें जान्यो कि, ये पक्षी या समें निज घर में सुख सों बैठे हैं, ताही तें मो पंडित कौं मूरख जानि उपदेस देतु हैं. यह समझ, वह हंसकै बोल्यो, अरे! बरषा बीतें तुम मेरो कियो देखियो. इतनों कहि, वह क्रोध करि, मट्ट मारि बैठ्यो. इतेक मांहिं भोर भयो, अरु मेह उघरि गयो. जब श्री सूरज देव नें प्रकाश कियो, तब वह वा रूख पर चढि, सब पंछियन के अंडा भूमि में पटकि, घोंसुआ खसोटकै बोल्यो, अरे मूढ पछियो! जे पंडित हैं, ते कहा घर करवे कौं असमर्थ हैं? तिन कौं तो सुभाव ही है कि, घर नाहीं करतु. यह वाकी बात सुनि, बापरे पखेरू मौन साध रहे. तातें हौं कहतु हौं कि, मूरख कौं उपदेस कबहू न दीजै. पुनि राजा बोल्यो, आगे कैसी भई, सो कहो. बगुला बहुरि कहनि लाग्यो, महाराज! पुनि उनि पछियन सो सों रिसायकै कह्यो, अरे! तेरे हंस कौं राजा किन कियो? मैं कह्यो, रे! तेरे मयर कौं किन राज दियो? या बात के सुनें तें वे मोहि मारन कों उठे, तद मैं हू आपनों पराक्रम दिखायो. कह्यो है, "मनुष कौं और समें छिमा बूझियै; पर जब शत्रु लरवे कौं आवै, तब पराक्रम ही करनों उचित है; जैसें नारी कौं लाज आभरन है, तैसें रति समें ढिठाई हू आभूषन है" राजा हंस कही, जो आपनों औसर न देखि क्रोध करै, सो अति दुख पावै; अरु ऐसें ही, जो आपनी सामर्थ न जानि चेष्टा

करै, सोऊ; ज्यों आपनी सामर्थ न जानै, बाघ कौ चाम ओढि, ऐक गदहा माह्यौ गयौ. बक बोल्यौ, यह कैसी कथा है? तहाँ राजा हंस कहतु है;

हस्तिनापुर में ऐक विलास नाम धोबी रहै; ताके घर ऐक गदहा. वा पै बोझ लादतु लादतु जद वाकी पीठ पर घांही परी, तब वह धुबिया गदहा कौं रात्रि के समय बाघ कौ चाम उढाय, काहू जव के खेते में छोडि आयौ. वा खेत कौ रखवारौ ताहि देखत ही परायौ. वाही भांति, वह नित नित वाकौ खेत खाय खाय आवै. तद वा रखवारे नें गाहर मारवे कौ यत्न कियौ, औ वाही खेत की पगार के निकट भूरी कामरी ओढि, धनुष चढाय, आप छे काहू मूड तरै दबकि रह्यौ. दै पहर रात के समें अंधेरे में गदहा आयौ, औ याकी भूरी कामरियां कौं देखि, गदही जानि, वह कामांध होय रैंकतु धायौ. पुनि रखवारे नें जान्यौ कि, यह तौ गदहा है, पर बाघ कौ चाम ओढि आयौ है. ऐसें कहि, क्रोध करि, रखवारे नें वाहि लौठियन लौठियन मारि गिरायौ, वाकौ प्राण गयौ. तातें हौं कहतु हौं कि, आपनौं बल बिचारि काज कीजै.

इतनी कथा कहि, पुनि राजा हंस बोल्यौ, आगै जो भई सो कहौ. बगुला कहनि लाग्यौ, महाराज! उन पंछियन मोसों कही, अरे दुष्ट बगुला! तू हमारे देस में आय, हमारे ईं राजा की निंदा करतु है! इतनौं कहि, उननि मोहि चौंचनि सों माह्यौ, अरु कह्यौ, अरे! जैसें कुआ का दादुर कुआ ही कौं बराहै, तैसें तू है, अरु तेरौ राजा. यह सुदेस कुदाय तू हम कौं वा कुदेस में जैवे कौं कहतु है! रे मूर्ख! कह्यौ है, "चेष्टा करि बडौ दुख सेइयै, जौ फल न मिलै, तौ

बीरी छांड बैठवे कौं तौ ह्वै सिद्धै;" अरु ओहे की संमति तें प्रभुता जाय; जैसें कसाख के हाथ में दूध कौ बासन होय, तौ ह्वै जो देखै, सो कहै, जा में मदिरा होगी. अरु बड़े के नाम तें ह्वै बड़ाई पावै; जैसें चंद्रमा के नाम तें सबा सुखी भये. यह सुनि, मैं उचि तें पूछी, यह कैसी कथा है? पुनि तिन मैं तें ऐक मछी कहवि लाग्यौ;

ऐक समें बरषाकाल बिन बरसे, सब सें पानी की अति खैंच भई; तब झां के हाथिनन आपनें यूथपति सों कही, स्वामी! यहां बिन पानी प्यास के सारे जरतु हैं. यह सुनि, गजराज नें ऐक सरोवर पहार में बतायौ. वाके तीर सबा बटत रहैं; जब जब वहां जल पीवन कौं चलै, इन के आवत तरै बटत से सबा कांपे मरे. तब ऐक बिज्रोसुख नाम सबा हो; वानें बिचारयौ कि, जो या भांति से हाथी दूत आवहैं, तौ ऐक ह्वै सबाती हमारौ यहां जीवतु न रहैगो. यह बात सुनि, ऐक बिज्रम नाम अति बृद्ध सबा बोल्यौ, अरो! तुम अब अय बिन करौ, मैं या उपाय कौ जतन करिहौं. इतनी कहि, वह वहां तें उठि चल्यौ, और मेख में चलत चलत वानें मन मांहिं कह्यौ कि, हाथियन के निकट कैसें जैहौं? वे तौ छूवत मारैं. इतनौं सोच, वह ऐक पर्वत पै चढि दिखाई दियौ; अरु इन जद उन सें रामराम करी, तद बिन में तें ऐक गज गर्व करि बोल्यौ, अरे! तू को है? इन कही, दैं! हौं चंद्रदूत हौं, जो तिहारे पास आयौ हौं. पुनि उनहि कही, आपनें आवन कौ प्रयोजन कहौ. इन कही, मोहि चंद्र महाराज नें यह कहि तुम पास पठायौ है कि, आज तुमनि आय हमारे या चंद्रसागर में पानी पियौ, सो तौ भली करी, पर तिहारे पायन तरै हमारे सबा सांपे मये; बातें

हम तुम तें अति अप्रसन्न भये; कौंकि, हमारी ओर तें ससा ही या सरोवर के रखवारे हैं, मैं इन की रक्षा करतु हां, याही तें मेरौ नाम लोग ससी कहत हैं. यह सुनि, गजराज बोल्यौ कि, भाई! तू यह सांच कहतु है. पुनि ससा नें कह्यौ कि, यह धर्म दूत कौ न होय, जो मिथ्या भाषै. कह्यौ है, "दूत कौं कोऊ मारिवे कौं ह्व लै आय, पर वह झूठ न बोलै." ऐसें सुनि, गजराज भयमान होय, बोल्यौ कि, आज हम इत अनजानें आय कढे, पर बहुरि न आयहैं. पुनि ससा नें गजपति सों कह्यौ कि, तुम निज मन में कछु जिन डरौ, हौं तिहारौ अपराध चंद्रदेव सों कहि छमा कराय हौं. ऐसें वाकौ संबोधन करि, रात्रि भये गजराज कौं सर के तीर लै जाय, चंद्रमा कौ प्रतिबिंब दिखाय, हाथ जुरवाय, आप पुकारिकै बोल्यौ, हे चंद्र महाराज! ये बापरे गज तिहारे सरोवर पै अनजानें आय कढे हे, इनकौ जो अपराध भयौ है, सो आप छिमा कीजै; पुनि इन तें ऐसौ कबहू न होयगौ. इतनौं कहि, बागें हाथियन कौं बिदा कियौ; औ विनवि ह्व जल मांहि प्रतिबिंब देखि सत्य जान्यौ कि, चंद्रमा सरोवर में आयौ है. तातें हौं कहतु हौं कि, बडे के नाम ही तें कार्य सिद्ध होय.

यह सुनि, महाराज! पुनि मैं कही, अरे! हमारौ राजा बडौ प्रतापी है. यह सुनि, वे पक्षी मोहि पकरि, राजा मयूर के निकट लै गये; मो सों दंडवत करवाय, हाथ जुरवाय, वाके समसुख ठाढौ राखि, बिन पक्षियन राजा सों कह्यौ, महाराज! यह दुष्ट बगुला हमारे ही नगर में रहि, हमारी ही निंदा करतु है. राजा कही, अरे! यह को है, औ कहां तें आयौ है? पक्षियन उतर दियौ, महाराज!

यह कहत है कि, हौं कर्पूरद्वीप के हिरन्यगर्भ राजा कौ लोक हौं, मेरो नाम देव हौं आयो हौं. यह सुनि, वा राजा कौ मंत्री सीघ्र बोल्यो कि, तेरे राजा कौ मंत्री को है? मैं कही, सर्वज्ञ नाम कहुत्या; सोई सब राज काज में प्रधान है. सीघ्र बोल्यो कि, कहो है, "जो सदेवी, कुलवंत, युद्ध विद्या में निपुण, धर्मात्मा, आज्ञाकारी, प्रवीण, प्रसिद्ध पंडित, गुणग्राहक, प्रजा प्रतिपालक, उपकारी, हितकारी, शेरय, ताकौं राजा मंत्री करै." पुनि ऐक मुखा बोल्यो, पृथ्वीनाथ! या जंबूद्वीप के ही मांहिं कर्पूरद्वीप है, अरु ह्यां आपकौ ई राज है. या बात कौं सुनि, वह राजा बोल्यो कि, तू सांच कहत है, जो हमारे ही देस सें है. कह्यो है, "राजा, बालक, ज्ञानमत्त, धनवंत, औ स्त्री. ये पांचौं अनमावती वस्तु केन कौं न हठ करैं." पुनि मैं कही कि, जो बातन ही प्रभुवाई पाइये, तो हौं न कहत हौं कि, हमारो राजा हिरन्यगर्भ ही पन जंबूद्वीप को राजा है. बहुरि वीर कही, यह कैसें जानिये? पुनि मैं कह्यो, युद्ध किये ही जानिये. फेरि वह राजा बोल्यो कि, तू आपनें राजा कौं आय कह, हम आवत हैं. तब मैं कही, आपनौं बलीठ पठावो. राजा नें कह्यो, कौंन कौं पठाइये? मैं कही कि, ऐसें कह्यो है, "जो स्वामिभक्त, गुणग्राह, पवित्र, चतुर, ढीठ, विभव रहित, अन्यायुक्त, धीर, गंभीर, सदेवी, परत्थे मन की जानिनिहारो, ताकौ जवर न फुरै; ऐसो शेरय, सो दूत के जोग है," ताही कौं भेजिये. राजा बोल्यो, ऐसे तो हमारे ह्यां बहुत हैं; पर कह्यो है, "ब्राह्मन कौं पठाइये; कौंकि, विप्र सदाचारा औ अहंकार रहित होइ है." पुनि मैं कही कि, महाराज! प्राचीन लोकनि के मुख सुन्यो हैं कि, जिन ब्राह्मन कौंज ताहीं

तजतु; जैसें कालकूट विष में महादेव कौ कंठ पायौ, पर स्यामता न त्यागी. पुनि मैं कह्यौ कि, महाराज! सुआ कौं पठाइयै. तब राजा मयूर में सुग्गा तें कह्यौ कि, कीर! तुम या बगुला के संग जाओ, अरु राजा हंस तें हमारौ संदेसो कहि आओ. सुक बोल्यौ, महाराज की आज्ञा मूड पै; पर या दुष्ट बक की गेल हौं न जैहौं. कह्यौ है, "दुष्ट जन कैं साथ रहे, साध जन कूं दुख पावै; जैसें रावन के समीप रहि बापरौ समुद्र बांध्यौ गयौ." पुनि ज्यौं काग के संग रह, हंस औ बटेर मारी गई. राजा पूछ्यौ, यह कैसी कथा है? तद सुक कहनि लाग्यौ;

महाराज! उज्जैन नगरी की गैल में ऐक बडौ पीपल कौ रूख, ता पर ऐक काग अरु हंस रहै. ग्रीषम ऋतु की दुपहरी मांहिं, ऐक बटोही घाम कौ माऱ्यौ, वाकी छांह तरै आय, श्रम खोल, सीरक पाय, सोयौ. जब घरी चार पाछै वाके मुख पर घाम आई, तब हंस दया करि वाके मुख पर छांह करि बैठौ; अरु काग दुष्टता करि, वाके मुंह पै बीट करि भाग्यौ. त्यौंही बटोही जाग्यौ, औ वानें हंस कौं तीर तें माऱ्यौ. आगै ऐक समें, सब पक्षी मिल, गरुड की यात्रा कौं चले; तामें ऐक बटेर हू काग के साथ चली. तहां गैल में ऐक अहीर दहेंडी लिये जातु हो; सो दहेंडी काग जुठाय भाग्यौ, अरु बापरी बटेर व्हां मारी गई. तातें हौं कहतु हौं, महाराज! दुष्ट कौ संग काहू भांति करनौं उचित नाहीं. पुनि मैं कही, भाई सुआ! तुम ऐसी बात क्यौं कहतु हौ? हमारै तौ जैसे राजा तैसे तुम. महाराज! इतनौं सुनि, वह प्रसन्न भयौ. कह्यौ है, "मूर्ख कौ अपराध करि स्तुति कीजै, तौ वह प्रसन्न होय; जैसें ऐक

खाती खुति कियै आर सहित स्त्री की खाट माथे लै गयौ. यह सुनि, राजा हंस कही, यह कैसी कथा है? पुनि वगुला कहनि लाग्यौ;

श्रीनगर में मंदबुद्धि नाम ऐक खाती रहै; सो आपनी नारी कौं विभिचारिनी जानैं; पर वाहि जार समेत कबहू न पावै. ऐक दिन वानें वाके जार कौं पकरवे के लियै, वासों कह्यौ कि, आज हौं गांव जातु हौं, सु तीन चार दिन में आयहौं. इतनैं कहि, वह बाहर जाय, फेरि घर में आय, खटिया तरै छिप रह्यौ. वाकी स्त्री नें ताहि गांव गयौ जानि, निज जार कौं बुलायौ, अरु क्रीडा के समें कछु आहट पाय जान्यौ कि, यह मेरी परीक्षा लैन कौं खाटिया तरै लुक्यौ है. यौं जानि, वह मन में चिंतति भई; अरु जब जार कही, रमति कौं नाहीं? तब वह बोली, आज मेरै घर कौ धनी घर नाहीं, यातें मेरे भायें आज गांव सूनौं बनखंड सौ लगतु है. पुनि आर कही, जो तेरौ वासों ऐसौ ही सनेह हो, तौ वह तोहि काहे छांडि गयौ? उनि कही, अरे बावरे! तू यह नाहीं जानतु? सुनि! कह्यौ है कि, "खामी स्त्री कौं चाहै कै न चाहै, पर नारी कौ यह धर्म है जु, पति कौं ऐक पल छू न बिसारै, अरु भर्त्तार की सार गारी सिंगार जानैं; सो धर्म कौं पावै, औ कुलवंती सती कहावै." धनी घर में रहै कि बाहर, पापी होय कै पुन्यात्मा, पर नारी वाहि न बिसारै; कौंकि, स्त्री कौ अलंकार भर्त्तार है, पति हीन अति सुंदरी छू नीकी न लागै. औ तू जार है, सो तौ पान फूल के समान, ऐक घरी कौ पाउनैं दैव के संजोग आनि मिल्यौ; कर्म की रेख मेटी न जाय, बिधाता सों काहू की कछु न बसाय. अरु वह मेरौ खामी, हौं वाकी दासी, जौ

सो यह, तोसों मेरो जीव है, याके मरे हों सती होउंगा. कह्यो है, "जो सती होय, सो प्रथम तो आपनें भुजानें न छूटे; दूजे कैसो ह वाको भर्त्तार दुष्कर्मी पापी होय, तो ह जेते देह में रोम हैं, तेते वर्ष वह निज स्वामी को साथ ले, स्वर्ग भोग करै." ज्यों जैसें धारकू बांध को मंच को अग्नि करि पाताल तें बुलावै, तैसें ही सहगामिनी आपनें पति को नर्क सों काढि परम गति दिवावै. यह बात सुनि, वह खाती आपनें जी मांहि कहनि लाग्यो, धन्य मेरे भाग! जु ऐसी नारी पाई कि, आप तरै, औ मोहि तरावै. वह ऐसें विचारि, उछाह को मांडो, उन दोउअन समेत खाट मांचे से मांड्यो.

तातें हों कहतु हों कि, मूरख दोष देखि ह सुति किये प्रयोजन होय. पुनि राजा ह्यें कही, आगे कैसी भई? तब बगुला कहनि लाग्यो, महाराज! उनि दूत विदा कियो है, सो मेरे पाछे आवतु है; यह जानि जो बूझिये सो करो. या बात को सुनि, वा राजा को मंत्री चकवा बोल्यो कि, धर्मावतार! यह बगुला दुष्ट है, यह काहू को सिखायो आयो है. कह्यो है, "वैद्य रोगी चाहै, पंडित गुनगाहक ढूंढै, राजा सूर सेवक खोजै, अधिकारी ठाकुर को विचार मनावै." पुनि राजा कही, या बात को विचार जो करनो उचित होय सो करो. मंत्री कही, महाराज! प्रथम एक जासूस पठाय, उनको कटक औ विचार जानिये; कौंकि, राजा की आंख जासूस है. जो राजा के जासूस रूपी नेत्र नाहिं, सो आंधरो है; अरु जाके पाछे जासूस होय, सो नरपति घर बैठो सब संसार को विभो देखे. कह्यो है, "तीरथ आश्रम देवालय तो आंख तें जानिये, औ गूढ बात जासूस तें." तातें,

महाराज! जो जानुष बल बल में आ सबै, ताहि पठाइबै, जो सब ही यह बात गुप्त राखिये; जौंकि, जो भेद फूटै तौ आगलौ सावधान होय. यातें हौं कहतु हौं कि, नीकौ आदमी पठाये युद्धजोग है. राजा औ मंत्री ऐसें बतराय रहे हैं कि, पौरिया बोल्यौ, महाराज! ऐक सुआ जंबूद्वीप में आयौ है, सु पौरि पै ठाढौ है, ताहि कहा आज्ञा होनि है? यह सुनि, राजा में चक्षषा की ओर देख्यौ. तह चकवा बोल्यौ, महाराज! यहिसै बातौं डेरा दिवाग्रौ, पाछे बूझी जायगी. इतनी बात के सुनते ही, द्वारपाल ताहि डेरा दैन गयौ. बहुरि राजा कही, अहो! विग्रह तौ उपज्यौ. चकवा बोल्यौ, महाराज! मंत्री कौ यह धर्म नाहीं, जो स्वामी कौं डरावै, कै भगावै. कह्यौ है, "विचारकै युक्त सौं बल करै, तौ थोरे पराक्रम ही में कार्य सिद्ध होय." जैसें मनुष काठ की सांग में भारी पाथर उठावै, तैसें नरपति हू युक्ति किये जीतै पावै. पुनि कहतु हैं, "यौं तौ सब ही सूर हैं, पर और कौ बल देखि न डरि, मन थिर राखै, ताही कौं बलवान कहिये; बहुरि जो समें माच काज करै, तौ बेग ही सिद्ध होय, ज्यौं वरषा काल की खेती." अरु महत के गुन सुभाव ये हैं कि, समें बिन दूर में डरावै; औसर पाय, नेरै आय, सूरातन करै; आपदा में धीरज राखै; सब बात की सिद्धि में उतावली न करै. कह्यौ है, "धीरौ पानी घरकत फीरै." महाराज! चित्रवरन राजा बडौ बली है; बलवान के सनमुख युद्ध करनौं जोग नाहीं; जो निबल सबल के सनमुख होय मरै, तौ दीप पतंग की भांति होय; कै जैसें कोऊ चींटी कौं पाथरन मारै, तैसें मारी जाय. पुनि कह्यौ है, "सनमुख युद्ध करिबे कौ काल न होय तौ ककुआ

सो यह, तोलौं मेरो जीव है, याके मरे हौं सती होउंगी. कह्यो है, "जो सती होय, सो प्रथम तौ आपने खसम में कूटै; दूजे कैसो ह्वै वाको भर्त्तार दुष्कर्मी पापी होय, तौ ह्वै जेते देह में रोम हैं, तेते वर्ष वह निज स्वामी को साथ ले, स्वर्ग भोग करै." ज्यों जैसे गारुड़ी मंत्र को मंत्र की शक्ति करि पाताल तें बुलावै, तैसें ही सहगामिनी आपनें पति को नर्क सों काढि परम गति दिवावै. यह बात सुनि, वह खाती आपनें जी माहिं कहनि लाग्यो, धन्य मेरे भाग! जु ऐसी नारी पाई कि, आप तरै, औ मोहि तरावै. वह ऐसें विचारि, उछाह को मान्यो, उन दोउअन समेत खाट माथें ले नाच्यो.

तातें हौं कहतु हौं कि, मूरख दोष देखि ह्वै सुति किये प्रयोजन होय. पुनि राजा हंस कही, आगे कैसी भई? तब बगुला कहनि लाग्यो, महाराज! उनि दूत विदा कियो है, सो मेरे पाछे आवतु है; यह जानि जो बूझिये सो करो. या बात को सुनि, वा राजा को मंत्री चकवा बोल्यो कि, धर्मावतार! यह बगुला दुष्ट है, यह काहू को सिखायो आयो है. कह्यो है, "वैद्य रोगी चाहै, पंडित गुणगाहक ढूंढै, राजा सूर सेवक खोजै, अधिकारी ठाकुर को विचार मनावै." पुनि राजा कही, या बात को विचार जो करनो उचित होय सो करो. मंत्री कही, महाराज! प्रथम एक जासूस पठाय, उनको कटक औ विचार जानिये; क्योंकि, राजा की आंख जासूस है. जो राजा के जासूस रूपी नेत्र नाहिं, सो आंधरो है; अरु जाके आछे जासूस होय, सो नरपति घर बैठो सब संसार को विभो देखै. कह्यो है, "तीरथ आश्रम देवालय तो आंख तें जानिये, औ गूढ बात जासूस तें." तातें,

महाराज! जो जासूस अल बल में आ गयो, ताहि पठाइबै, और सब ही यह बात गुप्त राखिये; कौंकि, जो भेद फूटै तौ आगलौ सावधान होय. यातैं हौं कहतु हौं कि, नीकौ जासूस पठाये युद्धजीत है. राजा और मंत्री ऐसें बतराय रहे हैं कि, पौरिया बोल्यौ, महाराज! एक सुआ जंबूद्वीप में आयौ है, सु पौरि पै ठाढौ है, ताहि कहा आज्ञा होति है! यह सुनि, राजा में चक्षषा की ओर देख्यौ. तह चकवा बोल्यौ, महाराज! पहिलै वाकौं डेरा दिवाओ, पाछै बूझी जायगी. इतनी बात के सुनते ही, द्वारपाल वाहि डेरा दैन गयौ. बहुरि राजा कही, अहो! विग्रह तौ उपज्यौ. चकवा बोल्यौ, महाराज! मंत्री कौ यह धर्म नाहीं, जो स्वामी कौं लरावै, कै भगावै. कह्यौ है, "विचारकै युक्त सौं बल करै, तौ थोरे पराक्रम ही में कार्य सिद्ध होय." जैसें मनुष काठ की सांग में भारी पाथर उठावै, तैसें नरपति हू युक्ति किये जै पावै. पुनि कहतु हैं, "यौं तौ सब ही सूर हैं, पर और कौ बल देखि न डरि, मन थिर राखै, ताही कौं बलवान कहिये; बहुरि जो समें पाय काम करै, तौ बेग ही सिद्ध होय, ज्यौं बरषा काल की खेती." अरु महत के गुन सुभाव ये हैं कि, समें बिन दूर में डरावै, और पाय, मेरै आप, सूरातन करै; आपदा में धीरज राखै; सब बात की सिद्धि में उतावली न करै. कह्यौ है, "धीरौ पानी परबत फोरै." महाराज! चित्रवरन राजा बडौ बली है; बलवान के सनमुख युद्ध करनौं जोग नाहीं; जो निबल सबल के सनमुख होय मरै, तौ दीप पतंग की भांति होय; कै जैसें कोऊ चींटी कौं पाथरन मारै, तैसें मारी जाय. पुनि कह्यौ है, "सनमुख युद्ध करिबै कौ काल न होय तौ क्रकुआ

के से पाय सकेस बैठिये; समय पाय नाग कौ सौ फन निकारिये; कौंकि, समीं जानि छोटौ हू उपाय करै, तौ बड़े कौं मारै. ज्यौं बरषा काल पाय, नदी कौ प्रवाह ठाढे रूख कौं गिरावै, त्यौं समें लहि सब काम हाथ आवै." यातें सनमुख लरवे कौ बिचार न करि, गढ संवारिये, तौलौं वाके दूत कौं बिरमाय राखिये. कह्यौ है, "कोट ऊपर कौ ऐक जोधा सहस सौं लरै." पुनि जा राजा के देस मांहिं गढ नाहिं, ताकौ राज अचु बेग ही लेय; कोट बिन राजा कौ राज थिर न रहै. तातें, महाराज! अब कोट बनाइये. कह्यौ है, "नदी के तीर गढ रचिये, तरै खाई खनाइये, चारौं ओर निबिड बन राखिये, औ पैठवे निकसवे कौं गेल; भांति भांति के अस्त्र सस्त्र यंत्र गोला भरिये, अरु अन्न रस धन जन कौ संचय सदा करिये." राजा बोल्यौ, गढ साजवे का काज कौंन कौं दैंय? मंत्री कही, जो चतुर होय, ताकौं देउ. पुनि राजा कही, या काज मांहिं तौ सारस निपुन है. प्रधान कही, वाही कौं दीजिये. बहुरि राजा नें सारस कौं बुलाय करि कह्यौ कि, तुम नीकी ठौरि देखि गढ रचो. उन कही, महाराज! मैं या सरोवर कौं अनेक दिन तें, तक राख्यौ है कि, याहि मांहिं गढ रचिये, तौ भलौ; कौंकि, याके तीर अन्न अधिक होतु है, अरु अन्न ही तें सब कछु होतु है. कह्यौ है, "रत्न औ कांचन सब वस्तु सों उत्तम है; पर मनुष कौं अन्न बिन न सरै. जैसें नैन बिन सब फीकौ, तैसें अन्न बिन कछु न नीकौ." पुनि राजा नें सारस सों कह्यौ, तुम बेग जाय गढ रचो. इतेक मांहिं, पैरिया आय बोल्यौ कि, धर्मावतार! संगलदीप तें ऐक काग मेघबरन नाम आयौ है, सु आपके दरसन की अभिलाषा

किये, द्वार पै ठाढो है; मोहि कहा आज्ञा होति है? राजा कही, काग दूरदर्शी हेतु है, यातें वाहि राखनों उचित है. मंत्री बोल्यो, महाराज! तुम भली कही, पर मेरे जानं वाहि राखनों जोग नाहीं; कौंकि, यह थल को वासी, औ हमारे शत्रु को साथी है, यातें याको रहनों कहूं हू नीको नाहिं. कह्यो है, "जो राजा आपनों पंथ छांडि, पराई चाल चले, सो राजा कूकर दमनक की भांति मरै." राजा पूछी, यह कैसी कथा है? तब मंत्री कहनि लाग्यो;

ऐक समें काहू स्यार कों नगर के निकट कूकरनि आनि घेरा; सो भयमान होय भाग्यो, औ गांव में जाय, ऐक सील के कुंड मांहिं गिर्यो. जब सीलवारे ने वाहि मर्यो जानि, वासों काढि, गैल में डारि दियो, तब वह मृगाल भष को माखो नगर की गली मांहिं हतक व्है रह्यो. तहां पनहारियन वाहि पर्यो देखि, आपस में पूछी, आली! यह कौन जंतु है? काहू में कह्यो, वीर! यह स्यार है. पुनि ऐक उन में तें बोली, अरी! याको कान काटि बालक के कंठ में बांधे, तौ डाकिनी न लागै. दूजी बोली, बहनि! याकी पूंछ काटि मोडा के गरे में डारै, तौ भूत पिशाच न लागै. तीजी में झट काट ही खवे. तब चौथी में कह्यो, याके दांत तोरि छोहरा की गुदी में राखै, तौ कछु रोग न होय. यह बात सुनि, वा स्यार में आपनें मन में कह्यो कि, या गांव के लोग बड़े पापी हैं; कान पूंछ काटि अब दांत तोरो चाहत हैं. यातें यहां तें भाजिये तौ बचिये. यह बिचारि, वह स्यार यहां तें पराय, बन में आय, सोचन लाग्यो कि, अब मेरो नीक बरन भयो, जामें आपनी प्रभुता होय सो करौं. यह बिचारि, वा में सब स्यारनि कों आनि कह्यो कि, आज या

बल के देखवारौं नें जिस छाड़ावलि तौ सभीत नें सकिलैक छाड़ि लोड़ि या बल तौ राज हमौ है, तुम मेरौ बल देखौ. यह सुनि, जिस छाड़लि मारौ बाल्य देखि, ताकौ नाम छाड़ि, अपनि हाथ तोड़ि कहौ कि, अब जो साहु लङ्कापति की आज्ञा होइ, सो करैं. सब उठि कही, तुम बल मेरे साथ रहौ. पुनि लेइ रहलि लागे. ऐसें जब उठि आपनें सभासीव में आइ याथौ, सब बीर ह बल के कीव, काल सीम आदि सब आज्ञाकारी अले; पुनि उठि स्नान सोच हुले. सह वे स्नान सब सुनि, चिंता करि, कहलि लाले कि, अब कहा करैं? बड़हरि जिस में में ऐक बूढ़ौ संयुक्त मोरौ, सरे! तुम जिव बचलाओ, तौ जावौ भेद याथौ है कि, यह लंका में तौ पूंछ काल कटाय याथौ, अब यहां आय हम आपनौं नाम राजा सूकर हनमन्त धराबौ; ये सिंह पीठ हनमान्तें थाकौ सेवा करतु है. तातें में ऐक उपाय सिखाओ है कि, यहि वनमें सब लोह दूकाठे होय, लोहे सब हूदी पलाशौ यथाय, जिज जात कौ सुभाव न लाये." ऐसें बूढ़े लाइ की ज्ञान सुनि, उनलि वैसें ही कारी. जब राजा सूकर हनमन्त लाइर सीमालि में बैठि मोरौ, सब छनलि लाहि लारि लाथौ.

लातें वैं कहतु वैं कि, महाराज! लाइनौं संग कबहु न छाड़िये; औ घर कौ भेद, चाल कौ मरम, काहु सों न कहिये. कहौ है, "बीरहर की लाज सब सों बराये." लातें महाराज! विदेसी सों भेद कबहु न बतादये, न घर में राखिये. पुनि राजा कही, अहो! आज तौ ऐसें ही है, हर

दूर में आयो है, तातें याहि बुलायबो देखियै; जो राखिबो आगे होय, तो राखियै, मां तो विदा करियै. चकवा कही, महाराज! अब तिहारो गढ साज्यो गयो; चित्रवरन राजा को दूत कों बुलाय, विदा कीजै. कह्यो है, "भूपाल और भूपाल के बसीठ में एकसो न मिलै." तासों आपनी सभा के सब लोगन कों बुलाय बैठारियै, तब सुआ कों बुलवाइयै, अरु वाके साथ काग कों हू. यह सुनि, राजा में ऐसें ही करि, बिन दोऊन कों बुलाय, आसन दै, बैठाये. तब सीस झुकाय, कीर बोल्यो, अहो हिरण्यगर्भ राजाधिराज! तुम कों श्री महाराज राजा चित्रवरन में कह्यो है, जो आपनो प्राण राखो चाहो, तो हमारी सरन आओ; नातो आपनें रहनि कों अनत ठौर करो. यह बात सुनि, राजा रिस क्रोध करि, बोल्यो, है रे कौऊ जो या बसीठ कों मारै? इतेक सुनि, वह काग बोल्यो, महाराज! मो कों आज्ञा होय, तो या दुष्ट कों मारौं. चकवा कही, धर्मावतार! दूत राजा को मुख है, तातें याको कछु दोष नाहीं; जैसें यहां सुनी, तैसें यहां आनि कही; यह मिथ्या न भाखै; अरु बसीठ के कहें, कछु आपनी हानि, न वाकी प्रभुता; तासों याकों मारनो काहू भांति उचित नाहिं. कह्यो है, "जा सभा में बूढो न होय, सो सभा न सोभै; सो बूढो नाहिं, जो धर्म न जानै; वह धर्म नाहिं, जहां सत्य न होय; वह सत्य ही नाहिं, जहां छला में उपजै." ऐसें समझाय, मंत्री में राजा को क्रोध निवारन कियो. पुनि तोता यहां तें उठि चल्यो. तब मंत्री में वाहि मनाय बैठायो, औ वस्त्र अलंकार दिवाय, राजा तें विदा करायो.

जब वह आपनें राजा के पास गयो, तब राजा चित्रवरन

में बातें पूछी, सुक! कहो, यह देस कैसो है? सुआ कही, महाराज! पहले युद्ध की सामा करो, पाछे हौं कहतु हौं. राजा बोल्यो, हमारै लराई को सब सामान इकठो है; तुम कहो. पुनि सुआ कहनि लाग्यो, महाराज! कर्पूरदीप बातवें स्वर्ग समान है, अरु मो पै बरन्यो नाहीं जातु. यह सुनि, राजा में आपनें सब मंत्रियन कौं बुलायके कह्यो, अहो! कीर कहतु है कि, राजा हंस तें युद्ध करो; सो तुम तें पूछतु हौं कि, अब कहा करनों उचित है? अरु मेरो हू मनोरथ यह है कि, युद्ध करौं. कह्यो है, "अमंतोषी ब्राह्मन, लाजवती वेस्या, कुलवती निर्लज्ज, औ राजा संतोषी होय, तौ ये सब थोरे ई दिन मांहिं नष्ट होंय." यह सुनि, राजा को मंत्री दूरदर्शी नाम गीध बोल्यो, महाराज! आपनें मंत्री, मित्र, कटक, प्रजा आदि सब ऐक मत होंय, अरु शत्रु के मित्र, मंत्री, औ प्रजा में विरुद्ध होय, तौ युद्ध करिये; यह नीति है. राजा कही, मेरो दल में सब देखो, यह सामिद्वारी है, पर काहू काम को नाहिं; यातें तुम बेग जोधनी बुलाय, महरत देखो. गीध कही, पृथ्वीनाथ! शीघ्र ही यात्रा न बूझिये. कह्यो है, "शत्रु बिन विचारे वाकी भूमि में जाइये, तौ नाहीं हू बड़े कौं जीते." पुनि राजा कही, जो परभूमि लयो चाहै, सो कौन भांति तें लेइ? यह तुम कहो. मंत्री बोल्या, महाराज! उद्योग करे, मनकामना पूरन होय, अरु बिन उद्योग कछू न होय; जैसें औषध खाये रोग जाय, ताको नाम लिये न जाय. अब महाराज की आज्ञा प्रमान, परभूमि लेवे की रीति कहतु हौं, जो राजनीति में कही है.

प्रथम तौ, राजा आपनें मंत्री, बोधा, सहायक, मुखियान

कौं बुलाय, सनमान करि, साथ लेय; अरु अस्त्र, वस्त्र, अलंकार, धन, गज, घोरा, निज लोगन कौं बांटै; जो जाके जोग होय, ताकौं तैसो सनमान करै, पाछै कटक साथ लै चलै; अरु जहां पर्वत वन डर की ठांव होय, तहां सेनापती कटक इकठौ करि चलै; भले भले सूर साथ राखै; श्री रनवास, ठाकुर, भंडार, नाम्हें लोग, व्यौपारी, बीच मांहिं. पुनि राजा श्री मंत्री सब पै दृष्ट राखै, श्री वनवासी, पर्वत निवासी लोग आगै धर लेय; बहुरि जहां विषम भूमि होय, कै वरखाकाल होय, तौ राजा हाथी पर चढि चलै. कह्यौ है, "गज की देह में आठ अस्त्र हैं, चार पांव, दै दांत, एक सूंड, औ माथो." या तें राजा हाथी अधिक राखै तौ भलौ; कौंकि, गयंद चलतौ कोट है; अरु जो घोरानि पै चढि डरै, तिय तें देखता ह्वै डरै, श्री पयादेन कौं बल सदा राखै. पुनि परभूमि में जाय, राजा सदा सावधान रहै. काहू कौ विश्वास कब ह्वै न करै; जोगेश्वर की नींद सोवै; अरु राजा आपनें साथ द्रव्य राखै; कौंकि, धन प्रान तुल्य है; बिन धन प्रभुता नाहीं. साखी पाय को न जूझै? अनुज द्रव्य के हेतु सेवा करतु है. कह्यौ है, "नर धन तें बडा, औ धन ही तें छोटो." पुनि शत्रु कौ देस लूटि, खसोटिक उजारै; कौंकि, तातें अरि दुचिता होय; अरु वाकौ अन्न रस ईंधन न्यार जो पावै, सो लूटि खावै; श्री गढ, गढी, सर, कूप, बापी, फोरि नाखै; बन उपबन वारी काटि डारै. ऐसें अनेक अनेक भांति की पीडा शत्रु कौं उपजावै, श्री आपनें लोगनि तें सदा प्रसन्न होय, बतरायो करै, जातें लोग जानें कि, हमारो स्वामी हम सों संतुष्ट है. कह्यौ है, "ठाकुर के सनमान श्री हित बचन तें जैसो सेवक काज

करै; तैसो धन दियै, अरु कटु वचन नें, न करै." पुनि जब सेवक काज करि आवै, तब ताहि प्रसाद देय; अरु जो प्रसाद न देय, तौ वाकी जीविका दूनी कर देय; जो मरन न होय, तौ ताको कमायौ पैसा मुकाय देय. अरु जो स्वामी सेवक कौ महीना देत आज काल करि टारै, ताको निंदक दुहाम रहै, जो अवसय घर काढी देय. जातें जो दासन प्रभु कौं जीतौ चाहै, तौ दानहि औ सेवकनि कौं प्रसन्न राखै, तौ जहां जाय, तहां विजय पावै. अरु जा नाल कौं सूनि, अरि के सेवक भूखे टूटे दीन, ते आय कें काम काज सिद्धें, तौ अरुनें न न करै. बहुरि, हितु सो जीतवे कौ देख राजा उपाय कहयौ है कि, "काके भाई भतीजा भतीजान सों भेद उपाय करि, जिन कौ आनंद मान कीजै, अरु मंत्री मुखा सों न अपमान कीजै, औ से करें, जिन कौ मान मिटाय दीजै, अरि कौ देय उजारिये, अपनौं नफा करै. प्रजा में जाको है, या प्रकार सें राखा चाहै तौ हुकुम कीजै. पुनि राजा बोल्यौ, सें स्वामी, नातें आपनी कीजै, औ प्रभु की जान देय, तासी यह रीति है; अरु मरन के पेंडे नें राजा की उमंग औ मंत्र न्यारौ है; मन की उमंग में जो राजा बिचारै, तौ न मरै, जैसें अंधकार औ तेज एकठौ न रहै दोनौं जाहि, राजा नें शीघ्रही बुलाइ, शुभ मुहूर्त उकराय, आपनी जय के दिगविजय यात्रा करी. तब राजा हंस के मूल सें जान, आपनें राजा सों कही कि, महाराज! राजा चित्रवर्ण नें मलयाचल परवत के हेठ आय डेरा करे, तुम तासनें युद्ध की रचा करौ, औ आपनौं पराभैर कीजौ; वाकौ मंत्री अति चतुर है; मैं वाकी बात सों जानौं कि, उनि हमारी

मंत्री बोल्यो, महाराज! यह काम कौं न राखिये. राजा कही, जो यह काम बाबो पठाये होतो, तो वा सूवा कौं मारि न डालतो; यह एक तोता के गये पाछै युद्ध का मंत्र कियो है, यह वा तें प्रथम आयो है. मंत्री बोल्यो, महाराज! तज नये आये तें डरिये. राजा कही, भद्रे! जो नयो आयो आपनौं उपकार करै, ताहि मित्र जानिये, यह बंधु मित्र होय आपनें काम न आवै, ताहि शत्रु करि जानिये. जैसें वन की औषधी तुरत की आई, रोगी के रोग कौं दूर करि सुख देइ, तैसें लोक लोक मनुष्य ह नयो आयो, उपकार करि मन हेइ; पुनि कौं सूखना राजा के वीरवर सेवक में राज दिखति ही तें राजा बात करी. मंत्री बोल्यो, महाराज! यह ऐसी कथा है; पुनि राजा कहत है;

सूद्रक नाम ऐक राजा, ताकी सीता नाम ऐक महारानी, तासें बहुत लोक राजा संग हेा. वाकी मेंटी नाम ऐक कर्पूरमंजरी, तासें आसक्त होइ नें यहां रह्यो. तहां वीरवर नाम ऐक राजपुत्र, काहू देस तें धनहर के लिये आयो, राजदार पै ठाढो भयो, पर उहि वेश्यिन तें कह्यो, तोहि राजा तें लिवायो, यों सेवा करनि के हेतु आयो है. वारंवार यह बात पाय राजा सों कही. तब राजा नें वाहि बुलायबे कों कह्यो, तुम कित मति कहा सिखये? उहि कही, पर मैं तोसा सुंदर. पुनि राजा बोल्यो, मैार सिंगारे साथ लेा है? उहि कही, है राज, तीजो सुंदर. राजा कही, कालेा दंड तें न डरियेा जायबो. तब पुनि, वीरवर बुलाय वाहि कह्यो. तब मंत्री नें राजा सों कही, महाराज! पर

दिन तौ याहि सुवरन दै राखिये, औ याको पराक्रम देखिये, दूतेक जोग है कै नाहिं. मंत्री की बात मानि, राजा में याहि सौनों दै राख्यौ. वा दिन कौ कंचन लै, वानें आपनें घर जाय, आधो तौ ब्राह्मननि कौं संकल्प करि दियो, अरु याको आधो भूखे भिखारी भिक्षुकन कौं बांटि दियो, औ ऐक भाग निज भोजनार्थ राख्यौ. याही भांति वह पुत्र पत्नी स्त्री सहित व्हां रहनि लाग्यौ. जब सांझ होय, तब खांडो फरी लै, राजसेवा में जाय उपस्थित होय. ऐक दिन कृष्ण चतुर्दशी की आधी रात कौं घन घुमडि मेह मच्यौ, ता समैं काहू नारी के रोवन कौ शब्द सुनि, राजा बोल्यौ, कोऊ है? वीरवर कही, महाराज! कहा आज्ञा होति है? राजा कही, देख तौ, कौन रोवतु है? राजा की आज्ञा पाय, वीरवर चल्यौ. तब राजा में आपनें मन में विचार्यो कि, मोहि ऐसो न बूझिये जु, या अंधेरी रैन मांहिं रजपूत कौं ऐकलौ पठाऊं; तातें याकी पाछे पाछे जाय ईहौं तौ सही, यह कहा करतु है? या प्रकार राजा मन में विचारि, ढाल तरवार गहि, वाकी पाछे ह्वै लियो. आगे जाय वीरवर देख्यौ तौ, ऐक नारी नवजोवना, अति रूपवती, सब आभरन पहरै, ठाढी, धाय मारि मारि रोवति है. इन वासों पूछी, तू कौन है? उनि कही, हौं राजलक्ष्मी हौं. पुनि इन कही, तू रोवति काहे? उनि कही, मैं बहुत दिन या राजा की भुजानि की छांह में विश्राम कियो, अरु अब या राजा कौं छांडि जाउंगी, या दुख तें रोवति हौं. इन कही, तू काहू भांति रहि रहै? उनि कही, जौ तू निज पूत कौं बलि देइ, तौ हौं रहौं, अरु यह राजा अनेक दिन अखंड राज करै. पुनि वीरवर कही, माता! जौलौं मैं आपनें घर

व्है आजं, ताहीं तुम व्हां रहौ. ऐसें कहि, घर आय, वीरवर पुत्र औ स्त्री कौं जगाय, लक्ष्मी के कहे वचन कहिवे लाग्यौ, तौ पुत्री कहू लागी. यह बात सुनि, सब चुप रहे. तद पुत्र बोल्यौ, धन्य भाग मेरौ जु, यह देह देवी के निमित्त जावै, अरु स्वामी कौ काज सरै! यामें पिता जू विलंब जिय करौ; क्यौंकि, अवश्य तौ या काया कौ विनास होय, तातें काहू के काज लागै, सो तौ भलौ ही है. कह्यौ है, "विद्या, धन, प्रान, पराक्रम, जाकौ पराये काम आवै, ताही कौ संसार में जन्म लैनौं सुफल है." पुनि वीरवर की पत्नी बोली, औ तुम यह कार्य न करौगे, तौ राजा के ऋन तें कैसें उतरन होउगे? ऐसें बतराय, सब देवी के मंदिर पै गये; अरु पूजा करि, हाथ जोरि, इतनौं कह्यौ, माता! हमारौ राजा चिरंजीव होय राज करै! यह कहि, पुत्र कौ मूंड काटि, वीरवर नें देवी कौं दयौ, अरु आपनें मन मांहिं कह्यौ कि, राजा के ऋन तें तौ उतरन भयौ; पर अब विपूतौ होय जगत में जीवनौं उचित नाहिं. यह समझि आपनौं हू सीस काटि, भवानी के आगू धर्यौ. उन दोउअन कौं मर्यौ देखि, वाकी स्त्री नें विचार्यौ कि, संसार में रांड विपूती व्है जीवौं जोग नाहिं. ऐसे ठानि, वा हू नें निज माथौ चढाय्यौ. विन तीननि कौं मर्यौ देखि, वाकी पुत्री नें विचार्यौ कि, निगोडी बाठी व्है, जग में जीवनौं भलौ नाहिं. यह समझि, विन हू सस्तक काटि, देवी के सनमुख राख्यौ. यह चरित्र देखि, नरपति नें जी मांहिं विचार्यौ कि, मो से जीव अनेक पृथ्वी में उपजतु खपतु हैं; पर ऐसे सूर नर हौंने कठिन हैं; तातें अब याकौ कुटुंब नाथ करि, मोहि राज करनौं जोग नाहिं. यह सोच समझि, ज्यौं भूपाल निज मूंड

उतारनि लायो, तौ हौं देवी में आय, कर गह्यो, वर कह्यो, राजा! तू साहस जिय करै, अब तेरे राज में भंग नाहिं. राजा कही, माता! मोहि राज में कछु प्रयोजन नाहिं. पुनि देवी बोली, हौं तेरे धर्म, औ सेवक के कर्म पर, संतुष्ट भई; अब तू जो वर मांगे सो देउं. राजा कही, मा! जो तुम तुष्ट भई हौ, तौ इन चारन कौ जीव दान देउ. तब उन पाताल तें अष्टत लाय, विन चारन कौ जिवायो, तब राजा चुपचाप वहां तें चलि, निज मंदिर में आयो; औ वीरवर कू, उन तीनों कौं घर राखि, आप राजा के समीप पंहुच्यो. नरपति में वाहि पूछ्यो, तुम गये हे, तहां कहा देखि आये? पुनि वीर बोर, उन कही, महाराज! ऐक बारी रोवति ही. जौलौं हौं वहां गयो, तौलौं वह चुप रही, मैं वाहि न पायो; पुनि मैं वगर आप को लिग आयो. ऐसे सुनि, राजा में मन में कह्यो कि, यह कोउ बड़ो सिद्ध पुरुष है, याकी सक्ति हौं कहां लौं करौं! कह्यो है, "इया बल, दानी, तपसी, सत्यवादी, औ सूर जो आपनी बड़ाई न करै, तौ वाहि सिद्ध पुरुष जानिये." आगे, राजा में प्रात भये, पंडितन की सभा में बैठि, राणि कौ सब वृत्तांत कह्यो, सुर संतुष्ट होय, वीरवर कौं करमाटक देस कौ राज दयो. तातें हौं कहतु हौं, सब भये कू पुरै न होय. संसार में तीन प्रकार के मनुष होतु हैं; उत्तम, मध्यम, अधम. बहुरि चकवा बोल्यो, महाराज! यह काज करबे जोग नाहिं, आगे महाराज की इच्छा. कह्यो है, "पराई रीस पंडित चतुर कबहू न करै;" पर जो करै, तौ ऐसें होय, जैसें, ऐक बनी में आपनी तपस्या तें धन पायो, औ वाकी रीस वारि,

ऐक नाऊ में निज प्राण गंवायो. नरपति कही, यह कैसी कथा है? तब चक्रवाक कहनि लाग्यो;

अयोध्या पुरी मांहिं, ऐक चूडाकरन नाम सची रहै; तिन धन के निमित्त अति कष्ट करि, श्री महादेव जू की सेवा करी; तब सदाशिव जू में वाकौं स्वप्न में दरसन है, कह्यो; अरे! आज पाछली रात्रि सनें, चोर होय, स्नान करि, लोटिया कर धरि, आपनी पैरि, मांहिं कपाट के पाछे लुक रहियो; जब कोऊ भिक्षा कौं आवै, तब वाहि सकुटनि मारि, घर मांहिं लहियो; वह सुवरन भयो कलस ह्वैहै; तातें तू जबलग जीवैगो, तबलग सुखी रहैगो. यह वर पाय, दिन दूजे दिन नाऊ कौ बुलाय, वैसें ही कियो, जैसें भोलानाथ नें कह्यो हो. जद वह भिखारी सुवरन घट भयो, तद इन लै घर में धर्यो. यह चरित देखि, वा नाऊ नें विचार्यो कि, धन पावने की जो यही रीति है, तो हौं हू कौं न करौं? ऐसें समझि, निज घर आय, उन हू ऐक सन्यासी माऱ्यो; तब वाहि राजा के सेवकनि पकरि लै आय, सन्यासी के पलटे माऱ्यो. तातें हौं कहतु हौं कि, औरन की रीस कबहू न करिये. पुनि राजा कही, पाछली बात जिन करौ, आगै जो करनौं होय सो करौ. मलयागिर पर्वत के तरै, राजा चित्रवरन कौ डेरा है; अब कहा करिये सो कहौ? मंत्री बोल्यो, महाराज! हम हू सुन्यौं है कि, वह खरबे कौं आयो है; पर तुम कछु चिंता जिन करौ, हम वाहि जीतिहैं; कौंकि, वानें आपनें मंत्री कौ कह्यो नाहीं मान्यो. कह्यो है कि, "जो प्रभु लोभी, कूढ, आलसी, कायर, झूठो, औ अधीर, होय; अरु धन राख न जानें; काहू कौ कह्यो न मानें; ताहि बिन कष्ट मारिये." महाराज! यौहीं

यह हमारी गढ, नगर, कटक, औ चाट बाट न देखै, तौलौं वाके मारिवे कौं सेना पठाइयै. ऐसें और हू ठौर जानैं हैं कि, "दूर कौ आवौ, थक्यौ, भूख्यौ, प्यास्यौ, भयमान, असावधान, रात्रि कौ आयौ, औ परवस तरै वस्यौ होय, ऐसे शत्रु कौं दौरि मारिये." यातैं उचित है कि, अबही हमारी सेनापति आवै इन कौं जाय मारै, तौ भलौ. यह बात मंत्री तें सुनत प्रमान, राजा नें सेनापती कौं दीन्हि आज्ञा इहै कि, तुम वाही समैं राजा चित्रवरन की सेना कौं जाय मारौ. उन वैसेंही करी. जब चित्रवरन की जोधा अनेक मारे गये, तब वह चिंता करनि लाग्यौ. पुनि वाकौ मंत्री सीष बोल्यौ, अब काहे चिंता करतु है? बहुरि राजा कह्यौ, बाबा जू! अब काहू भांति हमारी सेना की रक्षा करौ. ऐसें भयमान राजा कौं देखि, सीष बोल्यौ, महाराज! कह्यौ है कि, "गर्व तें लक्ष्मी टरै; बुद्धापौ पौरुष हरै; चतुर संदेह मिटावै; अभ्यास करै सिद्धा आवै; न्याय प्रताप बढावै; विनय तें अर्थ पावै." अरु मूर्ख राजा होय, तौ पंडितन की सभा तें सोभा; जैसें मही के तीर रुख रहौ रहै, तैसें याही सभा तें राजा कौ मन हू डहडह्यौ रहै.

इतनौं कहि, पुनि सीष बोल्यौ, महाराज! तुम तें आपनौं कटक देखि, गर्व करि, साहस कियौ, अरु मेरौ कह्यौ न मान्यौ; ता अनीति कौ यह फल है. कह्यौ है, "जो राजा मंत्र चूकै, तौ साकी भोति कौ दोष है; जैसें कुपथ्य तें रोग होय, रोग तें मरै; तैसें धन तें गर्व होय, औ गर्व तें दुख." पुनि निर्बुद्धि कौं आपत्ति जौं, त्यौं आंधरे के हाथ आरसी. यह समझि, हम हू मौन गहि रहे. इतेक बातें सुनि, राजा नें हाथ जोरि, सीष सौं कही, बाबा जू! मेरे तें

अपराध भयौ, क्षमा कीजै, पर अब आइ सांति लै गटक भयौ है, ताहि लाज लै, जिय धर ही छाट दीजै. पुनि सीख दयौ, कहा राज! ऐसौ कह्यौ है कि, "राजा, गुरु, ब्राह्मण, बालक, वृद्ध, स्त्री, रोगी, इन पै ज्यौं क्रोध उमजै, त्यौं त्यौं नाय." यातें तुम डरौ जिन, धीरज धरौ. कह्यौ है, "संधी लायौ कौं चाहिये, जो निकसौ काज सुधारै; जो देख लेइ, तौ बलिपसु बिचारै." यातें तुम कछु चिंता मत करौ, कौं तिहारे प्रताप तें याही भल होयहि. कटक सबेर प्रयाण कौं घर ले चलिहौं. राजा सोयौ, सोरौ गटक रह्यौ, कछ गढ कौनें निकस करिहै? सीख दई, महाराज! जो संग्राम लीयौ चाहौ, तौ विलंब किन करौ; आज ही चलि गढी कोट लेहिये.

यह बात सुनत ही, बगुला में राजा हंस में प्रगट कही कि, महाराज! राजा चित्रवरण घोरे ही कटक तें, निकरौ गढ लैबौ मात्रतु है, यह बात तें याके मंत्री तें सुनि आयौ हौं. यह बात सुनि, राजा हंस में आपनें मंत्री सों कह्यौ कि, अब कहा करिये? चक्रवा बोल्यौ, महाराज! आपनैं कटक देखो, आपनें कौंन कह्यौ है, औ कौंन बुरौ? असौ होय, ताहि धन, बस्त्र, घोरा, हाथी, वस्त्र, दीजै; औ बुरौ होय, ताहि गढ कटक तें बाहर कीजै. कह्यौ है नु, "राजा एक समय तौ दाम कौं लाभ करि जानें; पर एक काल लाभ कौं दाम करि जानें; तौ वा राजा कौं सखी न कांदै." पुनि, यज्ञ, दान, विवाह, आपदा, औ अनु जानिये में, तौ मंत्र उचारना है, सोई सार्थक है. यह सुनत घोरे हंस तें कहि, सबही मंत्रानै. राजा बोल्यौ, तुम कौं कैसी लगी की चाहत्रा है? मंत्री कह्यौ, महाराज! कह्यौ है नु, "सखी

रिसाय, तौ आवौ अब जाय." तातें दण्ड कीजिये जो, धर्म के आधीन व्है, सजी रहै. बहुरि राजनीति में इह कह्यौ है कि, "विपक्ष के समथ राजा आपनें जोधान कौ समाधान करै, जो जैसौ, ताकौ तैसौ; क्योंकि, जे उत्तम, प्रवीन, कुलीन, सीलवंत, सूर, बीर, धीर, नीकै पोखे होंय, ते पांच पांच सौ तें लरैं; अरु अकुलीन, अप्रवीन, अधम, अधीर, कायर, निर्लज्ज, होंय, ते पांच सौ पांच तें परांय. महाराज! पुनि जा राजा कौ मंत्री असावधान होय, ताकौ इह राज न रहै. अरु जो राजा आपनौं परायौ न जानें, मंत्री की प्रतीत न मानें, सेवक कौ दुख सुख न गनें, सो राजा कबहू निचतो न रहै. औ जो राजा आपनौं परायौ बूझै, सेवक कौ दुख सुख बिचारै, ताके लिये सेवक धन तन प्रान दे सहायता करै.

राजा औ मंत्री ऐसें बतराय रहे हे कि, तांही वमें मेघवरन काग आय, जुहार करि, बोल्यौ, महाराज! अनु युद्ध करिवे कौं गढ के बार आयौ है; मोहि आज्ञा होय, तौ बाहर निकरि, संग्राम करौं, अरु आप के सीस तें उतरन होंउ. मंत्री कह्यौ, बन तें निकस्यौ सिंह अरु खार समान है; यातें गढ तें न निकसिये. कह्यौ है, "जो राजा आप ठाढौ रहि युद्ध देखै, तौ कायर सिंह समान होय लरै." तातें अबही कोट के बार जाय युद्ध करनौं जोग नाहिं. इधर तौ राजा औ मंत्री ऐसें बतराय रहे हे, अरु उत चित्रवरन राजा में दूजे दिन गोध सों कह्यौ कि, बाबा जू! जो प्रतिज्ञा करी ही, ताकौ निर्वाह करौ. गोध बोल्यौ, सुनौं महाराज! आगरे के घोरे जोधा होंय, के राजा मूर्ख, औ मंत्री कायर होय, तौ गढ उतावलौ टूटै;

खेत तौ यहां ऐसौ मति नाहिं; तातें यहां के लोगनि में भेद उपाय करिये; के घेरौ नाखि, अन्न रस रोकि, सब मिल याहरा करैं तौ गढ पावैं. कह्यौ है, "जैसौ बल होय, तैसौ जतन करिये." इतनौं कहि, पुनि मंत्री नें राजा के कान में कह्यौ कि, महाराज! कछु चिंता जिन करौ; हमारौ काम याके गढ में है, सो काम करिहैं. आगै, प्रात होत, राजा चित्रवरन सब सेना ले, गढ की पैरि आय लाग्यौ. उत कमध पाय, काग साथ लगाय, गढ लियौ लियौ करि पुकार्‌यौ; तब तहां के जीवन के प्रग छूटे; वे सब दौरि पानी में पैठे; तौ राजा हंस सुकुमारता तें पराय न सक्यौ; तह ऐक सर्वज्ञि नाम कूकडौ राजा चित्रवरन कौ सेनापति, जिन आय हंस कौं छेक्यौ. तब सारस वाके सनमुख ह्वैनि आग्यौ. तहां हंस बोल्यौ, तुम मेरे निमित्त जिन जूझौ; हौं यहां रहौं, तुम मेरे पुत्र चूरामन कौं ले आय, राजा करौ. सारस कही, महाराज! आप ऐसी बात जिन कहौ; जौलौं चंद्र सूरज, तौलौं तुम अखंड राज करौ; हौं आप के प्रताप सों गढ में सब अचुन मारि बिहावतु हौं. कह्यौ है, "छिमावंत, दाता, गुनगाहक, सुखदायक, धर्मात्मा, ठाकुर कहां पाइयै?" राजा कही, भक्तिवंत, निष्कपट, चतुर सेवक हू कहां पाइयै? पुनि सारस बोल्यौ, महाराज! संग्राम तज तौ भाजिये, जौ मृत्यु न होय; अरु जौ निदान मृत्यु ही है, तौ आपनौं जस मलीन करि, काहे मरिये? बहुरि, जौ या अनित्य सरीर सों जगत में नित्य जस पाइयै, तौ यातें कहा उत्तम है? या में तुम तौ हमारे स्वामी ही हौ. राजा कही, यह तुम भली बिचारी, हम हू ऐसौ ही करिहैं. सारस बोल्यौ, महाराज! आप ऐसौ

विचार जिन करो; कौनकि, स्वामी के ईष्ट करि प्रजा सनाथ होय; अरु सेवक को तो यह धर्म ही है कि, जैसो धनी, तैसो स्वामी को राखिवे को जतन करै, स्वामी के उदै में आनंदो उदै, अरु अस्त में अस्त. इत्यादि बात कहत भयो. तब मुहूर्त में राजा हंस को राज भयो, तब सारथ में बाँधो मुकुट, पीठ पर चढाय, मोर में आज होयो; अरु याम याम, अनेकन को भाँति, गढ मंदिर मूल भयो. पुनि आप, राजा विचखरन में बध गढ की राजा कहै; अरु मंत्री जन को मान्यन की सेरी हथकरी आठ दई. इतनी बात सुनि, राजपुत्रनि विष्णुश्री में कही, यहो सुखदेव! राजा हंस के सेवकनि में यह बड़ो दोष है, जिन राजा को कष्ट, आप आप दियो. विष्णुश्री सो सोहो, अहो राजकुमारन! सुनो, जन सोहो राज कियो. देखो, हंस तो संसार में जस पायो, दूजे यामें. यहो है, "जो सेवक स्वामी के लिये रन में प्राण देइ, तो परम गति पावै; जो जो साथ छोड़ि भागै, वह नर्क में पड़ै, जो अगत मांहि कलंकी होय." इति विषय नाम तृतीय कथा संपूर्ण:

अथ संधिः.

विष्णुशर्मा बोल्यो, अहो राजपुत्रहो ! तुमनि विषय कौ सुख्यौं; जब यौं संधि कथा कहतु हौं कि, जब कोऊ राजा संग्राम करि, केऊ कदाच रहै, तब सीध यह बतावा चे जा भांति सब कौं मिलावा, ताई रीति सब कहा कहतु हौं. राजपुत्रनि कही, बड़े गुरुदेव ! सब सीखे चित दै सुनतु हैं, आप आज्ञा कीजै. पुनि, विष्णुशर्मा कहनि लाग्यौ कि, जब राजा संग में सकवा बोलै पूछौ कि, तुम कह आवतु हौ, यह में आप हमारे सोमनि सनाई, कै अपु के; तब सकवा बोलौ, महाराज ! विहारी सेवकनि काम दीजतु चाहीं; तातें जान्यौं जातु है कि, होय न होय, यह वाही कौ काम है. इतनी आप सुनि, राजा चिंता करि, कहनि लाग्यौ कि, मैं जान्यौं, यह मेरे ही अभाग में काम बिगरयौ; या तांहि कछु विहारी देश माहिं; मेरे कपाल ही कौ दोष है. मंत्री कही, महाराज ! और ह ठौर हैयें कह्यौ है कि, "जब दैव सोमतु है, तब मनुष पर आपदा आवतु है; यह कर्म ते जब होय अनीति करै; सिद्धत कौ कह्यौ न मानें." तैसें ऐक कछुआ में जानतें मित्र कौ कह्यौ न आनि, काठ तें गिर, दुख उठायौ, तैसें आज आवै. राजा बोल्यौ, वह कैसी कथा है? तातें आपहा कहनि लाग्यौ;

मगध देस में फुल्लोत्पल नाम सरोवर, तहां बिकट संकट नाम दै राजहंस रहैं; तिन कौ मित्र ऐक कंबुग्रीव ककुआ कछु वहां रहै. ऐक दिन तहां धीवर आये, अरु आपस में बैठि बतराये कि, आज राचि कौं यहां बसि, माछरी ककुआ पकरिहैं. यह सुनि, कमठ ने हंसनि सौं कही, मित्र! तुम धीवर की बात सुनी; अब हौं यहां न रहिहौं, और सरोवर में जैहौं. हंसनि कही, अबही रहौ, आगै उपाय करिहैं. ककुआ बोल्यौ, बंधु! तुम जो कही कि आगै उपाय करिहैं, सो आगै की बात नाहिं कह्यौ है, "आपदा बिन आये उपाय करै, तौ सुख पावै; और न करै, तो दुख उठावै;" जैसें यद्भविष्य माछरी नें दुख पायौ. हंसनि कही, यह कैसी कथा है? बहुरि कमठ कहतु है;

पहिलै था सरोवर पर ऐक बार धीवर आयौ हौ; तब यहां तीन माछरी रहति हीं; ऐक अनागतविधाता, दूजी उत्पन्नमति, तीजी यद्भविष्य जब धीवर आयौ, तब आगति बिधाता नें कह्यौ, अब यहां रहनौं उचित नाहीं. इतनौं कहि, वह और सरोवर में गई. दूसरी बोली, जद काज आय परिहैं, तद उपाय करिहौं. कह्यौ है, "जो उपजी बात का उपाय करै, सो चतुर." जैसें ऐक बनियां की बेटी नें पति के देखत, जार कौं चूंबा दै मिस कियौ. तीसरी नें पूछ्यौ, यह कैसी कथा है? पुनि उत्पन्नमति कहति है;

बिक्रमपुर में समुद्रदत्त नाम बनियां; ताकी स्त्री कौ नाम रत्नमंजरी; सो आपनें सेवक सौं रहै. कह्यौ है, "स्त्री के कौंन बडौ, कौंन छोटौ? आपनें काम सौं काम." आगै, ऐक दिन वह आपनें सेवक कौ मुख चूमति ही, वाही समें वाके स्वामी नें आय देख्यौ; तब उठि दौरि, पति सौं कही,

बाहबू! वा डेवक बज्रमारे कौं घर मांहिं जिन राखौ, वह हैमारौ चोर है, अबही यामें घी चुराय खायौ; मैं याकौ मुंह सूंघौ, सु घृत की गंध आवति है. यह बात सुनि, डेवक रूठौ, अरु कहनि लाग्यौ कि, जा घर की धनियानी मुख सूंघै, तहां रहनौं भलौ नाहीं. पुनि, समुद्रदत्त में उन दोऊन कौं मनायौ. तातें हौं कहति हौं कि, आपत्य समय जाकी बुद्धि फुरै, सोई चतुर. बज्रदि यज्ञविघ्न बोली, जो भावै सो होय, चिंता को करै? आगै, धीवर में आय, आर वा सरोवर में नाख्यौ, अरु वे दोऊ बच्चीं; तब उत्पन्न मति सुतक होय रही. वाकौं मछी जानि, धीवर में आर तें बाहर काढि राख्यौ. पुनि श्रीसर पाय, वह पानी मांहिं आय गिरी. यज्ञविघ्न कौं भावी कौ भरोसौ हो, सो धीमर के बस परी. तातें हौं कहतु हौं, जौ आगतविधाता की भांति उत्पात तें पहिले भाजै, सो भलौ. बज्रदि हंसनि कही, तुम कैसें बचिहौ? उनि कही, मित्र! तुम दोऊ ऐक लकरी दोऊ घां तें पकरौ, औ हौं बीच तें गहौं, तब लै उडौ. पुनि हंस बोले, बंधु! तुम नीकी कही; पर हमारे जानि, जैसें बगुला के उपाय तें बालकपन लखायौ, तैसें तुम न करतु हौ. कमठ कही, यह कैसी कथा है? तहां हंस कहनि लाग्यौ;

उत्तर दिसा की गैल में, कावेरी नदी के तीर, गंधमादन पर्वत पै ऐक रूख; ता पर ऐक बगुला रहै; वाके नीचै बांबी, तामें कारौ नाग. जब वह बक अंडा देइ, तब सो सांप रूख पर चढि खाय लेइ. ऐक दिन, वह चिंता करि रह्यौ हो कि, काहू बूढे बगुला में यासों पूछ्यौ कि, रे! तू ऐसी दुचिता कौं है? इन यासों सब भेद कह्यौ. तद उनि कह्यौ

कि, अरे! तू ऐक उपाय कर कि, बहुत की माहरी खाय, औ ग्यौर के सिर तें लै, सांप की बांधी सौं बांति सी खाय. जब वह माहरी खात खात आवहै, तब वा सर्प कौं तू खायहै. यह बात सुनि, उनि वैसें ही करी; औ ग्यौर में आय नाग कौं खायो; पर साथ ही पेड पै चढि, वाके अंडा हू खाये. तातें हौं कहतु हौं कि, ऐसो बल जिन करौ, जामें आपनौं बिनास होय. जौ तुम लकरी पकरि लटकि रहौ, औ कोऊ कछू कहै, वा मेर तुम रिसायकै उतर देउ, औ मुंह तें लकरी छूटै, औ नीचे गिरौ, तौ हम कहा करैं सो कहौ? उनि कही, हौं कहा बावरौं हौं, जु बोलिहौं! इननि कही, भाई! तुम जानौं. इतनौं कहि, वे दोऊ हंस वाकौं वाही भांति लै उडे. कछुआ कौं लौठिया में लटकत देखि, अहेरी बोले, देखो रे! या कछुआ कौं दै पकी लिये जातु हैं. ऐक बोल्यौ, जौ यह गिर परै, तौ भूंजि खाउ. दूजे नें कही, मैं घर लै जाउं. यह सुनि, कछुआ सों रह्यौ न गयौ; तब क्रोध करि बोल्यौ, तुम पथरा खाउ. इतनी कहत, लकरी तें छूटि, तरै गिरयो; अहेरियन मारि भक्षन कियो. तातें हौं कहतु हौं, जो मंत्री कौ कह्यौ न माने, सो दुख पावै. आगे, ऐक बगुला आयो; तब चकवा बोल्यौ, महाराज! यह वही बगुला है, जाहि पहिले पठायो हो. यह कहतु है, गढ में आग मेघवरन काग नें लगाई; अरु वह गीध कौ पठायो आयो हो. बहुरि राजा हंस कही, शत्रु के उपकार, औ प्रीति की प्रतीति, कबहू न करिये; जौ करिये, तौ जैसें रूख कौ सेवनहारो गिरके पछताय, तैसें पछतइये. बहुरि बगुला बोल्यौ, महाराज! यहां तें जब मेघवरन गयौ, तब चित्रवरन नें कह्यौ, अब मेघवरन कौं

कर्पूरदीप कौ राव दीजै, अरु या कौ दुख दूर कीजै. कह्यौ है, "जो सेवक कछु पाय, स्वामी कौ काज करि आवै, ताकौ तबही भलौ कीजै." मंत्री कही, महाराज! यह उचित नाहिं, काहि चोर कछु देउ, अरु मेरी बात सुनि लेउ. कह्यौ है, "जाकौ जितनौं मान, ताकौं तितनौं दान." नीच कौ उपकार करनौं, जौ बालू मांहिं घी डारनौं, बराबर है; मुनि जौ नीच कौं बढ़ावै, तौ मुनेश्वर की भांति होय. राजा कही, यह कैसी कथा है? तब मंत्री कहनि लाग्यौ;

गौतम ऋषि के तपोवन मांहिं महातपी नाम ऐक मुनि रहे; ताके आश्रम में काग के मुख तें छूटि, मूसा कौ विषु गिर्यौ. ताहि देखि, दया करि, मुनि में आपनें निकट राखि, नाम सुधाच, बड़ौ कियौ. तब ऐक बिलाव वाके खोजे की घात में आयौ करै, यह देखि, मुनि में मंत्र करि, वाकौं बिलाव कियौ. फेरि ऐक स्वान आवत खायौ; बहुरि वानें वाहि स्वान कियौ. पुनि ऐक सिंह आयौ करै; तब जिय ताहि सिंह बनायौ; अरु जिय मन मांहिं मूषा ही करि जानें. यह चरित्र देखि, गांव के लोग कहनि लागे, देखो रे! यह मूसा तें सिंह भयौ, सो या मुनि कौ प्रसाद है. या बात कौं सुनि, या सिंह में निज मन में विचार्यौ कि, जौलौं यह मुनि रहैगौ, तौलौं सब लोग मोहि ऐसें ही कहत रहैंगे; तातें या मुनि कौं मार खाऊं, तौ यह कलंक छूटै. ऐसें वह जी में ठानि, मुनि के खानि कौं चल्यौ. तह मुनि नें वाकी अंतरगति जान, पुनि वाहि मूसा कौ मूसा बनायौ. मानें हौं कहतु हौं कि, महाराज! नीच कौं उच्च पद कबहू न दीजै. यह बात सहज नाहिं, सुनौ! जैसें ऐक कमला में मालती खात खात,

ORIENTAL OXFORD INSTITUTE

नवें मांस खान की इच्छा करि, आपनों गरो कटायो, कहूं तैसें न होय। राजा कही, यह कैसी कथा है? पुनि मीध कहतु है;

मालव देस में पद्मगर्भ नाम सरवर; तहां ऐक बूढो बगुला असमर्थ आप कों उद्देगी सो जनाय रह्यो करै. वाहि दूर तें देखि, ऐक कैंकडा नें पूछ्यो कि, भाई! तू दुखी कौं है? अर अहार छोडि, उदास ह्वै काहें बैठि रह्यो है? उन कही, बंधु! मेरो जीवन तो माछरी तें; सो धीमर कहतु है कि, काल सकारे आय, या सरोवर की सब माछरी मारिहों, या दुख तें मैं आज ही तें अहार तज्यो. यह सुनि, वा तडाग की माछरियन आपस में कह्यो कि, या समें बगुला हमारो हितू सो जनातु है, अर अब याही सों आपनों बचाव हू दीखतु है. कह्यो है, "जो उपकार करै, तो प्रभु हू तें संधि करिये; कौंकि, उपकार है, सो मित्राई को कारन है." आगे, माछरियन बगुला सों कह्यो कि, तुम काहू भांति हमें राखि लेउ. उन कही, तिहारे राखिवे को ऐक उपाय है कि, जो मैं तुम्हें और सरोवर में ले जाऊं, तो बचो. विनति कही, सोई करो. पुनि वह बगुला ऐक माछरी मुख में ले जाय, औ वाहि खाय आवे, बहुरि लै जाय. ऐसें ही सब माछरी खाई. तब ऐक कैंकडा नें हू बगुला सों कह्यो, मोहू कौं ले चल. यह नयो मांस खाय को मनोरथ करि, वाहू कौं ले चल्यो, अर जहां बैठि माछरी खाई ही, तहां ले जाय धर्यो. माछरीन के कांटे ज्यों उरे देखि, कैंकडा नें विचार्यो कि, मृत्यु तो दीखति है; पर ऐसो कह्यो है, "जौलों उरिये, तौलों भय; अर जब भय आवो, तब मरिये, कै मारिये." कौंकि, मूढ मरिये,

तौ मन में पछतावौ न रहै. ऐसें बिचारि, बिन बल करि, बगुला कौ गरौ काटि डार्यौ; बक मर्यौ. तातें हौं कहतु हौं कि, अपूरब बात करनौं कबहू न बिचारियै; खोटौ खुटाई नहीं तजतु. पुनि चित्रबरन कही, अहो! मेरे मन में ऐसौ आयौ है कि, मेघबरन कौं यहां कौ राज दीजै, तौ घर बैठे आछे पदारथ लीजै. गीध कही, महाराज! अनभई बात कौं बिचारि, जो सुख मानें, सो दुख पावै; जैसें कुम्हार के भांडे फोरि, ब्राह्मन नें दुख पायौ. राजा कही, यह कैसी कथा है? तहां गीध कहतु है;

कोटर नगर में ऐक देवसर्मा नाम ब्राह्मन रहै. तिन मेष की संक्राति में काहू यजमान तें ऐक करुआ साठू कौं भर्यौ पायौ; सो लैकरि, राचि कौं, काहू कुम्हार के घर रह्यौ, अरु करुआ वाके बासननि पर धर्यौ. तब निज मन माहिं बिचारनि लाग्यौ कि, या साठू कौं बेचि सात डमरी पाऊंगौ, ताकौ ककु श्रौर ख्याऊंगौ; वाहि बेचि श्रौर, श्रौर बेचि श्रौर. या भांति जब धन बढैगौ, तब साहिधर, सुथारी लै, बड़ौ व्यौपार करि, धन बढाय, चार बिवाह करिहौं. कह्यौ है, "ब्राह्मन चार बिवाह करै, श्रौ चारौं बरन ब्याहै; छत्री तीन, वैश्य दै, शूद्र ऐक ब्याहै." पुनि जब वे स्त्री आपस में लरिहैं, तब हौं जाकौ श्रौगुन देखिहौं, ताके मारिबे कौं ऐसें लौठिया घालूंगौ. यह कहि, ज्यौं लौठिया घाली, त्यौं सतुआ के करुआ समेत उनि कुम्हार के भांडे फोरे. बहुरि क्रहनि लाग्यौ कि, हाय! मेरौ कियौ करायौ घर गयौ! आगे, भांडे फूटे देखि, कुम्हार हू नें वाके सब कपरा खोस, बाहि तिरस्कार करि, घर तें निकार दियौ.

तातें हौं कहतु हौं कि, आगे कौ मनोरथ करै, सो दुख

पावै. पुनि हंसकरि राजा में गीध सों पूछी कि, अब कहा करनौं उचित है, सो कहौ. गीध बोल्या, महाराज! जो मंत्र राजा चूकै, तौ मंत्री मूरख कहावै; जैसें सांकरी गली में हाथी न चलै, तब महावत कूढ कहावै. ताते हौं कहतु हौं कि, गढ तौ तिहारे पुन्य प्रताप तें, औ हमारे उपाय सों, हाथ आवैगा; अरु तिहारी जीत हू जगत में जागी; पर अब आपनें देस कौं चलौ तौ भलौ; जातें बरषाकाल मूंड पर आयो; औ बैरी बराबर कौ है; यातें जो अब अटकिहौ, तौ पराई भूमि में तें निकसनौं कठिन व्हैहै. तातें मेरे जानि राजा हिरन्यगर्भ तें सुख सों मिलि, हलभल करि, निज देस कौं पधारियै. कह्यौ है, "जो मंत्री धर्म राखै, सो राजा कौं सुहाती अनसुहाती कहै; औ राजा हू बिचारे अबिचारे प्रमान करै; ऐसौ मंत्री राजा कौ हितकारी जानियै." पुनि कह्यौ है, "जो आपनें समान होय, तासों प्रीति करियै;" कौंकि, लरनौं खांडे की धार है, यह होऊ औरु तबहु है. पुनि युद्ध में जूझिवे की मनें, जिय, धन, जन, कीरत, औ अपनपौ, प्रभु के अनमुख होहु के हाथ देनौं होतु है. पुनि राजा कही, जो यह बात ऐसें ही ही, तो तुम प्रथम ही कौं न कही, जो घर ही बैठ रहते? मंत्री बोल्यो, महाराज! हमारी बचन तुम आदि अंत सों न मानौ; मेरौ बिचार बिषइ करनि को न हो; कौंकि, राजा हिरन्यगर्भ के गुन प्रीति करिवे जोग हैं, वासों बैर न बूझियै. कह्यौ है, "जो सत्यवंत, बलवंत, धर्मात्मा, प्रसिद्धित, औ अनेक संग्राम जीत्यो होय, के जाके भाई बंधु अधिक होंय, तातें युद्ध न करियै;" कौंकि, सत्यवंत आपनौं देस बिगारै; बलवंत पै कछु बस न चलै; धर्मात्मा जीत्यो

न जाय; आपत्ति में वाकी धर्म होय सहाय; प्रतिष्ठित के नाम ही तें लोग परांय; जिन अनेक युद्ध जीते हौंय, जाकी धाक ही सों सब डर जांय; औ जाके भाई बंधु अधिक हौंय, वह कबहू न हारै. यातें हौं कहतु हौं कि, महाराज! अब संधि करिये; कौंकि, ये सब गुन राजा हिरन्यगर्भ में हैं. इतनी बात सुनि, राजा हंस को दूत नें आपनें राजा तें जैं की त्यौं आय कही. तब चकवा नें दूत सों कह्यौ कि, भाई! यह तौ तुम अति मंगल की बात सुनाई; पुनि आय समाचार सुनावो. दूत गयौ; तब राजा हंस नें चकवा सों पूछी कि, तुम काहे कों मंगल मान्यौं सो कहो? मंत्री कही कि, महाराज! कह्यौ है, "इतनेंन तें संधि न करिये, बालक, वृद्ध, रोगी, लोभी, कायर, वैरागी, देव गुरु निंदक;" कौंकि, बालक को तेज अति अल्प, तातें दंड औ प्रसाद न कर सकै; यातें वाकौ साथ कोऊ न देइ. बूढौ औ रोगी उछाह करि हीन रहै; ताहि सहज ही मारिये. लोभी अंत संधि करै; यह जानि, वाकें संग कोऊ न करै. कायर आप ही रन तें भाजै. वैरागी सब तें उदास रहै, काहू बात में मन न देइ, सो आपही हारै. देव गुरु निंदक, अधर्म तें आप ही आप नष्ट होय; तातें ऐसे रिपु कौं युद्ध करि मारिये. पुनि कह्यौ है, "सो राजा विद्यावान होय, ब्रह्म विद्या जानें, देस काल पहिचानें, आपनौं परायौ जानें, गुन औगुन मन आनें, प्रभुता सहित रहै, जहां जैसो उचित, तहां तैसो कहै, नीति करि सांच भाषै, चाव में काहू की कान न करै, मंत्र सदा गुप्त राखै, सो राजा समुद्रांत पृथ्वी कौ राज भोगै." इतनौं कहि, बहुरि चकवा बोल्यौ, महाराज! जो इन गीध मंत्री नें संधि करवे की कही,

पर राजा चित्रवरन अति अभिमानी है, वह वाकी कह्यौ न मानिहै. कह्यौ है कि, "भय बिन प्रीति न होय; अरु संधि किये दोऊ ओर कुशल है." यासों मेरे मन में ऐक बात आई है, सो होय तौ भलौ कि, संगलदीप कौ राजा सारस मेरौ परम मित्र है, महाबल वाकौ नाम; ताकौं हौं लिखौं कि, वह चित्रवरन के जंबूदीप पै जाय मडराय; अरु ग्हां तुम आपनी सैना कौं जोरि, वाकी सैना कौं पीर उपजाओ; दिन रात उठत बैठत निकरत पैठत दबाओ, तौ जै पाओ. कह्यौ है, "दोऊ ताते हौंय तौ, मिलैं लोह की भांति." राजा कही, नीकौ जानौं सो करौ. तह चकवा नें बिचित्र नाम बगुला कौं पत्र दै, संगलदीप पठायौ; अरु वहां पाती पावत प्रमाण, सारस चढि धायौ. आगै, गीध मंत्री नें राजा चित्रवरन सों कह्यौ कि, महाराज! यह मेघवरन काग गढ में अनेक दिन रह्यौ, याहि पूछौ जु, राजा हंस प्रीति करवे जोग है कै नाहिं? तब राजा नें काग सों कह्यौ कि, अहो! राजा हंस, औ वाकौ मंत्री कैसौ है? काग बोल्यौ, महाराज! राजा हंस साक्षात युधिष्ठिर है; अरु मंत्री चक्रवाक की समान चतुर दूजौ पृथ्वी में नाहिं. राजा कही, तब वाहि कैसें उडकायौ, अरु ग्हां कौन प्रकार रहन पायौ? काग बोल्यौ कि, महाराज! राजा वाकी प्रतीत करै, ताहि उडकावनैं कितेक बात है? जैसें आकी गोद में सोवै, औ बोटू मारै, तौ सोवनवारे कौ कहा बसाय? चकवा नें मोहि देखत ही पहिचान्यौ हो; पर राजा हंस नें मंत्री कौ कह्यौ न मान्यौ; ताही तें मैं वाहि ठग्यौ, अरु ग्हां रहनि पायौ. महाराज! राजा हंस बडौ साहसी औ सत्यवादी है. कह्यौ है, "जो आप सत्यवक्ता होय, सो और कौं ह्व आप

हौं जानें," जैसें ऐक सत्यवक्ता ब्राह्मन मैं औरं की बात सत्य मानि, बोकरा खोयौ. राजा कही, यह कैसी कथा है? तब वाने कहनि लाग्यौ;

गौतमारन्य में ऐक ब्राह्मन यज्ञ के निमित्त बोकरा माथे लियें आवतु हा; वाहि तीनें ठगनि देखि, बोकरा लेन कौं आपस में मतौ कियौ; अरु वे तीनौं साध कौं भेष बनाय, तीन ठौर जा बैठे. जब वह ब्राह्मन पहिले साध के निकट गयौ, तब उन कही, अरे ब्राह्मन! यह कूकर माथे धरि काहे लियें जातु है? उन कही, कूकर नाहिं, यज्ञ कौं बोकरा है. यह सुनि, वह साध चुप रह्यौ. आगें, दूसरे के पास गयौ, पुनि उन यह कह्यौ; रे देवता! मंडपेखान कौं पढ़ावौ? इतनौं सुनि, इन बुरौ मानि, वाहि खीझ तें उतारि दीन्हौं, अरु संदेह करतु चल्यौ कि, जो देखतु है, सो वाहि कूकर कहतु है; परं मेरी दृष्टि में तौ बोक भनाहु है. ऐसें सोचतु सोचतु वह तीजे के निकट जाय पहुंच्यौ; तब उन यह कह्यौ, अहो विप्र! कूकरा सिर तें डारि दै, तें यह कहा अनर्थ कियौ, जु खान मूंड पै धरि लियौ? यह बात वाके मुख तें सुनत प्रमान, वाहि कूकर जानि, विप्र नें माथे तें पटक, आपनौं पंथ लियौ; अरु तिननि कोक सौ आपनौं मनोरथ पूरौ कियौ. तातें हौं कहतु हौं कि, दुष्ट के वचन तें साध की हूं बुद्धि चलै. बहुरि, जैसें चित्रवरन छंट कौं सिंह नें मारि खायौ. राजा पूछी, यह कैसी कथा है? पुनि वाचस कहतु है;

ऐक वन में मदोत्कट नाम सिंह; ताके तीन सेवक; ऐक तेंदुआ; दूजौ काग; तीसरौ खार. बिन तीननि ऐक दिन वा वन में छंट देख्यौ; तब उननि वाहि पूछ्यौ, तू कहां तें आयौ? उन कही, मैं साथ भूलि आयौ हौं. यह सुनि, बिन

तीननि वाहि सै जाय, सिंह सों मिलायौ. सिंह नें ह्वा वाहि अभय दान दै राख्यौ, अरु चित्रवरन नाम दियौ. पुनि वह सबन के साथ हिलमिल रहनि लाग्यौ. किनेक दिन पाछै, बरषाकाल में, कई ऐक दिन की झरी लागी; त्यौं वा समय अहार न जुर्यौ; तब विन तीननि आपस मांहिं कह्यौ कि, भाई! अब कोऊ ऐसौ उपाय करियै जु, सिंह जंटहि मारै, तौ अहार खैवे कौं मिलै. तेंदुआ बोल्यौ, मित्र! वाहि तौ सिंह नें अभय दान दियौ है, सो कैसें मारिहै? काक कही, अहो! समर्थ पाय राजा ह्वै पाप करतु है; जैसें भूखी नागिनि आपनें अंडा खाय, भूख्यौ कहा न करै? कह्यौ है, "मतवारौ, असावधान, रोगी, वृद्ध, अधीर, कामी, क्रोधी, लोभी, भूख्यौ, डरयौ आदि, ये सब अधर्म कौं न जानें, न मानें." ऐसें बतराय, वे सिंह के निकट गये, अरु हाथ जोरि, दनमुख ठाढे रहे. तब उनि पूछी, कछु खैवे कौं पायौ? इननि कही, महाराज! बहुत जतन कियौ, पर कछु हाथ न आयौ. सिंह कही, अब कैसें बचिहौं? बहुरि काग कही, महाराज! आप हाथ आयौ अहार छोरतु हौ, तातें और कछु ठौर नाहीं मिलत. सिंह बोल्यौ, सो कहा? इन मुक, कान में कही, या चित्रवरन कौं मारि खायौ. उनि कही, जाहि मैं अभय दान दियौ, ताहि कैसें मारौं? कह्यौ है, "भूमि, सुवर्न, अन्न आदि दान बडे दान हैं; पर शरनागत कौ राखिवौ इन कृ तें अधिक फल देतु है." बहुरि काग कही, महाराज! तुम जिन मारौ; हम ऐसौ उपाय करिहैं जु, वह आप ही जीव दान करि, निज सिर तुम कौं देहै. यह सुनि, सिंह चुप ह्वै रह्यौ. तब काग नें वाकौ मनोरथ जानि, कपट करि, चित्रवरन सों कह्यौ कि, तोहि तौ राजा

नें अभय दान दिया है; परंतु या समय तुम विन तें अहार की मनुहार करौ, तौ राजा तुम तें अति प्रसन्न होयगो. ऐसें वाहि फुसलाय, सिंह पास लै जाय, उन तीननि हाथ जोरि कह्यौ, महाराज! यह चित्रवरन कहतु है कि, अहार ता कहं नाहीं मिलतु; औ तुम अनेक दिन के भूखे हौ, तिहारौ दुख मो पै नाहीं देख्यौ जातु; तातें तुम मोहि मार खाओ. कह्यौ है, "राजा तें प्रजा की रक्षा है; प्रजा कौ मूल प्रजापति है; अरु मूल रहै तौ डारि पात फूल फल आप ही में होंय." पुनि सिंह कही, अरे! जल मरिबै, सो भलो; पर ऐसो कर्म न करिये. जब खार बोल्यौ, महाराज! ऐसें ही कह्यौ है. तब तौ चित्रवरन कू नें सिंह की दृढता जानि, मनुहार करि कह्यौ, महाराज! आप मेरौ सरीर खाओ. इतनी बात वाके मुख तें सुनत ही, सिंह में वाहि दौरि मार्यौ, अरु सबनि मिल भक्षन कियौ. महाराज! तातें हौं कहतु हौं कि, दुष्ट के उपाय औ उपदेस सों साध कू की मनसा डिगै. बहुरि राजा चित्रवरन बोल्यौ, अहो मेघवरन! तुम इतेक दिन अजुनि माहिं कैसें रहे, अरु कौन भांति उन तें तुम तें प्रीति भिभी? वायस बोल्यौ, महाराज! कह्यौ है कि, "स्वामी के काज अजु कू कौं माथे चढाइये, औ गिराइये, ऐसें, जैसें नदी पाय धोय धोय, रूख कौं गिरावै." पुनि जो सुबुद्धि होय, सो तो आपनें प्रयोजन के निमित्त वैरी कू कौं माथें चढाय, निज काज साधै; जैसें बूढे सर्प ने सिर चढाय मेंडुक खाये. राजा कही, यह कैसी कथा है? तब काग कहतु है;

काहू बन में ऐक अति बूढो मंदविष नाम नाग रहै, सो आहार कौं फिर न सकै; तातें सरोवर के तीर पड़ो

रहै. काह दिन, ऐक दादुर में दृष्टि देखि, दूर में कह्यो, अहो! तुम जो आहार नहीं खोजत, परे ई स्थान है, सो कहा है? उन कही, हौं कहां जांउ, मैं तो अभागे कौं को पूछत है? इनकी सुनि, जिन दृष्टि आश्चर्य्य जानि, कह्यो कि, तुम आपनी अवस्था कहौ, तब सर्प कहनि लग्यो;

या ब्रह्मपुरी में कौंडिन्य नाम ब्राह्मण, सहो बीस वर्ष को पुत्र पत्नी गुनी में आपनें अभाग तें उसो; तब कौंडिन्य दुर्धीण नाम पुत्र कौं सहो देखि, सोग सों मूर्छि, भूमि पै गिरयो, पुनि वाके भाई बंधु, मैं मांड के सोग बड़ बाय कुरे. कह्यो है, "सुख दुख, भयें अवसें, दुख अवुझ में, मे इष्ट मित्र बंधु हैंय, दे सुधि लेंइ." यातें, ऐक कपिलदेव नाम ब्राह्मण नें आय, याहि बहुभाय बुझायबे कह्यो, अरे कौंडिन्य! तू अति मूर्ख है जु अब सोच करत है, कौंकि, संसार की तौ यही रीति है कि, इक उपजो, उन सहो यातें याको सोक कहा? देखो! जैसा पंडित युधिष्ठिर से पुरुष न रहे तौ चौर की कहा चली? कहनि, देहधारी सों मृत्यु ऐसें लगी रहति है कि, जैसें संपत में विपत, प्राप्ति में क्षति, संयोग सें वियोग, जात मे स्थिति, पुनि यह देह जिन जिन सों बढ़ति है, सोई जल में काहे घट घटै. कह्यो है, "शरीर, जोबन, रूप, प्रभा, दृढ़ता, सिचाई, औ ऐक ठौर वो बास, ये सब अथिर हैं;" यातें जो ज्ञानी बहुत पंडित होय, सो दुख के गये को सोच न करै, यह सुनें! जैसें नदी के प्रवाह में कहां तहां के काठ आय मिलत हैं, तैसें या संसार के जीव हैं; इन तें जेतो बनेइ कीजै, तेतो सुख होय; कौंकि, जग कोऊ काहू को साथ नाहीं निबहत; यह जो आपनी ही देह साथ न होय, तौ औरन की कहा

चली; कह्यो है, "माया लिये यों दुख बढै, यों कुपथ लिये रोग; पुनि, काल ऐसें चल्यो जातु है, जैसें नदी को वेग." या सों या संसार की माया छांडि दीजै, अरु साध की संगति कीजै; संगति साध की सब सुख सों अधिक सुख देतु है. (दोहा) तीरथ मल जप देवता, सालग्राम इक खेत; काल पाय फल देतु हैं, साध सद्य फल देत. अरु सिंह, सुनौ! जैसें बरषाकाल में चारु मेघन ढीले वै जातु हैं, तैसें वृद्ध अवस्था में या शरीर के दृढता बल कहि, पुनि कौंडिन्य सों यहि उपदेश में कह्यो, भाई! अब दुख जिय करौ, अपनें प्रान राखने को उपाय करौ. यह सुनि, कौंडिन्य उठि बोल्यो, बंधु! अब या कूप रूप कूप में न रहिहौं; बन में जैहौं. पुनि यहिप्रदेव कही, भाई! अनुराग सों बन में देख, औ उदासी सों घर ही में मोक्ष कह्यो है, "जो जन फल की वासना छांडि, विचार करै, ताहि बन औ घर समान है; अरु मौन, ऊर्ध्वासन में रहि, दुख सहि, धर्म, कर्म, दान, ध्यान, व्रत, यज्ञ, करै, औ सब जीव पै दया राखै, ताही को तपसी जानिये." पुनि, जो प्रान राखने को अहार, संतान को मैथुन, करै, औ सत्य बचन भाषै, सो दुख रूपी समुद्र सों तरै. कह्यो है, "आत्मा रूपी नदी के संयम है, पुन्य तीर्थ, सत्य जल, शील कछार; दया तरंग; तामें जो स्नान करि, अंतःकरण शुद्ध करै, सो जन्म, मरन व्याधि तें छूटै." यह संसार सार नाहीं; मनुष दुख को दुख करि मानत हैं; जैसें रोग को वाक्यिहारो रोट पाय सुख मानें; तैसें मनुष की मति है. बहुरि कौंडिन्य बोल्यो, भाई! तुम सांच कहतु हो; यह बात ऐसें ही है. दृढौं कहि, बिन सांसी सांस लै, मिलि तो यह साच दिखै कि; हू मेंमुकन को साहब होउ;

अरु वानें आप गृहस्थाश्रम छांडि, सन्यास धर्म लियो. तातें अब मैं वाको दियो आप भुगतवे कौं आयो हौं. यह बात सुनि, दादुर नें आपनें राजा सौं जाय कही; तब जलकुंद नाम मेंडुक मेंडुकन को राजा बाहर आयो. पुनि नाग नें वाहि प्रनाम करि मूंड पै चढायो, अरु ताल के चहुं थां लै फिरयो. दूसरे दिन, जब वह आय चल्यो, तब वह चल न सक्यो. पुनि दादुर बोल्यो, उतावलो चल. सांप कही, स्वामी! मो पै मारे भूख के चल्यो नाहीं जातु. उन कही, हू मेरी आज्ञा तें वेगा के मेंडुक खायो कर. बहुरि सांप नें हाथ जोरि कह्यो, महाराज! तुम मेरी बडी सहायता करी. यौं कहि, पुनि खानि लाग्यो. कितेक दिन में, सब मेंडुकन कौं खाय, उनि जलकुंद कौं हू खायो. तातें हौं कहतु हौं कि, जो चतुर होय, सो आपनों कार्य्य साधवे के सत्रु हू कौं माथे चढावतु है. महाराज! ऐसें ही मैं हू राजा हिरन्यगर्भ सौं प्रतीत बढाय, गढ में रह्यो. आगे, राजा चित्रवरन नें गीध सौं कही कि, बाबा जू! अब राजा हंस हमारो होय रहे, तौ वाकौं बसाइये; नातो आपनें लोग.

यह बात राजा चित्रवरन मंत्री नें कहनि न पायो होकि, ऐक दूत नें आय कह्यो, महाराज! संगलदीप को राजा सारस तिहारे देस पै चढि आयो है; जो नगर बचायो चाहो, तो वेग सुध लेउ; नातो रहनों कठिन है. यह सुनि, राजा मौंन गहि रह्यो. अरु गीध मंत्री नें मन में कह्यो कि, होय न होय, यह चकवा को काम है. पुनि राजा मयूर क्रोध करि बोल्यो कि, यह काम रहे; चलो, प्रथम वाही कौं खेद काढैं. गीध कही, महाराज! अरद काल

के मेघ की भांति वृथा न गाजिये, बल करि दिखाइये. नीति तो यों है कि, ऐक ही बेरि दिस दिस के लोगनि सों बैर न करिये. कह्यो है, "अनेक चेंटी इ मिलें, तो गज कौं मारैं." तातें महाराज! मेरे जान तो राजा हंस तें बिन प्रीति किये ह्यां तें निभनौं इ कठिन होयगो; कौंकि, चलत ही शत्रु पीछौ करिहै; यातें बिचार करि कार्य्य करौ; बिन बिचारयौ काम किये पाछे पछितावौ होतु है; जैसें बिना बिचारे न्यौर मारि, ब्राह्मनी पछताई. राजा कही, यह कैसी कथा है? तब गीध कहतु है;

उज्जैन नगरी में ऐक माधो नाम ब्राह्मन; ताकी स्त्री नें पुत्र जायौ. सु ऐक दिन वह ब्राह्मनी पुत्र की रखवारी मांहि ब्राह्मन कौं राखि, आप नदी न्हैवे कौं गई; अरु ताही समय पंडित कौं राजा कौ बुलावौ आयौ; तब वानें बिचारयौ कि, जौ हौं न जाउंगौ, तौ राजा जो दान देइगौ, सो औरु कौऊ ले जायगो. कह्यो है, "लेन देन के काज में उतावल न करिये, तौ वह औसर बीते हाथ न आवै;" औ जो जाऊं, तौ बालक कौंन कौं दै जाऊं? यह बिचारि, वह ब्राह्मन, ऐक बऊत दिन कौ पोष्यौ न्यौर हो, ताहि वा छोहरा के निकट रखवारी मांहि राखि, आप राजा के ह्यां गयौ. आगै, मौडा के निकट ऐक सर्प आयौ, ताहि न्यौर नें मार खायौ. जब ब्राह्मनी आई, तब न्यौर दौरि वाके पायन पै गिरयौ. उन याकौ मुंह लोहू भरयौ देखि, निज मन में जान्यौ कि, इन चांडाल नें मेरौ पूत मारि खायौ. यह समझ, ब्राह्मनी नें न्यौर कौं मारि डाल्यौ. पुनि आगू जाय देखै, तौ छोहरा खेलतु है, अरु वाके निकट सांप मर्यौ पर्यौ है. तब वह पछतायकै बोली कि, हाय! मैं पापिन यह कहा कर्म कियौ

नु, बिन देखी भाखी बापरे मोर को जीव बिगरा? तातें हौं कहतु हौं कि, महाराज! बिन बिचारे कबहू कछु काज न कीजै; अरु काम, क्रोध, लोभ, मोह, मान हीजै; कीजिये, इनही दोषन तें राजा हनु, अंजीजय, रावण, औ कुंभकर्ण, मारे गये. अरु देखो! मनु मांधाता हरिश्चंद्र, परशुराम औ अंबरीष में जितेन्द्री होय, अनेक दिन राज कियौ. तातें हौं कहतु हौं कि, महाराज! जौ मेरो कह्यो मानौ, तौ वो राजा तें प्रीति करि चलो. कह्यो है, "मज्जन तो परारे भूमि मांहिं जाय डेरा करबो कठिन; अरु जिये पाछै उठावनो अति कठिन है." यातें मार्ग जानिये कों चार उपाय कहे हैं; साम, दान, दंड, भेद; पर इनमें साम उपाय सों बेग काम सिद्ध होतु है. राजा कही, प्रीति उतारिबो कैसें होय? गीध बोल्यो, बेग ही होय. कह्यो है, "साध देखत ही मिलै, औ मूरख कछू न समझै; जो ब्रह्मा हू बाहि चितावै, तौहू न जानें, न मानें;" अरु महाराज! राजा हंस तो बड़ो साधु है, औ वाको मंत्री सर्वज्ञ नाम चकवा अति चतुर है; मैं काग के कहे तें उनकी करनी औ करतूत जानी. कह्यो है, "जाहि न देखो होय, ताके गुन औ कर्म सुनि सुनिकै वाहि पिछानिये." राजा कही, अनेक बात करिबे तें कहा प्रयोजन? अब जो उचित होय, सो करो. या बात के कहत ही, गीध राजा तें आज्ञा लै, मठ में गयो, अरु आपनें आवन को समाचार चकवा सों कहि पठायो. बातें सुनत ही, आपनें राजा कों जा सुनायो; तब राजा हंस नें चकवा सों कह्यो कि, अब जो गीध के पाछै और कटक आवै, तो कहा करिबै? चकवा बोल्यो, महाराज! यह संका करबे की ठाम नाहिं; कौंकि, यह गीध बड़ो

पुनरुक्ता है, यातें कछु चिंता नाहिं. कह्यो है, "बिन भय की ठार संदेह करहीं कुलटा को काम है." इतनी कहि, चकवा चं बाय, गीध कों साथ, राजा हंस पैं गढ के द्वार आगे मिलायौ. तद राजा हंस नें गीध कों आदर दै बैठायौ. पुनि गीध बोल्यौ, महाराज! यह गढ आपको है, याहि हिंसो चाहो ताहि देउ. हंस कह्यौ, यह बात ऐसें ही है. बहुरि चकवा बोल्यौ, सखा! हमारो तिहारो ऐक ही है; पर अब कछु अधिक कहिवे को प्रयोजन नाहिं. गीध बोल्यौ, महाराज! नीति शास्त्र में कह्यौ है कि, "लोभी को धन दै वशी करावे; उग्र होय, ताकी करजोर स्तुति गावे; मूरख को कह्यो राखिये; पंडित तें सच्चा भाखिये; देवता की निष्कपट पूजा कीजे; मित्र बंधु कों अति आदर दीजे; सेवक सो स्त्री कों दाम मान दें वश करिये; तो या कठिन संसार में सुख सों दिन भरिये." यातें हौं कहतु हौं कि, जो उचित होय सो अब करिये. चकवा बोल्यौ, जो संधि की रीति है सो कहो, अधिक बात कहिवे तें कहा काम? पुनि राजा हंस नें कह्यौ कि, संधि के कितेक प्रकार हैं, सो कहो.

गीध बोल्यौ, धर्मावतार! हौं कहतु हौं, आप चित दै सुनिये. कह्यौ है कि, "अब बलवान पै अति बलवंत चढि आवे, अरु वा पर याको कछु बस न चलै, तब संधि उपाय करै." संधि के नाम; भूपाल, उपहार, संताप, संगति, उपन्यास, प्रतिकार, संयोग, पुरुषार्थ, अदृष्ट, जीवन, आत्मा, उपग्रह, परिक्रिय, उच्छिन्न, परिभूषन. अरु ये संधि गति हैं; समानता तें दै राजा मिलें, सो भूपाल संधि कहावे; दान दै प्रीति करै, ताहि उपहार संधि कहतु हैं; दासी दै मिलै, ताहि संताप संधि कहिये; पांच सात मिल, बीच में

परि, प्रीति करावैं, ताहि संगति संधि कहि गावैं; दै राजा ऐक ही काज करि, आपस मांहिं हित राखैं, सो उपन्यास संधि; अब हम इनकौ काज सारैं, पाछै ये हमारे काज आयहैं, ऐसें बिचारि जो मिलै, सो प्रतिकार संधि; ऐक ही शत्रु पर दै नरपति चढैं, अरु पैंडे में मिलैं, वह संयोग संधि; आपनें जोधान कौं साथ लै मिलै, वाहि पुरुषार्थ संधि कहैं; तुम वाहि मारौ, हम तिहारे ह्वै रहैं, यौं कहि मिलै, सो अदृष्ट संधि; भूमि दै प्रीति करै, वह जीवन संधि; प्रान राखिवे कौं सर्बस देय, ताहि आत्मा संधि कहैं; आपनौं कटक सेवा कौं पठावै, सो उपग्रह संधि; दै राजा आपस में बैर भाव राखैं, पुनि काहू शत्रु के घेरे में आय, दोऊ मिल जांय, सो परिक्रिय संधि; सारभूमि दै मिलै, वह उच्छिन्न संधि; जो द्रव्य उपजैगौ, सो तुम कौं दैहैं, पर निकट जिन आओ; ऐसें कहि मिलै, वाहि परिभूषन संधि कहिये.

इतेक बातें कहि, गीध बोल्यौ, महाराज! ये सब संधि कहीं; पर या समय उपहार संधि ही भली है; कौंकि, जो बलवंत आपनौं देस छांडि, गांठि कौ धन खाय आवै, सो बिन भेट लिये न जाय; तातें बिन दिये संधि न होय; अब धन दीजै, औ उपहार संधि कीजै. चकवा बोल्यौ, सुनौं! यह आपनौं, वह परायौ; ऐसौ जे बिचारतु हैं, ते अधम जन हैं; अरु उत्तम जननि कौ तौ ऐसौ बिचार नाहिं; वे तौ सब सृष्टि ही कौं कुटुंब जानतु हैं. कह्यौ है, "जे पुरुष पर स्त्री कौं माता करि मानें, औ दूजे के धन कौं माटी समान जानें; पुनि, सब जीवन कौ जीव आपनौं सौ गनें, तेई या जगत में पंडित औ धर्मात्मा हैं." बहुरि गीध कही, तुम यह

कहा कहतु हौ? सुनौं! मेरे जान, जिन संसार में आय, या क्षिनभंग देह का धर्म छांड्यौ, तिन सर्वस गंवायौ. कहतु हैं कि, "जैसें जल मांहिं पवन चले, चंद्र कौ प्रतिबिंब चंचल रहतु है; तैसें ही प्रानी कौ मन सदा अथिर रहतु है." तातें या मनुष कौं उचित है कि, देह की माया छांडि, आपनें कल्यान कौ काज बिचारै, अरु सदा सर्बदा सज्जननि की संगति करै; कौंकि, वासों धर्म औ सुख दोऊ मिलैं. या सों हौं कहतु हौं, जो मेरौ कह्यौ मानौं, तौ ऐसें ही करौ. कह्यौ है, "सहस्र अस्वमेध की समान सत्य है; पर जोखिये तौ सत्य ही अधिक होय." यातें हौं कहतु हौं कि, अब दोऊ नरपति सत्य बीच दै मिलौ, अरु उपहार संधि करौ, तौ अति उत्तम है; कौंकि, या में सांप मरै न लाठी टूटै. चकवा बोल्यौ, तुम नीकी बात कही. यह सुनत ही, राजा हंस नें रत्न, वस्त्र, अलंकार, द्रव्य, दूरदर्शी गीध कौं दियौ; अरु विन ह्वै लै, प्रसन्न ह्वै, सर्वज्ञ चकवा कौं साथ करि, राजा हंस सों बिदा होय, आपनें कटक कौं प्रस्थान कियौ. व्हां जाय, व्हां कौ सब वृत्तांत सुनायौ; औ चकवा कौं राजा चित्रवरन तें अति आदर मान सों मिलायौ; तब राजा नें ह्वै बडे मान सों पान औ प्रसाद दै, चकवा कौ बिदा कियौ. दूत चकवा राजा हंस के निकट आयौ; अरु उत गीध नें चित्रवरन कौं टेर सुनायौ कि, महाराज! तिहारी सब मन की बांछा पूजी, अब कुसल छेम आपनें देस चलौ. यह सुनि, राजा मयूर वहां तें चल्यौ, अरु आनंद तें आपनी राजधानी में पहुंच्यौ. दोऊ राजा आप आपनें देस में सुख सों राज करनि लागे. इतनी कथा कथ, विष्णुशर्मा बोल्यौ, महाराजकुमार! अब जो

कछु तुम्हें सुनिवे की इच्छा होय, सो कहो. राजपुत्रनि कही, अहो गुरुदेव! इस में तिहारे प्रसाद तें राजनीति के सर्व अंग आये; सुख पायो; अज्ञान गवायो; मन को खेद गवायो, मानों भयो जन्म भयो. इति संधि नाम चतुर्थ कथा संग्रहः संपूर्णः.

ग्रन्थप्रणामः.

विष्णुशर्मा कहीं, सुनिये महाराजकुमार! या कथा के पढ़े सुनें में, मनुष कठिनता के समुद्र कों ऐसें तरै, जैसें बानर आपणी बुद्धि सों तरयो. अर जो कपट सों मान लियो चाहै, औ अधूरे काम मांहिं मनोरथ वांछि रैयै, सो ऐसें ठगायो जाय, जैसें मगरमछ ठगायो गयो. राजपुत्रनि कही, वह कैसी कथा है? तब विष्णुशर्मा कहनि लागो;

समुद्र के तीर, काहू ठौर, ऐक जामण को पेड़ रह्यो; तापे रक्तमुख नाम ऐक बानर रह्यो. काहू धर्म, सागर की लहर को मार्यो, ऐक विकराल नाम मगरमछ वहां आयो, अर वृक्ष तरै कोमल बालू में जाय बैठो. तब बानर सों वाहीं कही, अहो! तू आज मेरो पाहुनो है, यातें मैं जंबू फल देतु हौं, तू मन भरि भोजन कर. कह्यो है, "दिढ़ होय के अनदिढ़, पंडित होय के मूर्ख, भोजन समय आवे, ताकों अतिथि धर्म कीजे." (दोहा) आवे भोजन के समय संतु सोर संसार; अतिथि जानि पूजा करैं अस में बरस उदार. आगे, वह मगर फल खाय, संतुष्ट भयो. पुनि नित आवे, नित जाय; भली भली बातें कहे सुनै; फल खाय, अर पाछे पाछे फल आपनी स्त्री के लिये ले जाय. ऐक दिन बानें पूछी, अहो मीत! तेरो अस्थानपास तुम कहां में खावतु हौ?

इन कही, मेरो ऐक परम मित्र रक्तमुख नाम वानर है, सो मोहि प्रीति सहित ये फल देतु है. पुनि वह बोली, जो ये अमृतफल नित खातु है, ताको करेजा अमृत सम होयगो; तातें तू वाको करेजा मोहि खाय दे, मैं वाहि खाय तृप्त होय, तोसों क्रीडा करौंगी. मगर कही, ऐक तो वह मेरो परम मित्र, दूजे फल को दाता; ताहि मैं कैसे मारिहौं? कह्यो है, "संसार में दै प्रकार के भाई होतु हैं, ऐक तो माजायो, दूजो मुख गायो; पर आपनें सहोदर भाई तें वाहि अधिक जानियै. बहुरि वह बोली, सुनि! अबलौं तो मेरो कह्यो तें कबहू न उलंघ्यो हो, पर आज तें न मान्यो; तातें मैं जान्यो कि, जाहि तू वानर कहतु है, सो नाहिं; वह वानरी है, तातें तू आसक्त भयो है; वाही के अनुरागतें दिन भर व्हां रहतु है, सो मैं जान्यो; याहीतें तू मेरे पास आय, वाही की बातें नित हंसि हंसि कह्यो करतु है; औ राचि कौं सोवत समें तेरो अंग सिथिल रहतु है; मैं अब बूझी कि, तेरो मन और नारि सों लाग्यो है; अधिक कहा कहौं, जब लौं आपनी सौत को करेजा न खाउंगी, तब लौं अन्न पानी न करौंगी, अरु प्रान दै मरौंगी. यह सुनि, हरि, मगर दीन ह्वै बोल्यो, प्यारी! हौं तेरे पाय परतु हौं, तू जिन रिसाय. यौं सुनि, वाहि अधीन भयो जानि, आंखनि में आंसू भरि बोली, अरे धूर्त्त कंत! आज लौं तो तें मेरे अनेक मनोरथ साधे; पर अब तू और सों नेह करि, मेरो निरादर करतु है; यातें तेरो पावन को परवो दूनों उर दाहतु है; अरु जो तेरो प्रेम वा सों नाहीं, तो क्यों न मेरो नेम पूरो करै? पुनि वह निज मन में कहनि लाग्यो कि, साधु जन सांच कहतु हैं; (दोहा) पाहन रेखर तहनि

हठ कुक्कट क्रोध सुभाव; नीच रंग यम ना मिटै कीनेऊ कोटि उपाव. तातें मोहि याके मनोरथ कौ यत्न करबौं बन्यौ. यह बिचारि, व्हांतें उठि, बानर के पास जाय, मगर अनमनौं व्है, बैठि रह्यौ. पुनि मरकट नें वाहि उदेगी देखि, कह्यौ, अहो! आज कहा है, जो तुम कछु भाषतु नांहिं, अरु चिंतित होय बैठि रहे हो! मगर बोल्यौ, मित्र! आज तेरी भाभी नें मोसों निठुर बचन कहि, कह्यौ कि, तू कृतघ्नी है, अरु काहू के उपकार कौं न मानतु है, न जानतु है; क्योंकि, ऐसे उपकारी कौं तू ऐक बेर हू आपनें घर नांहीं ल्यावतु; पुनि निर्लज्ज होय, वाके घर काहे खाय खाय आवतु है? अब अधिक कहा कहौं, जो तू मेरे उपकारी देवर कौं न ल्यावैगो, तौ मो कौं हू जीवतु न पावैगो. मित्र! यातें मैं तौ व्हांतें उदास होय, इत तेरे लैन कौं आयो; औ उत उन तेरे कारन कंचन रत्न तें घर संवार, पाटंबर छाय बिछाय, नाना भांति के पकवान बिंजन बनाय राखे हौंयगे; अरु पैंडारि पर बैठी, बापरी उत्कंठित बाट जोवति होयगी. बानर कही, अहो मित्र! भाभी नें यह बात तौ तुम तें सांच ही कही; क्योंकि, ऐसें औरु हू ठौर कह्यौ है, "मित्रता के छः लच्छन हैं, देनौं, लेनौं, निज दुख सुख कहिवौ, वाकौ सुनिवौ, वाके घर जीमनौं, आपनें गेह जिमावनौं;" ये बातें तौ प्रीति में अवश्यक चाहियें; पर हम बनबासी, तुम जल निवासी, तातें मेरौ जैवौं तौ व्हां नांहीं बनतु; पै तुम छपा करि, भाभी कौं व्हां लै आओ, तौ मैं वाके पाय परि आसीस लैउं. मगर कही, बंधु! हमारौ गेह जल मांहि नांहिं, जैसें समुद्र के कांठे इत तुम रहतु हो, तैसें उत हम; अरु जो तुम न जाओगे, तौ हमारौ गृह कैसें पवित्र होयगो?

तातैं तुम मेरी पीठ पर चढ़ि बैठ, मैं तुम्हें सुख सों ले चलौं. यह सुनि बानर कही, भाई! जो ऐसो है, तो अब विलंब जिन करो, मेरी पीठ चढ़ो. यह कहि बाकी पीठ पर चढ़ि बैठ्यो, अरु वह झील के बीच में पैठ्यो; पुनि चौंडे में आय, वेग चलनि लाग्यो. तब मगर बोल्यो, भाई! धीरे चलो, पानी की तरंग मोहि ठेली देति है. यह सुनि, मगर में निज मन में विचार्यो कि, अब तो यह बंदरा मेरी पीठ में तिस भर ह्वै गयो, सिथल सकल; तातें हौं आपनों मनोरथ क्यों न करौं, जो यह अंग सकल जानि, आपनों इष्टदेव भवै. ऐसें जी में ठानि, उलि बानर सों कही, मित्र! हौं स्त्री के कहे विश्वासघात करि, तोहि मारिवे कों लिये जातु हौं; सुख आपनों इष्टदेव भजो, अब जग की माया तजो. बानर कही, भाई! मैं आगी लौ ऐसो कहा अपराध कियो, जु तुम मोहि मारनि कों साथ लियो? मगर बोल्यो, अहो! तुम जिन अहित फल जातु हौ, बातें निहारो करेजा अहित बनाय होयगो; यह जानि, उन खेवे कों मनोरथ कियो है, पर बाके मनोरथ पूरवे कों मैं अं सिर पाप लियो है. कह्यो है, "अग्नि साख है जाको कर गहिये, ताको मन भायो काज करिये; यह पुरुष को धर्म है." या बात कों सुनि, रक्तमुख बानर में बाकी मूरखता देखि, उलि पुलि सों बाके मनोरथ पर मनोहर बचन सुनाये कि, मित्र! जो तेरो ऐसो ही विचार हो, तो तें मोतें यहां हीं क्यों न कह्यो, जो मैं आपनों करेजा अंबू तर में न राखि आवतो? यह तो मो मै आभी के बाम लागवे की बड़ी भेट ही. कह्यो है, "राज दार, देवदार, गुरुदार, सूनें हाथ जैवो उचित नाहीं;" पर हौं तो हृदय सून्य होय, या अगाध अंबु में तेरी गैल

चलो आयो, अरे सुनि! सब प्राणी कौं भय होतु है; क्योंकि, भय कौ निवास देह में करेजा है, याही तें जीव सोच करि चलतु हैं, आगले पाय कौं डार करि, पाछलौ पग उठावतु हैं, औ हम वनचर धरती पग हू न धरैं, ताही तें हमारौ नाम ब्रह्मा में शाखामृग धरौ है; सो आपनें सुखधर्म सों भय कौ निवास जो करेगा, ताहि निकारि, रुख के खोखर में धरि, निर्भय ह्वै, डारि डारि, दौरि दौरि, कूदि कूदि फिरतु हौं; अरे अबही तेरे संग आवत, आमन के खोडर में यत्न सों धरि आयौ; बिन हृदय तेरे साथ निर्भय ह्वै उठि धायौ. यद्यपि हमारौ हृदय विधाता में संसार की रीति तें बनायौ है; पर वह हमारे काहू काम कौं नाहिं, अरु तुम सोई चाहतु हौ; यातें उत्तम कहा, जो तिहारे काज आवै? कह्यौ है, (दोहा) "धन दैकै जिय राखिये, जिये ह रखिये लाज; धन दैजी दै लाज दै ऐक प्रीति के काज." इतनी बात के सुनते ही, मगर आनंद सों बोल्यौ, अहो प्रीतम! जौ ऐसी बात है, तौ आपनें करेजा मोहि दै, जु वा दुष्ट पत्नी कौ हट रहै; अरु तेरौ जीव बचै; मोहि मित्रद्रोह का पाप न लागै. इतनौं कहि, पाछौ फिर्यौ. पुनि वे दोऊ आप आपनें दृष्ट सुमरन लागे. कह्यौ है, "अधर्मी कौ मनोरथ दृष्टदेव भजे हू निष्फल होय." आगै, वानर आपनें पुन्य प्रताप सों तीर पै जाय, मगर की पीठ तें उतरि, खांबी खांबी डगैं भरि, जंबू वृक्ष पर जाय बैठ्यौ, औ मन में कहनि लाग्यौ कि, मैं आज नयौ जन्म पायौ जु, या दुष्ट के हाथ तें बचि आयौ. कह्यौ है कि, "जाकौ विस्वास जी में न आवै, ताकौ विस्वास कबहू न कीजै; याच कुपाच बिचारिये; जाकौ जैसौ सुभाव होय, तासों तैसें ही निबाहिये; अरु दुष्ट

कै मीठे बचननि पर न जाइये; कौंकि, वह आपनी घात ही सों कहै."

यह तौ ऐसें विचार रह्यौ हो, तामें मगर बोल्यौ, भाई! बैठि काहे रह्यौ? वह करेजा मोहि दै, मैं तेरी भाभी कौं जाय दैंउ. बानर कही, मित्र! अथाह जल में गयेतें श्रम भयौ है, तातें मोपै बोल्यौ नाहीं जातु. मगर कही, बंधु! पुरुष कौं कह्यौ है कि, श्रम जीत, परमार्थ पुरुषार्थ करै. यह सुनि, बानर रिसायकै बोल्यौ, अरे मूरख विश्वासघाती! तोहि औ तेरी मति कौं धिक्कार है! कौंकि, काहू के दै करेजा कहू होतु हैं? अब तू यहां तें जा, फेर जिन आवनौं. कह्यौ है, "जासों ऐक बेर जीव बचाइये, पुनि वाहि कबहू न पतियाइये; अरु जौ वाकौ बहुरि विश्वास करै, तौ निदान अनेक दुख भरि, निस्संदेह मरै." ये बातें बानर तें सुनि, मगर चिंता करि कहनि लाग्यौ कि, मैं अभागे यह कहा कियौ जु, काज बिन भये आपनौं कपट याके आगे कह दियौ! अब काहू भांति यातें विश्वास उपजाय, पुनि याहि दांव में लाऊं तौ भलौ. ऐसें मन में ठानि, हंसकै बोल्यौ कि, हे मित्र! तेरी भाभी कौं तौ या बात तें कछू प्रयोजन न हो; पर हौं हंसी की रीति तेरी प्रीति की परीक्षा लेतु हो; तुम मन में कछु जिन ल्याओ, औ मेरी गैल आओ. कपि कही, अरे दुष्ट जलचर! तू यहां तें जा, हौं आवन कौ नांहिं. ऐसें गंगदत्त हू नें कह्यौ हो कि, प्रिय दरसन तें कह्यौ कि, फेर गंगदत्त कुआ में आवन कौ नांहिं. मगर कही, यह कैसी कथा है? पुनि मरकट कहनि लाग्यौ;

काहू ऐक कुआ में, गंगदत्त नाम मेंडुक, मेंडुकन कौ राजा रहै; वाकौ कुटुंब तें बैर भयो, तब वह अरहट की

माल पै बैठि, कूप तें बाहर आय, बिचारन लाग्यो कि, अब कौन उपाय तें बैरियन मारि निष्कंटक राज करौं? यह बिचार करतु हो कि, वानें ऐक कारो नाग बिल में पैठतु देख्यो, अरु याहि वह प्यारो लाग्यो; तब बोल्यो कि, यासों प्रीति करि, अचुन कौ नाश करौं. कह्यो है कि, "रिपु मारिवे कौं अति बलवंत अचु सों स्नेह करिये; औ सबा के मारिवे कौं बाघ कौ बल धरिये; थोरो पराक्रम कबहू न करिये; नातो अवश्य हारिये." ऐसें जी में ठानि, सर्प के बिलद्वार पै जाय, पुकार्यो, अहो प्रियदर्शन! मेरो तुम कौं प्रनाम है, बाहर आओ. यह सुनि, वा सांप में निज मन में बिचार्यो कि, जो मोहि बुलावतु है, सो मेरो सजाती तो नांहि; क्योंकि, सर्प कौ शब्द नाहीं, औ न काहू सों मिचाई; यातें प्रथम याहि भीतर बैठे ही जानि लीजै, तब बाहर पाय दीजै. कह्यो है, "जाको शील सुभाव न जानिये, तासों बेग ही न मिल बैठिये." यह बृहस्पति कौ बचन है. अरु जो मैं तुरत ही बिन समझे बिल तें बाहर निकरौं, तो न जानिये कि, कोऊ बैरी मंचबादी पकरै; तातें याहि जान्यौं चाहिये. यौं बिचार, व्हांहीं तें बोल्यो, अरे! तू को है, जु मोहि टेरतु है? दून कही, हौं गंगदत्त नाम मेंडुक, मेंडुकन कौ राजा हौं; तोसों मेरी सहायता होगी, यातें मिचाई करन आयो हौं. सर्प कही, अहो! यह अनमिल संग है, तृन अग्नि कैसी मिचाई? पर अब तू मेरे घर आयो, यातें मैं कहा कहौं? कह्यो है, "जासों आपनी मृत्यु जानिये, ताके नेरे सपनें हू न जाइये;" पै तें ऐसी कहा बिचारी? गंगदत्त कही, अहो! यह तो सांच है, अरु हम तुम जन्म ही के बैरी हैं; पर हौं अचु कौ दबायो निरादर ह्वै, तुम पास

आयो. कह्यो है, "पग में कांटो चुभै, तौ दुखा सौं काढ़िये; अरु शत्रु सौं जब आपनौं निस्तार जानिये, तब सकल शत्रु कौ आसरौ गहि, प्रान धन राखिये." पुनि याग बोल्यौ, तेरे सौं शत्रुता कौन सों है? इन कही, कुटुंब सों. उन पूछ्यौ, तेरौ निवास कूप, तड़ाग, बापी, कहां है? इन कह्यो, आंगन में बंधे कुआ में रहतु हौं. यांह बोल्यौ, तौ तेरी न बनी; कौंकि, जहां सोसों न सह्यो जायगो. कह्यो है, "अति मीठो भोजन होय, तौ ह्वै पेट भर खाइये; अधिक लोभ न करिये; लोभ करे निगार होय, दुख पावै." पुनि गंगदत्त कही, भैया! ऐसो कह्यो है कि, "भेदी मिले कठिन ठौर ह्वै सुगम ह्वै जातु है; जैसें घर के भेदी लंका खोई." अब मैं तुम तें यहां कौ सारौ भेद कहतु हौं, तुम चित दै सुनौ. वा कुआ के ऊपर रहट चलतु है; ताकी नाल तें लागि, नीचे आय, ऐक खत्तल में बैठि तुम हमारे शत्रुनि निचिंताई सों खायौ; अरु वैस सों बैठि, मंगल मनायौ; हौं तुम सौ आचार्य कौ आपनी गाठ में कछु समझ ही लियै आतु हौं, तासों तुम काहू भांति की चिंता जिन करौ, वेग चलकै मेरी राजधानी की रक्षा करौ. इतनी सुनि, सर्प में बिचारयो कि, यह बोल मेरे भाग तें मोहि आपनें कुल कौ अंगार आय मिल्यो है; अरु मोहि तौ या ठौर अहार ह नाहीं जुरतु, यातें वा ठौर याके संग जाऊं, तौ बिन श्रम वैसौ अहार पाऊं. कह्यो है कि, "जब देह कौ बल घटै, अरु कोऊ सहायक न होय, तब पंडित होय सो आपनी जीविका की वृत्ति विचारै." ऐसें सर्प नें निज मन में ठानि, गंगदत्त सों कही, आज तें तू मेरौ मित्र भयौ; अब यहां ते चल, जाहि कहैगो ताहि खाऊंगो. या रीति सों वातें कपट करि, नाग बिल तें

बाहर आयो. पुनि दौरि बतराय, कूप पै आय, रहट की माल में लागि, वा मांहि धंसे, औ खवास बीच बसे. आनै, गंगदत्त में आपनें मंचु चीन्ह चीन्ह बनाये, उन बीन बीन खाये. जब बिल में नें कोऊ न रह्यो, तब सर्प में गंगदत्त सों कह्यो कि, मित्र! मैं नें तेरो कैसो काम कर दियो जु अचुनि मारि निष्कंटक राज कियो? गंगदत्त बोल्यो, भाई! जैसें भले मित्र काज करतु हैं, तैसें तुम कीनों, अरु मोहि सुख दीनों; पर अब वाही अरहट की माल लागि, आपनें धाम पधारो. नाग कही, हिहू! यह कहा कहतु है? तें मेरो घर डुबायो, मोकों म्हां से आधो; म्हां और ही मेरो बलती आनि रह्यो होयगो, सो मोहि बिल में काहे बदन देखगो? म्हां सों तें मोहि आन्यो, अपनों करि जान्यो; अब मेरे अहार की चिंता कर; नातो हम सों तुम सों न बनि है. कह्यो है, "अहारे व्योहारे लज्जा न कारे." यह बात सुनि, गंगदत्त कों खतर न आयो; तब निज मन में पछतायो कि, मैं मूरख यह कहा कियो, जु आपनो घर दिया से दिखाय दियो? अब वह सो विरोध के बचन कहतु है. कह्यो है कि, "सरबस जातो जानिये तो आधो दीजै बांट." तातें याके खेवे कों आपनो नगर के मेंडुकन तें एक एक नित दीजै. ऐसें मन में ठहराय बोल्यो, भाई! तुम आपनें अहार कों मेरी बासल में ऐक हादुर नित खेउ, अरु जैसें आपनें घर रहियतु है, तैसें रहो. वह वाही भांति रहनि लाग्यो.

ऐक दिन, गंगदत्त को पुत्र सुभद्रत्त नाम, वाके अहार में आयो; तब गंगदत्त रोवत रोवत आपनी स्त्री के समुख भाखो. उन कह्यो, रे कुटुंब को मारनहारे! अब कौन रोवतु है? तोहि तो कुटुंब को पाप लाग्यो; पर अब

निज प्रान राखिवे कौ यत्न कर. यह बात सुन, गंगदत्त नें आपनें किये कौ बहुत परैखौ कियौ. आगे जब केवल गंगदत्त ही रह्यौ, तब प्रियदरसन नें बिचारयौ कि, यासों मोसों बोल बचन है, तातें यातें भोजन मांगौं; जब यह कहैगौ, अब तौ हौं ही रह्यौ, तब याहि छल करि खाउंगौ. सर्प ने ऐसें मन में ठानि, गंगदत्त सों कही, रे प्रीतम! अब तौ यहां मेंडुक नांहिं, अरु मोहि भूख लागी है. गंगदत्त बोल्यौ, हे प्रीतम! अब तौ हम तुम दै भाई ही रहे, पर आज्ञा करौ, तौ दूजौ ब्याह करौं; औ प्रजा बसाय, कुटुंब तें घर भरौं; तुम मेरी राजधानी की चिंता करौ, औ मैं तिहारे अहार की. कहौ तौ अबही जाय, ताल के मेंडुकनि भुलाय खाऊं, अरु फेर ज्यौं कौ त्यौं नगर बसाऊं. सर्प कही, बंधु! यह तौ तुम नीकी बिचारी, यातें तौ तिहारी राजधानी रहै, अरु मेरी जीविका छू चलै. सुनि! अबलौं तू मेरौ भाई हो; पर आज सों तू मेरे पिता की समान है. इतनौं सुनि, गंगदत्त रहट की माल खागि, कुआ के बाहर आय, निज मन में कहनि लाग्यौ कि, मैं आज काल के गाल तें निकरि आयौ, सु, मानौं नयौ जन्म पायौ. ऐसें कहि, ऐक सरवर में जाय रह्यौ; अरु ह्यां नाग नें कितेक बेर लौं याकी बाट जोई; निदान घबरायकै बोल्यौ कि, मैं अभागे यह कहा कियौ, जु वाहि जीवत जानि दियौ? सब दादुर कुआ के खाये, पर जब लग गंगदत्त मेरी डाढ तरै न आयौ, तब लौं हौं नेंक छूं न अघायौ. ऐसें कहि, कूप माहिं ऐक गोह रहत ही; इन तासों कह्यौ, हे प्यारी! तू मेरी संतुष्टता कौ काज करै, तौ हौं तो सों ऐक बात कहौं. वह बोली, कह. यानें कह्यौ कि, गंगदत्त ताल में मेंडुक

लैन गयो है, ताहि जाय कह कि, दादुर लै बेग चल; अरु वे न चलैं, तौ तू ही चल, तेरे देखे ही वाकी भूख जैहै. कह्यो है, "भूख प्यास सही जाय, पर मित्र कौ वियोग न सह्यो जाय." पुनि कहियो कि उन मो सों कह्यो है जु, मोहि भूख्यो जान, मन में कछु भय न करै; जो मैं वासों द्रोह करौं, तौ मेरे सब किये कर्म धोबी की नांद में परैं. इतनौं कहि, सांप नें गोह कौं विदा कियो. वह कूप तें निकरि, गंगदत्त के पास जाय, नाग कौ संदेसो सुनाय, बोली कि, उन कह्यो है, अब दोऊ मित्र बैठि धर्म चरचा करिहैं; खैवे कौ सोच जिन करौ. पूरनवारो कन कीरी, श्री मन कुंजर कौं देतु है. गोह तें सब बात सुनि, गंगदत्त बोल्यो, हे प्रिये! कह्यो है, "भूख्यो कौन पाप न करे? नीच जीव निर्दई होतु हैं, तातें तू प्रियदरसन तें जाय कह कि, अब गंगदत्त कुआ में आवन कौ नांहिं. ऐसें कहि, उन गोह कौं विदा कियो. इतनी कथा कहि, बानर नें मगर सों कह्यो, अरे दुष्ट जलचर! तु ह्यां तें जा, हौं गंगदत्त की भांति फेर तेरे घर जान कौ नांहीं. पुनि मगर कही, मित्र! तुम्हें ऐसो करनौं जोग नांहि; सुनौं! जो तुम मेरो कृतघ्न दोष दूर न करिहो, तौ मैं तिहारे बार उपवास करि मरिहौं. बानर बोल्यो, रे मूढ! तू कैतो ऊ करि, पर मैं लंबकरन गदहा की भांति फेर न जाऊंगो. मगर कही, यह कैसी कथा है? तहां बानर कहतु है;

काहू बन में ऐक करालकेश्र नाम सिंह, अरु ताको सेवक धूसर नाम स्यार रहै; सु काहू समें, वह सिंह गज सों लह्यो; वाके शरीर में चोट लागी, ऐसी कि वातें ऐक डग हू न चल्यो जाय. यासों वाहि अहार न जुर्यो; तब जंबुक बोल्यो कि, स्वामी! मेरो तौ मारे भूख के प्रान जातु है,

अरु तिहारी सेा यह गति है जु, उग भर ह्न नांहीं चल्यो जात, मैं सेवा कैसें करौं? सिंह कही, अरे! तू कहूं खोज जीव जाय देख, जौ मेरी यह दसा है, तौ ह्न तोहि मारिहौं. यह सुनि, खार व्हां तें चलि, गांव के निकट आय, देखे तौ ऐक ताल के तीर, लंबकरन नाम गदहा चरतु है. वाहि देखि, यानें कह्यो, मामा! तोहि मेरो प्रनाम है, आज अनेक दिन पाछे मैं तिहारो दरसन पायो, अरु सब दुख पाप गंवायो. यों कहि, वह धूर्त्त पुनि बोल्यो, मामा! अबकै तोहि अति दुर्बल देखतु हौं, सु कहा है? उग कही, अहो भगिनीसुत! कहा करौं? यह धुबिया बड़ो निर्दई है, सो पै बहुत भार लादतु है, अरु ऐक मूंठी ह्न अनाज नांहीं देतु; हौं धूर मिश्रित रूखे सूखे तृन खाय रहतु हौं, तुम ही बिचारो, तातें देह कैसें पुष्ट होय? खार कही, मामा! जौ तू ऐसी बिपत में है, तौ मेरे साथ चल, मैं तोहि आछी ठौर ले जाऊं; तहां नदी के तीर मरकत मनि के बरन हरी हरी दूब चरौ, औ आनद तें बिचरौ; अरु हम तुम तहां बैठि, आछी आछी बातें करैं, औ रहैं.

लंबकरन बोल्यो, अहो भगिनीसुत! यह तौ तें भली बात कही; पर तुम बनबासी, मह नगर निवासी; तिहारी जीविका मास तें, हमारी तृन नाज तें; यातें हमारो तिहारो मेल कैसें बनें? अरु वह भली ठाम हमारे कौन काज की? खार कही, मामा! ऐसें जिन कहो, वा ठौर तुम मेरी भुजानि के बल तें रहो; व्हां काहू भांति कौ दुख भय नांहीं; औरह्न गदही अनेक आपनी आजीविका के लखे रहति हैं, सो पाहीं औते आई हौं, तब अति दुर्बल व्है रही हौं; तातें महा कुरूप दीसति हौं, मेरे आश्रम में आय उनमि सुख

पायौ, अहार मुकतौ खायौ; तासों वे पुष्ट होय, चंपावरणी ह्वै रही हैं. अरु वे काम की मतादें मोसों निसंक आपनों मनोरथ आय आय कहति हैं; औ तामें आज प्रात ही ऐक मामी नें मोतें आय कही कि, तेरौ मामा सपनें में मेरौ पति भयौ है, ताहि स्याय मोसों मिलाय दै; यातें तुम बेग चलौ; नातौ वाहि कोऊ और लै जायगौ. यह बात सुनि, कामातुर होय, लंबकरन बोल्यौ, अहो भानेज! जौ ऐसी बात है, तौ आग होय तौ हू मैं चलौंगौ. कह्यौ है, "स्त्री में द्वै गुन; ऐक अमृत, औ दूजौ विष; संयोग अमृत, औ वियोग विष." पुनि जाकौ नाम लियै मनुष प्रसन्न होय, ताकौ मिलन सुख तौ अधिक ही होयगौ. आगै, वह स्यार गदहा कौं फुसलाय लै गयौ; औ सिंह गदहा कौं देखत ही धायौ. तब यह भयमान ह्वै परायौ; औ वाके हाथ तौ न आयौ; पर नाहर के हाथ की चोट याके शरीर में लागी. सिंह अछताय पछताय बैठ रह्यौ. तब जंबुक बोल्यौ कि, तुम यह कहा कियौ, जु गदहा छांडि दियौ? बस देख्यौ तेरौ पराक्रम, जौ याही कौं न मार सक्यौ, तौ हाथी कैसें मारैगौ? नाहर कही, अरे! ऐक तौ मेरी देह निर्बल; दूजे वाकौ आवनौं मैं न जान्यौं, यातें वह निकरि गयौ; नातौ हाथी खेद मारौं. पुनि स्यार बोल्यौ, भलौ, जो भयौ सो भयौ, वाहि जानि देउ, अब हौं वाहि फेर स्यावतु हौं, तुम सावधान होय बैठौ. सिंह कही, अरे! जो मोहि देखि भयौ है, सो फेर कैसें आवैगौ? स्यार बोल्यौ, तुम आपनें पराक्रम की बात कहौ, वाहि स्यावन की हौं जानौं. यह बात सुनि, सिंह सचेत ह्वै ऐंठि बैठौ; औ स्यार तहां तें चलि नगर में पैठौ, गदहा के ढिग जाय, हंसिकै बोल्यौ, अरे मामा! तू वहां तें

कौं बगदिं आयौ? उनि कही, अहो भगिनीसुत! तू मोहि भली ठौर ले गयौ जु, मैं नीठ नीठ मीच के हाथ तें बचि आयौ! वह कौन जंतु हौ, जाके हाथ की चोट मेरे शरीर में वज्र सम लागी? खार में मुसकुरायकै कह्यौ, मामा! वह तौ मामी ही, तोकौं आवतु देखि, अनुराग तें आतुर होय, आलिंगन करिवे कौं उठी ही; पर तू नपुंसक जु माज्यौ, सु वह संकुच करि वहां ही बैठ गई. कह्यौ है, "जब स्त्री क्रीडा समय ढीठ होय ढिठाई करै, अरु वाकै भर्त्तार सों कछु काज न सरै, तब वह आपनी ढिठाई तें आप लज्जित होय." अब वानें मोसों कह्यौ है कि, जाके शरीर में मेरौ हाथ लाग्यौ, मैं ताही कौं वरिहौं; नातो लंघन करि करि मरिहौं. तू ही ताके मन में बस्यौ है, तेरी ही विरह सों वह बापरी दुख पावति है; यातें हौं कहतु हौं कि, तू वेग चलि वाकौ मनोरथ पूरौ कर. न जानिये, जो विरह विथा तें वाकौ जीव निसरि जाय, तौ तोहि स्त्रीहत्या कौ पाप लागै. कह्यौ है, "बालक, स्त्री, गौ, ब्राह्मन की हत्या तें महा नर्क भोगनौं होतु है." श्री भगवान नें संसार में नारी बडी वस्तु बनाई है, ताही तें सब कौं प्रिय है; (दोहा) नारी नारी सब कहैं, नारी नर की खान; अंत काल में देखिये, नारी ही में प्रान. अरु जेहंगम की रक्षा करि, नारी कौं तजतु हैं, तिन कौं कामदेव पीडा देतु है. देखौ! कोऊ नग्न होय, छार में लोटतु है; कोऊ आपनें हाथ आपनौ सिर खसोटतु है; कोऊ जटा राखि, पंचाग्नि मांहिं बैठि, जरतु है; कोऊ कपाली आसन मारि, श्री जर्द्धबाहु होय, दुख भरतु है. पुनि कह्यौ है, "नारी सब सुख की जर है." इतनौं कहि, बहुरि खार बोल्यौ कि, मामा! हौं तिहारौ हितू होय

करतु हौं; कौंकि, तिहारे सुख तें हमें सुख है, औ दुख तें दुख. याते, गदहा स्यार को उपदेश सुनि, रामांध होय, हरषि, पुनि वाके साथ चल्यो. कह्यो है कि, "जब मनुष कामी के वस होय, तब खोटी बात जानकै हू न माने, किय किये न रहै." पुनि जौं खर वहां गयो, त्यौंही सिंह ने मार लियो.

आगे, सिंह स्यार कौं गदहा के ढिग राखि, आप नदी नैने गयो. वोखौं वह स्नान, ध्यान, पूजा, तर्पन, करि आवे, तोखौं स्यार पंजार ने चुधा के मारे, गदहा की कान, नैन, औ हियो, ये भक्षन कियो. सिंह आनि देखै तौ, वाकौ हृदय औ नेत्र कछू नाहिं; तब उनि स्यार सों कह्यो, अरे! यह तें कहा कियो तु, आंख कान औ हियो सबौ काढि स्याय लियो? तेरो जूठो मैं कैसें खाऊं? स्यार कही, स्वामी! हैसो जिन कहो; या जीव की कान, आंख, हियो, होत नाहीं; कौंकि, कान होते, तौ तिहारो नाम सुन या वन में सुखी होतो; नेत्र होते, तौ तुम्हें देखि फेर न आवतो; औ हियो होतो, तौ तिहारे कर की चोट खाय, फेर न भूलजातो. यह बात स्यार तें सुनि, सिंह नें गदहा बांटि खायो. इतनी कहि, बानर बोल्यो, अरे अलचर! हौं संबकरन नाहिं तु, मेरे साथ अब आऊं; कौंकि, तें प्रथम ही मोसों कपट कियो; बहुरि युधिष्ठिर कुम्हार की भांति सब भेद कहि दियो. मगर कही, यह कैसी कथा है? तहां बानर कहतु है;

ऐक समें काहू देस में अति वर्षा भई; तातें काल पर्यो. तब वहां के रजपूत कितेक, कहूं चाकरी कौं चले; तिन के साथ युधिष्ठिर नाम ऐक कुम्हार हू व्है लियो. वाके माथे में घाव हो. कितेक दिन में, काहू और देस मांहिं जाय, ऐक राजा के यहां चाकर भये. कुम्हार के सिकार कौ घाव देखि

राजा नें आपनें जी में विचार्यो कि, यह कोऊ बड़ो सूर है जु, यातें सनमुख चोट खाई है. यातें राजा वाहि वाके सब साथियन तें अधिक मानें. ऐक दिन, वह नरपति आपनें सब सुभटन सहित सभा में बैठो हो कि, वानें आवो पूछो, अहो रावत! यह घाव तुम मस्तक पर कौन सी लराई में खायो? इन कही, महाराज! मेरो नाम युधिष्ठिर है, यातें हौं झूठ नाहीं बोलतु; मैं रजपूत नाहीं, जात को कुम्हार हौं; अरु यह घाव मैंनें रन में नाहीं खायो, याको भेद कहतु हौं, सुनौं कि, मेरे पिता के ब्याह को उछाह हो; तहां मैं छ आपनी मंडली में भांग पी, घर में देखो, सु उखट पखो, ऐक ठीकरा मूंड में पैठो, ताको यह चिन्ह है. इतनी बात सुनत ही, राजा रिस करि बोल्यो, इन मोहि धोखो दियो, अरु याके लिये मैंनें इन राजपूतन को अपमान कियो, अब याहि धकाय काढौं. कुंम्हार कही, महाराज! ऐसें जिन कीजै, बरन युद्ध में मेरी परिक्षा लीजै. राजा बोल्यो, अरे! सर्व गुन संयुक्त कुल में तू जनम्यो नांहिं. ऐसें खरसिंघ कों सिंघनी नें छ कह्यो हो. कुंम्हार कही, यह कैसी कथा है; तब राजा कहनि लाग्यो;

काहू बन में ऐक सिंह अरु सिंघनी रहैं; सु सिंघनी नें दै सिंघ जाये; तद वाको पति वाके लिये अनेक अनेक भांति के जीव अरु जंतु मारि खावै. ऐक दिन वह सारो दिवस फिरो; पै वाके हाथ कोऊ जंतु न आयो. जब सूरज अस्त भयो, तब निरास हो, घर कों आवन लाग्यो; तहां गैल में ऐक खर को सुत, तुरत को जायो, इन पायो; ताहि जतन सों मुंह में राखि, सिंघनी के ढिग जीवतु लायो. वाहि देखि, वाघनि बोली, हे नाथ! कहा, आज अरु जंतु न पायो?

सिंह कही, भद्रे! सिगरो दिन भटक्यो, पर कछु हाथ न आयो; अबही डगर में आवतु यह हाथ पर्‌यो; सु याहि बालक जानि मैं नांहिं मार्‌यो, तेरे पथ्य के लिये ल्यायो हौं. सिंहनी बोली, स्वामी! यातें मेरो पेट कछु न भरैगो, वृथा याहि क्यों मारौं? कह्यो है, "बाला, बाल, ब्राह्मन, ये तीनों अवध्य हैं; विशेष आपनें घर आवै, ताहि तौ कबहू न मारिये." बाघ बोल्यो, जो तें ऐसी बिचारी, तौ यह कैसें जियैगो? उन कही, याहि मैं आपनों दूध प्याय जिवाऊंगी; जैसें मेरे ये दै हैं, तैसें तीसरो यह हू रहे. ऐसें कहि, वह वाहि दूध प्यावन लागी. आगै, जद वे बडे भये, तौ वे बिन जानें दूकठे रहैं; अरु स्यारसिसु तिन में बडो भाई कहावै. ऐक दिन वा बन में हाथी आयो; तब सिंहसिसु बोल्यो, अहो! यह गज आपनें कुल कौ बैरी है, चलो, याहि खेद मारैं. यह सुनि, स्यारसिसु इतनों कहि भजो कि, भाई! याके सनमुख कहां जात हौ? वाके साथ सिंहसिसु हू भजे; अरु वे तीनों घर आये. कह्यो है कि, "युद्ध समय, आगै सूर होय, तौ वाहि देखि औरन कौं हू सूरता होय; अरु ऐक कायर संग्राम छोड भजै, तौ वाके संग सब भजैं." आगै, सिंहसिसुनि आय, माता सों कही कि, मा! यह हाथी देखि परायो, अरु याके पाछै हम हूं. आपनी निंदा सुनि, स्यार कौ सिसु उन के मारिवे कौं उठ्यो; तब सिंहनी बोली, ये तो तें छोटे हैं, तू इन तें बडो है, यातें तोहि इन पै क्रोध करनों उचित नांहिं. उन कही, ये मेरी निंदा करतु हैं, सो कहा हौं इन तें कुल, बरन, पराक्रम में घाट हौं, कै हाथी नांहीं मार जानतु? यह सुनि, सिंहनी नें वा पै दया करि, वाहि ऐकांत लै जाय, कह्यो कि, पूत! तू सुंदर औ बलवान है;

घर वा कुल में जनम्यौ नांहिं तु, हाथी मारै. अरे! तू तौ खार है, मैं तोहि दया करि, आपनों दूध प्याय, जिवायौ है; सु वे तोहि जानतु नाहिं; अरु अब दूध तें तोतें विरुद्ध भयौ, वे तोहि बिन मारे न रहैंगे; यातें हौं कहति हौं कि, तू अब आपनें सजातियन में जाय रह; नातो जीवतु न बचैगो. इतनौं सुनि, वह वहां तें उठि, पूंछ दबाय, धाय, आपनें सजातीन में जाय मिल्यौ.

यह प्रसंग कहि, राजा नें कुंम्हार सों कह्यौ कि, सुनि! तू वा कुल में उपजौ नांहिं कि, सीह की आंच झेलै. पुनि सभा तें उठाय दियौ. तातें हौं कहतु हौं, रे मूर्ख जखचर! तें मूं युधिष्ठिर की भांति कपट कहि दियै, सु यह कहा कियौ? नीति तौ यौं है कि, जहां सांच बोले तें काज बिगरै, औ झूठ तें सुधरै, तहां सांच सों झूठ ही भलौ. कह्यौ है जु "मिथ्या कहे काज को जीव बचै, औ आपनौं महातम रहै, तो राखिये." है ठौर झूठ बोलवे कौ दोष नांहिं; अरु बिन बोले काज सरै, तो कबहू न बोलिये. औ हर काम में चपलता करि, बिन खारथ न बोल उठिये. देखौ! बगुला मुनि धर्म साधे निज काज करै; औ चपल होय, सुआ बोलि, बंध में परै. इतनौं कहि, पुनि बानर बोल्यौ, अरे मूढ! तें स्त्री के संतोष के लये ऐसौ अधर्म सिखायो कि, मोहि मारन कौं उपस्थित भयौ. कह्यौ है, "नारी को मन भायौ सहज में होय तौ करिये; अरु वाके कहे मूर्ख होय, निज धर्म न बिसरिये; क्योंकि, स्त्रीजन आपखार्थी होति हैं; तिन की प्रतीत कबहू न कीजै; कीजै तौ, जैसें एक ब्राह्मन प्रतीत करि पछतायौ, तैसें पछतावनौं होय. मगर मूढ़ी, यह कैसी कथा है? तहां बानर कहनि लाग्यौ;

काहू गांव में ऐक ब्राह्मन रहै; ताकी नारी अति सुंदरी, चंदमुखी, चंपकबरनी, मृगनैनी, पिकबैनी, गजगामी, कटि केहरी, अरु जाके कर पद कोमल कमल से, नारंगी सम कुच, बार स्याम घटा की समान, दांत हीरा की सी पांति, ओठ बिंबाफल जान, भौंह धनुष मान, पुनि कीर की सी नाक, कपोत कौ सौ कंठ; औ करतार में वाहि ऐसी संवारी कि, मानौं सांचे को सी ढारी. वाके रूप की ईर्षा सब कुटुंब की नारी खाधौ करैं. जब यह चरित्र वाके पति में देख्यौ, तब वह घर की माया छोड़ि, वाके आधीन होय, वाहि साथ लै, परदेस कौं चल्यौ. कितेक दूर जाय, वाकी स्त्री में कह्यौ, हे स्वामी! मोहि प्यास लागी है. उन कही, प्रिये! तू यहां बैठ, हौं जल खोज लाऊं. यह कहि, वह तौ पानी सोधन गयौ; औ यहां प्यास के मारे याकौ प्रान निकरि रह्यौ. वह आय, वाहि मरी देखि, अति विलाप करनि लाग्यौ; तह आकाश बानी भई कि, अरे! याकी तौ आयु पूरी भई; पर जौ तेरौ यासों अधिक सनेह है, तौ तू आपनी आयुल याहि दै. ऐसें सुनि, विप्र में हाथ पाय धोय, आचमन करि, पवित्र होय, आधी बैस वाहि दई. वह झट उठि बैठी भई; जल पीय दोऊ आगै चले, औ काहू गांव के निकट आय, ऐक माली की बारी माहिं उतरे. जद ब्राह्मन गांव में सीधौ लैन गयौ, तद ब्राह्मनी बारी में फिरन लागी; तहां देखै तौ ऐक पंगु कुआ पै बैठौ, माथ गाय, रंहट कौ बरध हांकि रह्यौ है; वाकौ गान सुनि, ब्राह्मनी रीझि, ताके निकट जाय कहनि लागी, अरे! मेरौ मन तोसों अटक्यौ; तू मेरौ मनोरथ पूरौ कर. उन कही, अरी घरगई! हौं पंगु, तू मोहि कहा करैगी? इन कही, दई मारे निगोडे!

तोहि या बात सों कहा काम? जो मैं कहौं, सो तू करु; अरु जो तू मेरौ कह्यौ न करैगो, तौ मैं तोहि हत्या दूंगी. यह सुनि, वानें वाकौ मनोरथ पूरौ कियौ. तब ब्राह्मनी प्रसन्न होय बोली, आज तें यह जीव तेरौ दियौ है.

आगे सीधौ लै बिप्र आयौ; अरु रसोई करि जब स्त्री पुरुष भोजन कौं बैठे, तब ब्राह्मनी नें पंगु कौं हू जिमायौ. पुनि जद व्हां तें चलवे कौं भये, तद ब्राह्मन नें आपनें पति सों कह्यौ कि, हे स्वामी! जा बेर तू मोहि छांडि सीधौ लैन नगर में जातु है, वा समें हौं अकेली रहति हौं; यातें यह खूलौ माली कौ टहलुआ है, औ आछौ गावतु है, याहि संग लीजै तौ मेरे निकट रह्यौ करैगो. उन कही, प्रिये! ऐक तौ गैल में आपनी देह निवाहनी कठिन; दूजे या पंगु कौं कैसें लै चलैंगें? इन कही, स्वामी! ऐक पिटारौ आनि देउ, तामें राखि याहि हौं निज मूंड पर आछी भांति लै चलिहौं, तुम या बात की चिंता जिन करौ. यह सुनि, उन पिटारौ आनि दियौ; इन वाहि वामें राखि, सिर धर लियौ. आगे, ऐक बन में जाय, ब्राह्मनी नें निज मन मांहिं बिचारयौ कि, यह ब्राह्मन जबलौं रहैगो, तबलौं हौं या पंगु सों निर्भय होय भोग न कर सकौंगी. ऐसें बिचारि, समें पाय, बिप्र कौं कूप में डारि, पंगु कौ पिटारौ सिर लै, ज्यौं ऐक नगर में बड़ी, त्यौं राजा के सेवक याहि पकरि, नगरपति पै लै गये. उन पिटारौ खुलवाय, पंगु कौं देखि, कह्यौ, यह को है? इन कह्यौ, महाराज! यह मेरौ पति है, याके ग्रचुन के भय तें आपनें मूंड पै लियै डोलति हौं; अब तिहारी सरन आनि लई है, जैसौ जानौं तैसौ करौ. राजा कही, तू मेरे नगर में रहि, हौं तेरी आजीविका करै देतु हौं; तेरौ ग्रचु आवै तौ

मोसों कहियेगा. इतनौं कहि, राजा नें वाकी गांव गांव में चुंगी कर दई; वह वाहि लै, व्हां सुख सों रहन लागी.

आगै, दई कै, जो कोऊ बनजारौ वा वन में आय निकस्यौ, तानें वा ब्राह्मन कौं छुआ सों काढ्यौ. कह्यौ है जु, "आयु न पूरी होय, तौ बाघ, बैरी, अग्नि, जल के छू मुख तें बचै." पुनि वह ब्राह्मन वाही नगर में आयौ, जहां ब्राह्मनी ही. जब ब्राह्मनी नें आपनौं पति देख्यौ, तब उन राजा सों जाय कह्यौ, महाराज! मेरे स्वामी कौ रिपु आयौ. यह सुनि, राजा नें वाहि पकरि मंगायौ, अरु कह्यौ, रे विप्र! तू वाहि कौं दुख देत है, औ कहा मांगतु है? ऐसी बात राजा के मुख तें सुनि, ब्राह्मन नें निज मन में विचार्यौ कि, औ इन हीं मेरी ममता त्यागी, तौ मोकौं छ वाकी प्रीति तजनी उचित है; कौंकि, मन टूट्यौ फेर न मिलै, जौं फटिक कौ पाच. ऐसें विचारि, ब्राह्मन नें राजा सों कही कि, पृथ्वीनाथ! हौं यातें न कछू मागौं, न कहौं; पर मेरी या पै आधी आयु है, सो दिवाय देउ. राजा ब्राह्मन की बात झूठ समझ, चुप ह्वै रह्यौ. अरु ब्राह्मनी आगली भेद न जान, बोल उठी कि, धर्मावतार! जा भांति यह कहै, ता रीति सों वाकी आधेल दैउ. बहुरि विप्र बोल्यौ, हाथ पाव धोय, आचमन करि, पवित्र होय, ऐसें कह कि, मैं तेरी आयु दई ही, सो पाछी दई. उन वैसें ही कह्यौ; औ कहत ही, वाकौ प्रान घट तें निकरि गयौ. राजा सभा सहित देखि भौचक रह्यौ. पुनि वाकौ भेद पूछ्यौ, तब ब्राह्मन नें सब भेद कह्यौ. या बात के सुनत ही, राजा नें ब्राह्मन कौं विदा कियौ; अरु आप निश्चय कियौ कि, नारी की बात कबहू सांची न मानिये. तातें हौं कहतु हौं, अरे मूर्ख अलसचर! स्त्री की बात कौ विश्वास

कबहू न करिये. कह्यो है, "जो नारी के वश परै, सो कहा न करै?" जैसें राजा भोज औ पांडे करहि किया. मगर पूछो, यह कैसी कथा है? तहां बागर कहतु है;

ऐक समय राज कीं, राजा भोज की रानी राजा सों रिसानी; तब उन अनेक उपाय मनावे कीं किये, पर वानें याकी बात कोंहू न मानी, औ कह्यो, जो तुम घोरा बनि, मोहि चढाव, आंगन में ले फिरौ, अरु हौं ऐउ करि, चाबुक चटकाऊं, तौ तिहारौ गावौ गाऊं. उन सुनि, वैसें ही करि, आपनौं मनोरथ साध्यौ. औ वाही राज पांडे की पंडिताय हू रूठी; तब पांडे नें कही, तू काहू भांति हू हट छोडै? उन कही, तू मेरौ अपराधी है; यातें तोहि भट्ट करौं, तौ मेरौ क्रोध मिटै. कह्यो है, "जो अति चतुर होय, सो रस रीति समझ, प्रीति के वश परै." आगै, पांडे ने दाढी मूंछ औ मूंड मुंडवायौ, औ वाकौ गावौ गायौ. भोर भये जब राजा सभा में आय बैठ्यौ, तब पांडे नें जाय आशीष दई. उन वाहि देखि, हंसके कही, अहो विप्र! बिन पर्व भट्ट कहां भये? उन विद्या के बल रात की बात बिचारि कह्यो, महा राज! जहां मनुष घोरा की भांति हींसै, तहां बिन पर्व हू मुंडन होय. यह सुनि, राजा मौन गहि रह्यो. तातें हौं कहतु हौं, अरे दुष्ट अलबर! जैसें राजा औ पांडे नें किया, तैसें तू हू कामांध होय स्त्री के वश भयौ.

वे दोऊ ऐसें बतराय रहे हैकि, वाही समय ऐक अलबर में आय, मगर सों कही, भाई! तेरी स्त्री मारे क्रोध के मरवे कीं है रही है; अरु घर में तेरे ऐक औरु मगर आय रह्यो है. यह सुनि, मगर दुख पाय बोल्यो, हाय! मैं अभागे यह कहा कियो जु, ऐसी दुष्ट पतनी के कहे आपनौं

धर्म कर्म सोच दियो! पुनि उन बानर सों कह्यो कि, मित्र! तू मेरो अपराध छिमा कर; कौंकि, मैं अब या दुख तें प्राण छांडिहौं. बानर बोल्यो, अरे मूर्ख! तेरे घर में बिगार होंगो तो तुझ ही को; पर तोहि ऐसी दुष्ट स्त्री के गर्व उछाव करनों जोग है; कौंकि, कह्यो है, "कलहकारिनी नारी, औ विष, विपत की जर है; यातें जो आपनो आत्मा को सुख चाहै, सो यासों विरक्त रहै, तोही भलो; याके मन मानें सो कहे, औ करै; नारीन के चरित्र भांति भांति के हैं, ते कहां लों कहीं? पर तू ऐसी ही बात में जानियो कि, जे चतुर औ सज्ञान हैं, ते तिन के आधीन कबहू न होंयगे. मगर कही, अहो! मोतें है चूक भई; ताही तें इन मिचार गई, औ उत स्त्री. जैसें ऐक नारि को आर भयो स भर्त्तार. बानर कही, यह कैसी कथा है? तहां मगर कहतु है;

ऐक किसान की स्त्री तरुनि, औ वह बूढो पूत; तातें याको मनोरथ पूजि न सकै; यह नित प्रति परपुरुष देखो करै, औ काम के मारे याको मन धाम में न लागै, उदास रहै. ऐक दिन, कोउ पराये बित्त चित्त को चोर आहि आनि मिल्यो; यासों इन कही, हे सुभलछन! मेरो पति बूढो ह्वै रह्यो है, जो तू मेरो आर होय, तो मैं घर को द्रव्य लै, तेरे संग चलों. उन कही, तें नीकी बिचारी; भलो मैं होंउगो. इन कही, तो तू सकारे आइयो, हौं तेरे साथ चलौंगी. आगै, भोर भये वह आयो; औ याहि बित्त समेत लै, नगर के बाहर कों धायो. कोउ ऐक जाय, मन में बिचार करनि लाग्यो कि, यह ऐक तो जोबनवती; दूजे याहि पर पुरुष की इच्छा है; कदाचित जैसें यह मोहि मिली, तैसें काहू और सों मिल जाय, तो फेर मैं कहा करौंगो? यह बिचारि, ऐक

नदी के तीर जाय बोल्यौ, अरे! प्रथम नदी पार विन्ध्य वन धरि आऊं, पाछै पीठ पर चढाय तोहि ले जाऊंगो. यामें या बात के सुनत ही, बसन आभूषन की गठरी दई; दून लै, पार होय, आपनी बाट लई सो लई; बिभिचारिनी नदी तीर पहुंचाय, नीचे नार किये बैठ रही ही कि, ऐक खारनी मांस को लोथरा लिये तहां आई. अरु ऐक माछरी कू पानी तें निकरि, रेत पर बैठी ही; वाहि देखि, खारनी लोथरा धरि, माछरी पकरवे कौं दौरी. इत मांस चील ले गई; औ उत माछरी याहि देखि, जल में कूदी. अब खारनी निरास होय, चील की ओर तकनि लागी, तब बिभिचारिनी बोली कि, दोऊ गंवाय अब कहा देखति है? उन कही, ऐक तौ हौं चतुर, अरु मोहू तें दूनी तू जु, तेरौ सरबसु गयौ, औ जार भयौ न भर्त्तार. इतनी कथा कहि, मगर बोल्यौ, भाई! मेरी कू वही दसा है; पर अब कौन उपाय करौं. नीति में तौ कार्य साधवेकौं चार उपाय कहे हैं; साम, दाम, दंड, भेद; अब इन में तें मोहि जो करनौं जोग होय, सो कहौ. बानर कही, अरे! मूढ कौं उपदेस कबहू न दीजै. बहुरि मगर बोल्यौ, मित्र! हौं सोक समुद्र में बूडतु हौं, तू मोहि काढ, तोहि जस धर्म होयगौ. कह्यौ है, "जौ मूरख काज बिगारै, तौहू चतुर सुधार लेय." मैं मूढ, तू चतुर, तातें जामें मेरौ भलौ होय, सो जुक्ति बताय. वाकी दीनता देखि, बनचर बोल्यौ, भाई! तू आपनें घर जा, औ बज्राती सों युद्ध कर; कौंकि, जौ जीतिहै, तौ घर पावहै; औ मरिहै तौ स्वर्ग. कह्यौ है, "उत्तम जन सों साम उपाय कीजै, मनुहार करि कार्य्य लीजै; अरु अति बलवान कौं धन दै, दाम उपाय करि, आपनौं काज संवारिये; पुनि दुष्ट तें दंड

उपायकै, अपनपौ राखियै; बहुरि समान सौं भेद उपाय करि, वाहि छल बल करि, मार नाखियै;" जैसें ऐक स्यार में कियौ. मगर कही, यह कैसी कथा है? पुनि वानर कहतु है;

काहू स्यार नें वन में ऐक मरयौ हाथी पायौ; पर वाकौ कठिन चाम, यातें काट्यौ न गयौ. त्यौंही ऐक सिंह आयौ; यह देखत ही वाके सनमुख उठि धायौ, औ हाथ जोरि बोल्यौ, स्वामी! या गज कौं आप अंगीकार कीजै. उन कही, हौं काहू कौ मार्‌यौ खातु नाहीं, मेरौ यह धर्म है; यातें यह मैं तोही कौं दियौ. इतनी कहि, वह चल्यौ गयौ. पुनि ऐक तेंदुआ आयौ; वाहि देखि स्यार नें जी में विचार्‌यौ कि, यह दुष्ट है, याकौं भेद उपाय करि डरादयै. ऐसें मन में ठानि, यह वाके सनमुख जाय, गुमान सौं हिठू होय बोल्यौ, अहो! यहां कहां आवतु है? यह गज सिंह मारि, गंगा न्हान गयौ है, मोहि याकी रखवारी राखिकै. ज्यौंही बघेला में याकी बात सुनी, अरु वाके चरन चिन्ह देखे, त्यौंही पीठ दई. इतेक में, ऐक चीता आयौ, ताहि निहारि, जंबुक में विचार्‌यौ जु, यासों हाथी कौ चाम फडवाय लीजै, तौ भलौ. ऐसें विचारि, इन चीता सों कह्यौ, अहो भगिनीसुत! मैं तोहि अनेक दिन पाछै देख्यौ; ज्यौं भूख्यौ है, तौ यह गज सिंह मारि, नदी न्हैवे कौं गयौ है; जौलौं वह आवै, तौलौं कलेवा करि चल्यौ आ. उन कही, मामा! हौं आपनौं मांस राखौं तौ खाऊं; सिंह कौ मार्‌यौ गज कैसें खाउं? स्यार बोल्यौ, अरे! हौं याकौ रखवारौ हौं, औ तेरे आडे ठाढो रहतु हौं, तू खा; जब सिंह आवैगो, मैं पुकारौंगो, तब तू भाग जैयो. उन याकी बात मानि, ज्यौंही वाकी खाल फारि, कछु मांस मुख में लियौ, त्यौंही स्यार पुकार्‌यौ, अरे! भाग, सिंह

ORIENTAL INSTITUTE VADODARA

आवो. वह सुव्रत प्रमाण, वह उठि दौरो. या भांति खार में वासों दाम उपाय करि, निज काज साधो. आगे, सजातीय सों दंड उपाय करि युद्ध कियो; अरु वह हाथी काहू कों न खान दियो. तातें हौं कहतु हौं कि, साम, दाम, दंड, भेद, चार उपाय कहे हैं; पर जैसो जहां बूझिये, तैसो तहां करिये. बहुरि मगर कही, हौं विदेश जैहौं. बंदर बोल्यो, अरे!

ऐक चित्रांगद नाम कूकर, परदेश में जाय, काहू गृहस्थ के घर पैठो; औ आछो आछो खाय, जब बाहर आयो, तब वा गांव के स्वाननि वाहि घेर, अति मार दई. पुनि, इन दुख पाय, निज नगर की बाट लई. अरु घर आयो, तद याके कुटुंब में पूछो कि, विदेश जैसे की अवस्था कहो तु, व्हां कैसें रहे? इन कही, परदेश में और तो सब भलो, पर सजाती देख नाहीं सकतु; जो कोऊ मोसों पूछे, तो मेरे आगें, घर तें निकसनों उचित क्योंऊ नांहि. अरे मगर! तातें हौं कहतु हौं कि, तेरी दुष्ट पत्नी तो गई; पै तू अबही सकाम है, यातें नयो व्याह कर. कह्यो है, "कुआ को नीर, बड की छांह, तुरत बिलोयो घी, खीर को भोजन, बाल स्त्री, ये सब प्रान कों पोषतु हैं." अरु अवस्था प्रमाण काज कीजै, तो दोष नाहीं. बानर तें यह उपदेश सुनि, मगर निज घर गयो; औ उन नयो विवाह कियो, घर मांड्यो, सब दुख छांड्यो, आनंद सों रहन लाग्यो. इतनी कथा संपूरन करि, विष्णुशर्मा में राजपुत्रन कों अशीष दई कि, तिहारो जय होय, औ शत्रुन की हार! यह सुनि, राजपुत्रन वस्त्र, आभूषन, द्रव्य, मंगाय, भेट धरि, पाय लाग, गुरु कों विदा कियो; अरु आप नीति मार्ग सों निज राजकाज करनि लागे. इति लब्धप्रनाश पंचम कथा संग्रहः संपूर्णः.

LIBRARY